0152,6VIN,1
J7
CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

पंचायतों द्वारा सच्चा लोकतंत्र

भारत के सच्चे लोकतंत्र में ग्राम ही आधारभूत इकाई होगा। पंचायतें तो जनता की सेवा के लिए रहेंगी ही। यदि एक गाँव भी पंचायतराज, जिसे अंग्रेजी में 'रिपब्लिक' कहते हैं, स्थापित करना चाहेगा, तो उसे कोई रोक नहीं सकता। २० व्यक्ति केन्द्र में बैठकर सच्चे लोकतंत्र को संचालित नहीं कर सकते। उसका संचालन तो नीचे से प्रत्येक ग्राम की जनता द्वारा ही करना होगा।

हरिजन, १८-१-'४८

मैं तो कहूँगा कि यदि गाँव नष्ट होता है, तो भारत भी नष्ट होकर रहेगा। ऐसी हालत में भारत असली भारत नहीं रह जायगा। दुनिया में वह अपना दायित्व नहीं निभा सकेगा। गाँव का पुनरुद्धार उसी हालत में संभव है, जब उसका तनिक भी शोषण न हो। बड़े पैमाने के औद्योगीकरण के कारण जब प्रतिस्पर्धा और बाजार की समस्याएँ उत्पन्न होंगी, उस हालत में निश्चय ही ग्रामीणों का सक्रिय अथवा निष्क्रिय शोषण होकर रहेगा। इसलिए हमारे सारे प्रयत्न ग्रामों को इस तरह आत्मनिर्भर बनाने पर केन्द्रित होने चाहिए, जिससे वे मुख्यतः उपयोग के लिए ही उत्पादन करें। अगर ग्रामोद्योग की यह विशेषता सुरक्षित रहे, तो ग्रामीणों द्वारा ऐसे आधुनिक यंत्रों और औज़ारों के प्रयोग पर कोई एतराज नहीं होना चाहिए, जिन्हें वे स्वयं बना सकते हों और जिनका प्रयोग करने में वे समर्थ हों। एतराज सिर्फ यह है कि यंत्रों का प्रयोग दूसरों के शोषण के लिए नहीं होना चाहिए।

हरिजन, २९-८-'३६

—गांधीजी

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

विनय

पूज्य विनोवाजी की उत्तर-प्रदेश की पद-यात्रा में भूदान-यज्ञ-आरोहण की सम्भावनाओं की आशाकिरण प्रथम मंगरोठ ने दिखायी। तव से इसकी ओर देखने का लोगों का दृष्टिकोण संशय से ऊपर उठने लगा, कुछ अनुकूल भी हो चला। उत्कल में इसकी परिणति कोरापुट जिले ने कर दिखायी। पर वह ठहरा आदिवासी, वनवासी, भोला-भाला, प्राथमिक समाजवृत्तिवाला, दरिद्री, बेकार जमीन का क्षेत्र। विनोवाजी धृतिपूर्वक बढ़ते ही गये। मदुराई जिले की आधुनिकतम शिक्षित जनता ने जब अपनी साल में तीन फसलोंवाली उर्वरा कीमती भूमि ग्राम समूह-दान में देना शुरू किया और विनोबाजी के न जाते हुए भी जब महाराष्ट्र की चट्टान जैसी तर्क-प्रधान बुद्धिवादी पृष्ठ-भूमि में एक पूरा महाल (थाना) समर्पण हुआ, तब से भूदान की एक तरह पूर्णाहुति ही मानी गयी। महाल या थाना-दान ही क्यों, अब तो तिरुमंगलम् ने तालुका-दान का संकल्प कर लिया। जब तालुका-दान की बात आयी, तब उसमें से नगर कैसे छूट जाय ? आज तो शहर बुद्धि के, वैभव के और सत्ता के केन्द्र हैं। क्या शहराती अग्रसोची न होंगे ? क्या उनमें दूरदर्शिता नहीं है ? शोषित, पीड़ित, उपेक्षित, दलित, तिरस्कृत मानव-महासागर अब चुप बैठने-वाला नहीं है। तमनिद्रा से वह उठ रहा है और उसने भारत के अगुवाओं के सामने दो मार्ग रख दिये हैं: साम्ययोग और साम्यवाद। भारत की प्रकृति के अनुकूल पहला है और उसीको अपनाने में कल्याण है। थोड़े ही दिनों पहले विनोबाजी ने केरल में प्रवेश किया है, जहाँ की जनता ने दूसरे प्रयोग को मौका दिया है। अब तो सर्वस्व-समर्पण का सवाल है। पर उसमें हानि कहाँ ?

कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ का एक गीत याद आ रहा है। भिखारी भीख माँगने को प्रस्तुत है। क्षणभर में दूर से एक दिव्य विभूति आ रही है। गरीब के दिल में आशा की उमंग बढ़ती जाती है। वह महान् निकट आ पहुँचा। अपनी प्रभा से उसने उस गरीब को आलोकित किया। गरीब 'भिक्षां देहि'

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

की वृत्ति में था। इतने ही में उस पुरुष ने कहा, "मेरे लिए कुछ लाये हो ? लाये हो, तो दे दो" माँगनेवाले ने अपनी जीर्ण पोटली कमर से उतारकर एक दाना दे ही दिया। दिये बिना उससे रहा कैसे जाता ? शाम को जब घर आकर भिखारी ने अपनी पोटली (पुतडी) उँड़ेली, तो क्या देखता है ? दाने का स्थान सुवर्ण-कणिका ने लिया है। अब वह पछताकर कहता है, यदि मैंने सर्वस्व-समर्पण किया होता !

भारत में सुदामा और शबरी ने नैवेद्य चढ़ाया। महावीर और गौतम ने राज्यत्याग किया। हरिश्चन्द्र और मयूरध्वज, शिवि और दधीचि, कर्ण और बलि ने सर्वस्व-समर्पण का उदाहरण रखा। 'रघुवंश' में राजा रघु के दान का वर्णन कविकुलगुरु कालिदास ने किया है। "सर्वस्व देकर राजा रघु प्रासाद के बाहर वृक्ष के तले मृत्तिका-पात्र में बना भोजन पत्तल पर पा रहा है।" महाकवि माघ ने दान देकर सर्वस्व लुटाया। इसका उसे दुःख न था, जितना कि उस अवस्था में आनेवाले असहाय को सहायता दे न सका, इसकी पीड़ा। राजा और रंक, महाजन और मजदूर, ब्राह्मण-शूद्र तक, मानव से दानव तक, क्या स्त्री क्या पुरुष, नर, वानर, किन्नर, यक्ष, राक्षस, आर्य, दस्यु नागरिक, ग्रामीण वा वनवासी सबके अनुपम उदाहरण हमारी संस्कृति को सुशोभित करते हैं और "मणौ वज्रसमुत्कीर्णे सूत्रस्येव" हमारी गति अप्रतिहत करते हैं।

यह केवल दान, त्याग या समर्पण की बात नहीं। हमारी समाज-रचना की ही वह खूबी थी कि हमारी उज्ज्वल परंपरा हजारों वर्षों के प्रत्याघात में जर्जर होकर भी जीवित है। उसे अब प्राणवान्, तेजस्वी बनाना है। यही युगपुरुष की पुकार है।

प्रख्यात लेखक 'टॅवरनियर' ने लिखा था कि भारत की ग्राम-पंचायतों ने वहाँ के कुश (काँस) घास के समान भारतीय संस्कृति और जन-मानस में अपनी जड़ें गहरी जमायी हैं। साम्राज्य आते और जाते रहे। कुछ क्षण के लिए वे झुकीं भी, कभी कटीं भी। पर दूसरे क्षण उनका अपना सिर ऊँचा ही उठता रहा।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

डॉ० एनीबेसेंट ने लिखा है कि ईस्ट इंडिया कम्पनी के जमाने में बंगाल में हर चार सौ जन-संख्या के पीछे एक स्कूल था। दस हजार वर्षों से ज्ञान तथा कला की परम्परा इस देश में चली आ रही है।

न राज्यं नैव राजासीत् न दण्डो नैव दाण्डिकः।
धर्मेणैव प्रजाः सर्वा हि रक्षन्ति स्म परस्परम्॥

—तब न कोई राजा था, न राज्य, न दण्ड, न सजा देनेवाला। प्रजा धर्म से ही परस्पर का, एक दूसरे का रक्षण कर लेती थी।

तुलसीदासजी ने लिखा है :

"दण्ड जतिन्ह कर भेद जहँ नर्तक नृत्य समाज।
जीतिय मनहि सुनिअ अस रामचन्द्र के राज॥"

दण्ड, लकड़ी केवल यतियों के लिए स्थूल आधार थी यानी रामराज्य में सजा रह नहीं गयी थी।

अथर्ववेद के प्रख्यात दो उद्धरण और ऋग्वेद का एक उद्धरण, जो यहाँ दिये जा रहे हैं, उनसे हमारे आदर्श की कल्पना स्पष्ट हो जाती है :

यत्ते मध्यं पृथिवि यच्च नभ्यं यास्त ऊर्जस्तन्वः संबभूवुः।
तासु नो धेह्यभि नः पवस्व माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः॥—अथर्ववेद

—हे मातृभूमि! तेरे पवित्र शरीर के अन्तरतम, मध्य तथा बाह्य भाग से जो वस्तुएँ उत्पन्न होती हैं, उनसे तू हमें समृद्ध कर। तू हमारी जननी है और हम तेरे पुत्र हैं। हमें पवित्र बनाकर रख।

जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं नाना धर्माणं पृथिवी यथौकसम्।
सहस्रं धारा द्रविणस्य मे दुहाँ ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरन्ती॥—अथर्ववेद

—तू अनेक भाषाभाषियों, अनेक मतमतान्तरों को माननेवाले हमें एक परिवार में रहनेवाले सुहृदजनों की भाँति धारण करती है। तू दुधारू गाय जैसी हमारे लिए ऐश्वर्य की सहस्र-धाराएँ प्रवाहित कर।

स्वस्ति पंथामनु चरेम सूर्याचन्द्रमस्यविव।
पुनर्ददताध्नता जानता सं गमेमहि॥—ऋग्वेद ५।५१।१५

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

—कल्याणप्रद मार्ग पर हम चलते रहें, सूर्य-चन्द्र के समान बार-बार दान करनेवाले, अहिंसक तथा ज्ञानी का साथ हमें मिले।

अन्त में पूज्य विनोबाजी के शब्दों में ही ग्रामदान के बारे में कल्पना रख देना उचित होगा :

"हम अपने हृदय की बात कहेंगे। जमीन और संपत्ति, शक्ति और बुद्धि का मालिक परमेश्वर है, उनकी वृद्धि का कारण समाज है। हम सब तो उसके सेवक हैं। हरएक को उसके पेट के लिए जितना जरूरी है, उतना ही मिलना चाहिए। मालकियत का अधिकार किसीको नहीं। भूदान-यज्ञ की यह अन्तिम बात है। ग्रामदान की यह बात बड़ी क्रान्तिकारी साबित होनेवाली है।

"लोग समझते हैं कि हर चीज सरकार ही करेगी। यह बिलकुल गलत विचार है। लोकसत्ता में लोगों को अलग रखा जाय, तो सरकार क्या चीज है? इसलिए गाँव जाग जायँ और अपना भला-बुरा करने की सत्ता किसी को न दें। लोग गाँव-गाँव में स्वराज्य बनायें। एक बनो और नेक बनो।

"परिवार में जितना हो,उतना बाँटकर खा लेते हैं और सब मिलकर उत्पन्न बढ़ाते हैं। क्योंकि परिवार जिन्दा समाज है। कुटुम्ब में प्रेम है और प्रेम ही मनुष्य का प्राण है। जो नियम परिवार को, वही गाँव को और देश को।

"दुनिया में दुःख है, दरिद्रता है और भुखमरी भी। इन सबका उत्तर नहीं मिलता, तो शान्ति कैसे रहेगी? छोटे-छोटे लोगों को अपनी ताकत का भान होना चाहिए। वह तब होगा, जब आप एक दूसरे की चिन्ता करना शुरू कर दें। उससे नैतिक ताकत बनेगी। फिर हम श्रीमानों पर भी असर डाल सकेंगे। उनको प्रेम से समझा सकेंगे। यह हमारा रास्ता है। समाज के लिए गरीब अपने श्रम का एक हिस्सा देंगे, तो एक बड़ी पुण्यशक्ति निर्माण होगी। वह उनकी तपस्या होगी। त्याग और तपस्या से आपकी ताकत बनेगी।

"यह सारा भगवान् का रूप है। जो सामने बैठे हैं, वे चैतन्य हैं। वही वास्तव में चिदंबरम् हैं, हम उनको भूल गये हैं। भगवान् का प्रेम ही

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

रूप है। जिसके सिर से पसीने की गंगा वहती है वही सच्चा ईशभक्त है। यह सारा धर्मकार्य है—धारणात् धर्मः। वह सबको धारण करनेवाला है। पर इसके साथ अर्थ भी है। धर्म के साथ अर्थ होना कोई पाप नहीं। विष्णु के साथ लक्ष्मी का होना या शिव के साथ शक्ति का होना या गणेश के साथ सरस्वती का होना कोई पाप है क्या? उससे तो दोनों गुण आ गये। खाने में मीठा और देखने में सुन्दर। केवल ऊपर-ऊपर देखने से काम नहीं चलेगा। आप गहराई में जाइये। इसी दृष्टि से आप इस आन्दोलन की ओर देखिये।

"भारत में आत्मज्ञान की परम्परा है ही और विज्ञान का पूरा लाभ हम सर्वोदय-विचार में लेते हैं। लोग पूछते हैं, क्या ग्रामदान में पुराने औजार चलेंगे? ग्रामदान क्या कोई पुरानी चीज है? उसके साथ नये-नये औजार जुड़ेंगे।

"लोगों में आत्म-विश्वास नहीं। कहते हैं, यह कलियुग है। कलियुग में महात्मा गांधी जैसे सत्पुरुष हो गये और त्रेता में रावण जैसा राक्षस। मनु कहते हैं कि कलि में लोग नारायण-परायण होंगे। वेद कहता है 'अयं मे हस्तो भगवान्! कराग्रे वसते लक्ष्मीः। प्रभाते करदर्शनम्। अयं मे भगवन्तरः। यह मेरा हाथ भगवान् ही है, इसके अग्र में लक्ष्मी है। प्रातः उसीका दर्शन करना चाहिए। वह तो नियति से, तकदीर से भी बढ़कर है।

"लोग पूछते हैं, आपके कार्यकर्ता कहाँ हैं? अब समय थोड़ा बचा है। यह काम कैसे पूरा होगा? हम कहते हैं कि हमारे ३६ करोड़ कार्यकर्ता हैं। ये जो मूर्तियाँ यहाँ बैठी हैं, उन्हें हम भगवान् की मूर्ति समझते हैं। यह काम पूरा होगा जरूर। क्योंकि यह भगवान् की इच्छा है। जैसे मृग नक्षत्र आता है, तो एक दिन में वारिश से हिन्दुस्तान की कुल जमीन तर हो जाती है। एक ही दिन में दीपावली पर घर-घर में प्रकाश होता है। एक ही दिन गाँव-गाँव होली जलती है। उसी तरह गाँव-गाँव में भूदान का पैगाम पहुँचा दीजिये, तो आप देखेंगे कि एक ही दिन में कुल गाँवों की जमीन का बँटवारा हो सकता है। "जागिये रघुनाथ कुँवर"।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

"ग्रामदान की घटना दुनिया के इतिहास में अद्भुत गिनी जायगी। इसमें किसी प्रकार का दवाव नहीं है। इससे दुनिया में शान्ति की स्थापना हो जायगी। यह विश्वशान्ति के लिए वोट है। विश्वशान्ति स्थापित करने में वह मददगार होता है। एटम-हाइड्रोजन बम से भी ज्यादा शान्ति ग्रामदान में है। ग्रामदान वरदान है।

"आपने बहुत ही पवित्र कार्य किया है। आपको मेरे भक्तिभाव से प्रणाम।"

उपर्युक्त विवेचन से खयाल में आयेगा कि:

१. भारत की एक आध्यात्मिक परंपरा है, जिसमें मानव त्याग, प्रेम, करुणा और अद्वैत (अभेद) भावना को महत्त्व देता है। वह आत्मौपम्य वुद्धि को परम मानता है। वह जानता है कि जगत् में जो कुछ है, वह सव ईश्वर का है। अपना कुछ भी नहीं – न धरती, न संपत्ति, न शक्ति, न बुद्धि। अत: विश्वपुरुष को अर्पण करके ही उससे जो मिले, उसे भोगना है।

२. परिवार में एक-दूसरे का खयाल और चिन्ता की जाती है, इसीलिए उसमें आनन्द की अनुभूति होती है। पर वह आज सीमित है "मैं और मेरे" तक। उसे "वसुधैव कुटुम्वकम्" तक ले जाना है और उसका मुख्य कदम ग्रामदान है।

३. ग्रामदान में केवल धर्म की बात नहीं है, उसमें अर्थ भी है। अर्थात् गाँव की आर्थिक उन्नति भी उसमें निहित है। इतना ही नहीं, उसमें आधुनिकतम विज्ञान के लिए अवश्य स्थान है, बशर्ते कि विज्ञान चन्द व्यक्तियों के हाथ में शोषण का साधन न वने। वह सारी जनता की भलाई का पहले घ्यान रखे। विज्ञान मानव के लिए है, न कि मानव विज्ञान के लिए। मानवता विज्ञान से श्रेष्ठ है।

४. ग्रामदान इससे भी आगे वढ़ता है। वह आत्मनिर्भर होना चाहता है। क्या उसकी जीविका, क्या उसका प्रवन्ध, वह दूसरे के हाथ में अपने को अपने गाँव को देना न चाहेगा। न वह किसी पर अपना अधिकार चलायेगा। शासन और कांचन-निरपेक्षता उसका प्रयत्न होगा।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

५. इस तरह वह दुनिया से भय और हिंसा को हटाकर विश्वशान्ति के ध्येय की ओर कदम बढ़ायेगा।

यह सब हमारी प्राचीन परम्परा में था और अब भी होकर रहेगा। क्योंकि यह जमाने की माँग है, युगपुरुष की पुकार है और ईश्वर चाहता है। आइये, हम इस क्रान्ति-वर्ष में इसे सफल बनायें।

काशी
मई-दिवस, १९५७

—दादाभाई नाईक

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

अनुक्रम

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

टी. जी. [illegible] एवं,
स्व. वेदा[illegible]
"[illegible]" को अर्पण,
५-७-७४

ग्राम-दान

स्वराज्य तो मिला, पर लोग परतन्त्र   : १ :

कोरापुट जिले की जनता ने भू-दान का वहुत स्वागत किया है, इसलिए हमने इस जिले में अपनी यात्रा दो महीने और बढ़ायी है। यहाँ पर अब तक तेरह हजार दाताओं से अस्सी हजार एकड़ जमीन मिली है। यह कोई छोटी बात नहीं है। लेकिन हम चाहते हैं कि इस जिले से एक लाख दान-पत्र और चार लाख एकड़ जमीन हासिल हो। हमने हिसाब लगाकर देखा है कि यहाँ पर सवा लाख लोगों के पास जमीन है। अगर हमसे पूछा जाय, तो हम अपने हृदय की बात कहेंगे कि सवा लाख दान-पत्र मिलने चाहिए। लेकिन यह तो लोगों की इच्छा-शक्ति और सद्भावना पर निर्भर है। हम जानते हैं कि एक निश्चित मुद्दत के भीतर सब लोगों के पास पहुँचना मुश्किल हो जाता है, इसलिए हमने एक लाख दानपत्र का इष्टांक सामने रखा है।

भूदान का अन्तिम कदम

यहाँ पर हमें दो सौ से ज्यादा पूरे गाँव मिले हैं। यह इस बात की निशानी है कि इस जिले के लोगों के हृदय में हमारी बात पहुँच रही है और उनके दिलों को उससे समाधान होता है। भू-दान-आंदोलन की यह एक विशेष बात है कि इसमें से समग्र ग्रामदान आरम्भ हुआ है। भू-दान-आन्दोलन का यह अन्तिम कदम है। उसका पहला कदम था, गाँव में कोई भी भूमिहीन नहीं रहना चाहिए और अन्तिम कदम यह है कि गाँव में कोई भी भूमि-मालिक न रहना चाहिए। जमीन और सम्पत्ति का मालिक परमेश्वर है। हम सब तो उसके सेवक हैं। परमेश्वर ने जो जमीन और संपत्ति दी है तथा और भी जो अपार देनें दी हैं, वे सबके लिए हैं। अगर

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

हम अपनी मालकियत बनाते हैं, तो ईश्वर की जगह लेते हैं। इसलिए हमें मालकियत छोड़कर सेवकपन लेना चाहिए। हरएक को उसके पेट के लिए जितना जरूरी है, उतना मिलना ही चाहिए, उसका यह अधिकार है। परन्तु मालकियत का अधिकार किसीको नहीं है। भूदान-यज्ञ की यह अन्तिम बात है। हम देख रहे हैं कि ग्रामदान की यह बात बड़ी क्रान्तिकारी साबित होनेवाली है।

नागरिकों का कर्तव्य

हमें रोज गाँव-के-गाँव मिल रहे हैं। इस सम्बन्ध में नागरिकों का भी बड़ा कर्तव्य है। आप नागरिक हैं, इसलिए आपको समझना चाहिए कि आपके जिले में एक बड़ा कर्तव्य है। आपको यह भी समझना चाहिए कि जब आपके जिले में एक बड़ा आन्दोलन चल रहा है और छोटे-छोटे भाई त्याग कर रहे हैं, तो नागरिकों को भी उनके कन्धे-से-कन्धा लगाकर त्याग करना चाहिए। त्याग कड़वी चीज नहीं है, बल्कि बड़ी मीठी चीज है। जिसने उसका स्वाद चखा है, वह उसकी मिठास को जानता है। हमने तो उसका स्वाद खूब चखा है।

अगर आप सबकी सेवा करें और सबकी चिन्ता करें, तो सब आपकी चिन्ता करेंगे। आज करोड़ों लोग अपने-अपने स्वार्थ के लिए चिंतित हैं और वे सोचते हैं कि हम अपने स्वार्थ के लिए सोचेंगे, तभी स्वार्थ सधेगा। लकिन तुलसीदासजी ने इससे बिलकुल उल्टा कहा है और हमारा अनुभव भी वैसा ही है। उन्होंने कहा है, "परहित बस जिन्हके मनमाहीं, तिन कहँ जग दुर्लभ कछु नाहीं।" जिसके मन में परहित बसा हुआ है, उसको इस दुनिया में कोई भी चीज़ दुर्लभ नहीं है, उसे हर चीज मिल सकती है। समझने की बात है कि अगर हम समाज को भर-भर के देंगे, तो भी आखिर दो ही हाथों से देंगे, सर्वस्व देंगे तो भी दो ही हाथों से देंगे। इसलिए वह भी बहुत ज्यादा नहीं होगा। लेकिन जब हम उसके बदले में कुछ पायेंगे, तो लाखों हाथों से पायेंगे। जो दो हाथों से देता है, वह अनन्त हाथों से पाता है। लेकिन जो अपने एक हाथ से भी नहीं देता, वह अपने एक हाथ से दूसरे हाथ को काटता है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

अगर हमें त्याग का मौका मिलता है, तो उससे बढ़कर इस नर-देह में दूसरा कोई भाग्य नहीं हो सकता। मानव-जन्म में त्याग का मौका मिलता है, इसीलिए मानव-जन्म का महत्व गाया गया है। गाँव-गाँव में त्याग हो रहा है, तो आप-जैसे शहरवालों को भी इसमें योग देना चाहिए। आपको संपत्ति-दान के जरिये त्याग करने का मौका प्राप्त हो रहा है। हम चाहते हैं कि हर कोई अपनी संपत्ति का छठा हिस्सा समाज के लिए जिन्दगी भर देता रहे। जैसे मसाले से भोजन का स्वाद बढ़ता है, वैसे ही त्याग से भोग मधुर होता है। त्याग से बढ़कर अधिक मीठा मसाला कोई नहीं। हम तो चाहते हैं कि हर घर में हमारी बैंक बने। संपत्ति-दाता हमारे निर्देश के अनुसार दान का पैसा खर्च करेंगे। मैं तो चाहता हूँ कि सिर्फ शहरवाले ही नहीं, गाँव के लोग भी अपने अनाज का एक हिस्सा गाँव के लिए हर साल देते रहें। अभी गाँव-गाँव में जमीन बँट रही है, तो शहर के लोग बीज-दान, बैल-जोड़ी का दान और कूपदान दे सकते हैं। हिन्दुस्तान का हर व्यक्ति अगर यह व्रत लेता है कि अपनी संपत्ति का एक हिस्सा अपने परिवार के बाहर, समाज के लिए खर्च करना है, तो हिन्दुस्तान की सूरत बदल जायगी।

युग हमें नहीं, हम युग को बनाते हैं

कोरापुट में दो सौ से अधिक गाँवों के लोगों ने अपनी जमीन की मालकियत छोड़ दी है। एक गाँव में हमने जमीन का पुनर्वितरण किया था, तो जिस मनुष्य के पास पहले चौबीस एकड़ जमीन थी, उसे बँटवारे के बाद साढ़े तीन एकड़ मिली। उसने बड़े प्रेम से वह साढ़े तीन एकड़ का प्रमाण-पत्र ले लिया। उसी गाँव के एक भूमिहीन भाई को बँटवारे में पाँच एकड़ जमीन मिली; क्योंकि उसके घर में ज्यादा व्यक्ति थे। यह घटना इसी कलियुग की घटना है, सत्ययुग की नहीं। युग तो अपने मन का होता है। युग तो हम जैसा बनाना चाहते हैं, वैसा बनता है। कलियुग कहलानेवाले इस युग में गांधीजी जैसे महापुरुष हुए और त्रेतायुग में रावण जैसा राक्षस हुआ। इसलिए युग हमें नहीं बनाता, हम ही युग को बनाते हैं। एक भाई हमसे कह रहे थे कि यह कलियुग चल रहा है, इसमें क्या काम हो सकता है? हमने उनको जवाब दिया कि आप

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

तो शास्त्र देखकर ही कह रहे हैं कि यह कलियुग है। लेकिन हमने शास्त्रों में पढ़ा है कि कलियुग के लोग नारायण-परायण होते हैं। उनको जगन्नाथ-दास के भागवत का एक वाक्य भी सुनाया, जिसमें कहा गया है कि दूसरे युगों के लोग कलियुग में जन्म लेना चाहते हैं ; क्योंकि कलियुग में भक्ति की जा सकती है। इसलिए यह पापी युग नहीं है, बल्कि नारायण-परायण युग है। हम तो मानते हैं कि हमारा जीवन धन्य है, क्योंकि हम इस युग में जन्मे हैं। हमने अपने जीवन में सैकड़ों संतों का सहवास पाया है। हिन्दुस्तान में असंख्य सत्पुरुष इसी युग में पैदा हुए हैं। जिनका नाम दुनिया में मशहूर है, केवल वे ही महा-पुरुष नहीं हैं। महापुरुष तो रत्न की भाँति गाँव-गाँव में छिपे हुए हैं। पृथ्वी के अंदर असंख्य हीरे होते हैं। उनमें से कुछ ही हीरे बाहर निकल पाते हैं और चमक उठते हैं। हम मानते हैं कि जिन लोगों ने जमीन की मालकियत छोड़ी है, बँटवारे में बहुत थोड़ी जमीन स्वीकार की है, वे महापुरुष हैं। उन्हींकी पुण्य गाथा गाने के लिए हम घूम रहे हैं।

ग्रामदान के चार मुख्य काम

इस जिले के ग्रामदानी गाँवों में हमें चार काम करने होंगे :

१. जब जमीन बँटेगी, तब किसानों को जमीन की पूर्ति में और भी मदद देनी होगी।

२. खेती की पूर्तिस्वरूप ग्रामोद्याग खड़े करने होंगे। हम ग्रामोद्योगों पर बहुत जोर देते हैं। १९१६ से लेकर १९४८ तक यानी ३२ साल तक हमने ग्रामोद्योग का ही काम किया है। गांधीजी के जाने के बाद बाबा घूमने निकला, लेकिन अगर गांधीजी होते, तो आज वे ही घूमते होते और बाबा अपने उस काम में ही लगा हुआ रहता। हमने बत्तीस साल तक जो काम किया है, उसको काटने के लिए हमने यह काम शुरू नहीं किया है। हमने बहुत परिश्रम करके देखा है कि ग्रामोद्योग का काम जमीन के बँटवारे के बिना नहीं फल-फूल सकता। अब जब कि पूरे गाँव-के-गाँव मिल रहे हैं, तब उन गाँवों के लोग संकल्प करेंगे कि हमारे गाँव में ग्रामोद्योग भी चलेंगे। जमीन का बँटवारा और ग्रामोद्योग, दोनों मिलकर एक पूर्ण विचार या सर्वोदय होता है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

३. हमें गाँव-गाँव में तालीम शुरू करनी होगी। हमारी तालीम ग्रामोद्योग प्रधान, आध्यात्मिक और व्यावहारिक होगी। तालीम के जरिये रामायण, भगवत्गीता आदि पुस्तकें गाँव-गाँव में पहुँचानी होंगी। गाँववालों को उद्योग का ज्ञान भी देना होगा, ताकि वे उद्योगों में प्रवीण बनें। इस प्रकार की नयी तालीम हम चलाना चाहते हैं।

४. गाँव-गाँव में आरोग्य की योजना शीघ्रता से करनी होगी। इसके बाद कई काम करने होंगे। लेकिन ये चार मुख्य काम हैं। नागरिकों को इसमें योग देना चाहिए।

मालिक जनता, सेवक सरकार

स्वराज्य-प्राप्ति के बाद यहाँ के लोग परतन्त्र हो गये हैं। वे समझते हैं कि हर चीज सरकार ही करेगी। यह बिलकुल गलत विचार है। इससे ज्यादा भयानक विचार दूसरा कोई नहीं है। सरकार बाल्टी है और जनता कुआँ। कुएँ के पानी का एक छोटा-सा हिस्सा बाल्टी में जाता है। उसी तरह जनता की शक्ति का एक अत्यन्त अल्प हिस्सा सरकार के पास होता है। लेकिन इन दिनों एक बड़ा भ्रम फैला हुआ है कि बाल्टी में ही ज्यादा पानी आता है। वस्तुतः सरकार की शक्ति शून्य-जैसी है और जनता की शक्ति एक के अंक जैसी है। एक और शून्य, दोनों मिलकर दस बनते हैं। इसी तरह जनता और सरकार, दोनों की शक्ति मिलकर बहुत बड़ी शक्ति पैदा होती है, इसमें कोई सन्देह नहीं है। लेकिन अगर दोनों का अलग-अलग तौल करेंगे, तो जनता की शक्ति एक के जितनी है और सरकार की शून्य जितनी, यह मालूम होगा। लोक-सत्ता में लोगों को अलग रखा जाय, तो सरकार क्या चीज है? सरकार तो आपके चुने हुए नौकरों से बनती है। कोई अगर यह कहे कि उसकी शक्ति उसके नौकरों में है, तो वह पंगु कहा जायगा। लोगों को यह महसूस होना चाहिए कि हमने कारोबार चलाने के लिए ये नौकर रखे हैं। परन्तु हमारे दिमाग से हमारी सूचना के अनुसार काम होना चाहिए। इन दिनों 'वेलफेअर स्टेट' के नाम पर नौकर ही योजना करते हैं। योजना तो मालिकों को करनी चाहिए और नौकरों को उसे

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

अमल में लाने का काम करना चाहिए। हर गाँव के लोगों को अपनी बुद्धि से ग्राम-योजना बनानी चाहिए। गाँव में किसीके बीमार पड़ने पर क्या आप स्वास्थ्य-मंत्री को तार देंगे? ग्राम-आरोग्य की योजना तो गाँवों में ही होनी चाहिए। फिर सरकार से पूरक मदद माँगनी चाहिए।

तालीम स्वतन्त्र रहनी चाहिए

सर्वोदय का यह मूल विचार है कि अधिकांश काम जनशक्ति के द्वारा ही किये जायँ। जहाँ जन-शक्ति से आसानी से काम न होता हो, वहाँ सरकार से थोड़ी मदद ली जा सकती है। आजकल 'वेलफेअर स्टेट' के नाम पर सारी तालीम सरकार के हाथ में होती है और उसका परिणाम यह होता है कि जहाँ पर फासिस्ट सरकार है, वहाँ पर कुल स्कूलों के सब बच्चों को फासिज्म की तालीम दी जाती है। जहाँ कम्युनिस्ट सरकार है, वहाँ पर देश के सब स्कूलों में कम्युनिज्म की तालीम दी जाती है। आज अमेरिका के छोटे-छोटे बच्चों को सिखाया जाता है कि ये ऐटम और हाइड्रोजन बम सुदर्शनचक्र और गदा जैसे हैं—जिस तरह भक्त भगवान् की महिमा गाते हैं कि 'हे भगवन्, तेरे हाथ में सुदर्शन-चक्र और गदा है, तो हमें डर क्यों होगा? तू ही हमारी रक्षा करनेवाला है।' हर बच्चे को इस भ्रमपूर्ण विचार का इंजेक्शन हर रोज दिया जाता है और उसीके आधार पर सत्तावाले अपना अधिकार कायम रखते हैं। इसीलिए हम कहते हैं कि तालीम लोगों के हाथ में रहनी चाहिए। सरकार मदद कर सकती है, परन्तु सरकार के हाथ में उसके नियमन का अधिकार नहीं रहना चाहिए। जिस तरह आज माना गया है कि न्याय-विभाग स्वतंत्र रहना चाहिए, उस पर सरकार का कोई अधिकार नहीं रहना चाहिए, उसी तरह तालीम का इंतजाम भी लोक-शक्ति के जरिये होना चाहिए। पुराने समय में क्या मजाल थी कि कोई राजा किसी ऋषि के आश्रम में जाकर वहाँ किस प्रकार की तालीम देनी चाहिए, इस बारे में आज्ञा दे। राजा तो आश्रम में ज्ञान पाने के लिए जाता था।

महाराजा दुष्यन्त की एक कहानी है। वे अत्यन्त लोकप्रिय थे। एक दफा वे शिकार के लिए निकले। उन दिनों राजा लोग हिरणों का शिकार करते

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

थे, क्योंकि हिरण लाखों की संख्या में थे और फसल को नष्ट करते थे। इसलिए राजा लोग हिरणों का शिकार करना अपना कर्तव्य समझते थे। दुष्यन्त शिकार करते-करते कण्व मुनि के आश्रम में पहुँचे। वहाँ के हिरण का शिकार करने के लिए उन्होंने धनुष ताना। इतने में आश्रम का एक छोटा-सा लड़का कहता है, "आश्रममृगौ अयम् न हन्तव्यो न हन्तव्यो"—यह आश्रम-मृग है, इसे आप नहीं मार सकते। यह है भारत की संस्कृति, जहाँ पर आश्रम का एक छोटा-सा बच्चा यह हिम्मत रखता है कि राजा के सामने जाकर उसे रोके। यह चीज़ हम फिर से लाना चाहते हैं। इसीलिए तालीम लोगों के हाथ में होनी चाहिए।

लोग अब भी परतन्त्र

जितने काम सरकार के हाथ से निकलेंगे और लोगों के हाथ में पहुँचेंगे, उतनी ही अहिंसा पनपेगी और राजसत्ता क्षीण होते-होते आखिर में खतम हो जायगी। इसीलिए हम इस काम में लगे हुए हैं। कुछ लोग हमें सुनाते हैं कि यह काम तो सरकार के जरिये हो सकता है। हम कहते हैं कि अगर यह काम सरकार के जरिये होता है, तो आपको रोकता कौन है? आप सरकार के जरिये यह काम करवा लीजिये। मैं आपसे पूछना चाहता हूँ कि आपने इन आठ सालों में कितनी जमीन बाँटी है? हमने तो कहीं-कहीं देखा है कि सरकार की तरफ से जो जमीन बँटती है, वह वहाँ पर नीलाम होती है। हम टीका नहीं करना चाहते। हम जानते हैं कि सरकार ही उत्तरोत्तर हमारे विचार के लिए अनुकूल हो रही है। लेकिन हम यह कहना चाहते हैं कि कुछ काम ऐसे होते हैं, जो सरकार के जरिये हो ही नहीं सकते। कानून के जरिये जमीन छीनकर उसका बँटवारा किया जा सकता है, परन्तु मालिकों के हृदय को जोड़ा नहीं जा सकता, बल्कि उल्टा उनके हृदय को तोड़ा जाता है। भगवान् कृष्ण की महिमा यह थी कि वे चित्तहर थे, चित्त को चुरानेवाले थे। सरकार और कुछ चुरा सकती है, परन्तु चित्त को चुराने का काम वह नहीं कर सकती।

हम शून्य की मदद लेना चाहते हैं। परन्तु उसे शून्य के नाते ही रखना

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

चाहते हैं। जहाँ पर जन-शक्ति और सरकार, दोनों के मिलने से काम होता है, वहाँ पर एक बड़ी शक्ति पैदा होती है। इसलिए आप हमसे यह मत कहिये कि भू-दान का काम सरकार कर सकती है। कल आप यह भी कहेंगे कि आपके बच्चे की रक्षा करने का काम और बीमारी में उसकी दवा करने का काम भी सरकार ही करेगी। आजकल लोग इतने दीन बन गये हैं कि हर बात में कानून ही चाहते हैं। शादी की उम्र तय करनी हो, अपने अछूत भाइयों पर प्यार करना हो, तो सरकार से कानून बनाने के लिए कहते हैं। इस तरह लोग हर बात में लाचारी महसूस करते हैं और कहते हैं कि सरकार ही ये सारे काम कर सकती है। इसीलिए हमने कहा था कि जब से देश स्वतन्त्र हुआ है, तब से हमारे लोग परतंत्र ही अधिक हुए हैं। जब अंग्रेजों का राज्य था, तब बिहार में भूकम्प हुआ था। उस समय हिन्दुस्तान भर के लोग मदद में दौड़ गये थे। उन्होंने सरकार की राह नहीं देखी थी। अंग्रेजों के राज्य में जब गुजरात में बाढ़ आयी थी, तो लोग मदद में दौड़े गये थे। इससे सरकार शरमिंदा हुई और उसे मदद में पहुँचना पड़ा। लेकिन इन आजादी के दिनों में हमने क्या दृश्य देखा? पिछले साल इन्हीं चातुर्मास के महीनों में हम बिहार में बाढ़-पीड़ित प्रदेश में घूम रहे थे। बिहार के इतिहास में इतनी बड़ी बाढ़ कभी नहीं आयी थी। उसी प्रदेश में बारिश के दिनों में घूमने का हमें मौका मिला। हमने वहाँ पर देखा कि सीतामढ़ी शहर के इर्द-गिर्द चारों ओर पानी फैला हुआ था। लेकिन शहर के लोग रात को सिनेमा देखने जाते थे। क्या उनको इतना भी नहीं सूझता था कि चन्द दिनों तक सिनेमा देखना बंद करके बचा हुआ पैसा बाढ़-पीड़ित लोगों के लिए दिया जाय? लेकिन वे लोग तो समझते थे कि गाँव को मदद पहुँचाना सरकार का काम है। इसीको हम परतंत्रता, पराधीनता कहते हैं। यह मत समझिए कि अंग्रेजों का राज्य था, तो पराधीनता थी और अब अपने लोगों का राज्य आया है, तो स्वाधीनता आ गयी है।

आजादी का अर्थ

जिस देश का हर नागरिक और हर बच्चा अपने कर्तव्य को पहचानेगा,

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

अपना मूल्य पहचानेगा और निर्भय होकर अपना कर्तव्य करेगा, वही देश आजाद माना जायगा। जिस देश का बच्चा-बच्चा यह कहेगा कि मैं इस देश का सम्राट् हूँ, वह देश आजाद है। सरकार क्या चीज है? हमने ही पाँच साल के लिए उसे चुनकर दिया है। अगर वे लोग अच्छी नौकरी करते हैं, तो हम उन्हें दुबारा काम देंगे और नहीं करते हैं, तो दूसरे नौकर रखेंगे। आपको यह नहीं समझना चाहिए कि जैसे पहले अंग्रेजों का, मुगलों का या मराठों का राज्य था, वैसे अब कांग्रेस का राज्य आया है। हम लोगों में शक्ति जाग्रत करना चाहते हैं, भावना निर्माण करना चाहते हैं कि यह राज्य आपका है। इसीलिए हम चाहते हैं कि भूमि का और संपत्ति का बँटवारा जनशक्ति के जरिये हो। इसवास्ते हम यह चाहते हैं कि उससे लोगों को आत्म-शक्ति का भान हो। आत्मा में अनन्त शक्ति भरी हुई है। एक चेतन आत्मा प्रकट होती है, तो सारी दुनिया पर असर कर सकती है। यह सारी सृष्टि जड़ है और मैं चेतन हूँ, उसका साक्षी हूँ, मैं उसको आकार देनेवाला हूँ। जिस तरह कुम्हार समझता है कि मिट्टी तो मेरे हाथ में एक साधन है, उसे मैं चाहे जैसा आकार दे सकता हूँ; उसी तरह हम सृष्टि को आकार देनेवाले हैं। यह जो आत्मश्रद्धा है, आत्म-निष्ठा है, आत्म-बल है, उसका भान सब लोगों को हम कराना चाहते हैं।

हम चाहते हैं कि गाँव-गाँव के लोग इकट्ठा होकर अपने गाँव का स्वराज्य बनायें, गाँव की जमीन का बँटवारा करें और अपने गाँव में बाहर से कौनसा माल आना चाहिए, और कौनसा नहीं आना चाहिए, यह तय करें और फिर उसके अनुसार चलें। इस तरह गाँव एक किला बने। हमें यह सब करना है। इसीका आरम्भ ग्रामदान से हुआ है।

कोरापुट (उत्कल)
२१-७-'५५

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

शासन का उत्तरदायित्व जनता पर : २ :

पहले केवल नाममात्र के राजा रहते थे। वे प्रजा के जीवन का बहुत ज्यादा नियमन नहीं कर सकते थे। लोगों को अच्छी तरह आजादी थी। आज हालत दूसरी है। आज देहली से हुक्म निकला कि उसी दिन सारे हिन्दुस्तान में पहुँच जाता है। रेडियो वगैरह ऐसे साधन हैं कि जो हुक्म निकाला जायेगा, उसके अमल के लिए दो घंटे में हिन्दुस्तान में तैयारी होगी। यही हालत दूसरे देशों की है। इसलिए जिसको राजा बनाते हैं, फिर वह पाँच साल के लिए भी क्यों न हो, वह पाँच साल में इतना काम कर सकता है, जितना काम पहले के राजा पचास साल में भी नहीं कर सकते थे। पुराना वादशाह जितना हुक्म नहीं चला सकता होगा, उतना हुक्म आज आपका मुख्यमंत्री चलाता होगा। इसलिए वे अगर प्रजा का भला करना चाहते हैं, तो भला कर सकते हैं, वुरा करना चाहें तो वुरा कर सकते हैं। इससे प्रजा के हाथ में कुछ नहीं रहेगा। आप ऐसे भ्रम में मत रहिये कि पाँच साल के बाद राज्य हमारे ही हाथ में है। पाँच साल में तो इधर का उधर हो जायेगा। आज प्रजा को पूछने का सिर्फ नाटक होता है। उसके परिणामस्वरूप राज्य चलानेवाले कहते हैं कि हम जो कुछ करते हैं, वह प्रजा की सम्मति से ही करते हैं। पुराने राजा यह नहीं कह सकते थे कि हम जो करते हैं, वह प्रजा की सम्मति से करते हैं। वम्बई, कलकत्ता, पटना और कई जगह सरकार की ओर से गोली चलायी गयी, तो कहेंगे कि लोगों की सम्मति से हम गोली चलाते हैं, लोगों ने हमको राज्य चलाने की आज्ञा दी है, इसलिए हमें यह करना पड़ता है। पुराने राजाओं के सरदार यह नहीं कह सकते थे कि हमने गोली चलायी, तो लोगों की सम्मति से चलायी। इसलिए वे जो पुण्य-पाप करते थे, वह राजा का पुण्य-पाप होता था और उसका वोझ उसीको उठाना पड़ता था। लेकिन आज के राजा जो पुण्य-पाप करेंगे, उसकी जिम्मेवारी जनता पर है और पुराने जमाने के राजा से शतगुनी सत्ता, इस समय के मुख्यमंत्री के पास है। इसलिए गाँव-गाँव के लोगों को जाग जाना चाहिए। अपना भला-बुरा करने

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

की सत्ता किसीको नहीं देनी चाहिए। पाँच साल के लिए नहीं, पाँच दिन के लिए भी नहीं।

सर्वोदय के प्रयत्न

अपने गाँव का एक राज्य बनाओ। कौन-सा माल बाहर से लाया जायेगा, यह सब मिलकर तय करो। उसके अलावा कोई भी चीज कोई व्यक्ति खरीदेगा नहीं, बेचनेवाला वैसे ही वापस चला जाये, यह शक्ति गाँव में आनी चाहिए। गाँव याने एक स्टेट। आजकल प्रान्त-रचना हो रही है, तो चर्चा हो रही है कि कौन-सा तालुका किस राज्य में डाला जाय। राज्य चलानेवाले इधर से उधर डालते हैं और उधर से इधर डालते हैं। आपसे कोई पूछने नहीं आता है। पाँच साल के बाद दूसरा आता है, तो वह उधर का इधर और इधर का उधर कर देता है। कोई अगर आपसे पूछेगा कि आप कहाँ रहते हैं, तो जवाब होगा कि मैं गाँव में रहता हूँ और वह गाँव दुनिया में है। आप हमारी गिनती तमिल, मैसूर आदि चाहे जिसमें करें, हम तो अपनी गिनती गाँव में करते हैं और वह जगह दुनिया में है। हमारा राजा परमेश्वर है और गाँववाले मिल-जुलकर राज्य कारोबार चलाते हैं। आज तो आपके गाँव की योजना देहली में, बहुत हुआ तो मद्रास में होती है। जब तक आपके गाँव की योजना आप नहीं करेंगे, तब तक गुलामी मिटेगी नहीं। इसलिए सबसे बड़ी बात यह है कि आप अपना कारोबार चलायें। गाँव के २१ साल से बड़े जितने भाई-बहन हैं, उनकी एक समिति, ग्रामसमिति बनायी जाय और फिर उसमें से कार्य करने के लिए सर्वानुमति से एक समिति (कार्यसमिति) बने। वे लोग गाँव की सेवा करेंगे। वे गाँव के लिए जो फैसला देंगे, वह गाँव में ही होगा। शादी का खर्च सारा गाँव उठा लेगा। इसलिए कर्ज का सवाल ही नहीं उठेगा। गाँव की समिति की ओर से गाँव में एक दूकान चलेगी, जिसमें गाँववाले जो तय करेंगे, वे चीजें रखी जायेंगी। झगड़े का निपटारा गाँव में ही होगा। उस पर अपील नहीं की जायगी। आज तो झगड़ा गाँव में से मद्रास, मद्रास से देहली तक लिया जाता है। पहले तो लन्दन में प्रीवी कौंसिल में लिया जाता था। उसमें भी समाधान-कारक फैसला न हुआ, तो आखिर शिवजी का नाम लेते थे। अब ग्रामराज्य

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

के बाद गाँव में ही फैसला होना चाहिए और उस पर अपील नहीं होनी चाहिए। ऐसा करने पर ही गाँव को सच्ची आजादी मिलेगी। फिर देहलीवाले कहेंगे कि बाहर से आक्रमण हो तो रक्षा के लिए सेना चाहिए, देश में रेल चाहिए आदि के इंतजाम के लिए थोड़ा टैक्स वसूल करेंगे, वह देना होगा; परन्तु उसमें भी आप कह सकेंगे कि हमारे गाँव का कारोबार हम सँभालते हैं, तो हमारे टैक्स का उपयोग हमारे गाँव में ही क्यों न किया जाय? फिर सरकार कहेगी कि रुपये में से पन्द्रह आना आप रखिये और एक आना हमको दीजिये। इस तरह गाँव की सत्ता आपके हाथ में आयेगी, तभी देश बचेगा। यही सर्वोदय का प्रयत्न है। ग्राम-दान इसीलिए है। थोड़ी जमीन लेकर बाँटना उसका उद्देश्य नहीं है। व्यक्तिगत मालकियत को खतम करना ही उसका उद्देश्य है।

दुःख की जड़ मालकियत

लोग पूछते हैं कि व्यक्तिगत मालकियत नहीं होगी, तो कैसे चलेगा? व्यक्तिगत मालकियत मिटेगी, तो व्यक्तिगत रोना भी मिट जायेगा। सब मिलकर काम करेंगे, तो रोयेंगे क्यों? आज तो हरएक किसान के पीछे एक-एक साहूकार लगा है, किसान रोता रहता है और बाकी के लोग सुनते रहते हैं। व्यक्तिगत मालकियत है, इसलिए व्यक्तिगत रोना है। व्यक्तिगत मालकियत मिटने पर रोना पड़ा, तो सारा गाँव रोयेगा और सारे गाँव के रोने का मौका आना आसान बात नहीं है। सब मिलकर काम करते हैं, तो हँसने का ही मौका आता है, रोने का कम आता है। मालकियत मिटेगी, तो सब दुःख मिटेंगे। आप लोगों ने मालकियत पकड़ रखी है याने दुःख को पकड़ रखा है। अगर दुःख मिटाना चाहते हो, तो मालकियत मिटा दो।

ग्रामदान में आप कुछ खोयेंगे नहीं। ५-१० या ५० एकड़ जमीन का मालिक २,००० एकड़ जमीन का, याने सारे गाँव की जमीन का मालिक हो जायेगा। उसमें कोई कुछ खोयेगा नहीं; बहुत कुछ पायेगा। एक छोटे-से परिवार को तो जो आया सो पीसता था। अब वह परिवार बड़ा हो गया, तो उसे कोई पीस न सकेगा। यह ग्रामदान का अर्थ है, इसलिए बाबा ग्रामदान माँगता है।

कनकमपालयम् (कोइम्बतूर)
२१-१०-'५६

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

स्वराज्य के बाद दो रास्ते

: ३ :

आज हमें खुशी हो रही है कि हम अपने भाई व्यंकटाचलपतिजी के गाँव में आ पहुँचे हैं। जो काम हम कर रहे हैं, वह हमारा ही नहीं है, उनका भी है। स्वराज्य-प्राप्ति के आन्दोलन में हमने भी कुछ हिस्सा ले लिया और उन्होंने भी लिया। स्वराज्य-आन्दोलन में तो हजारों लोगों ने भाग लिया। स्वराज्य-प्राप्ति के बाद व्यंकटाचलपति और उनके साथियों के मन में ग्रामराज की धुन रही। वही भावना हमारी भी थी। इसलिए हम दोनों पूरे अर्थ में सहोदर हो गये। एक उदर में से जिनका जन्म होता है, उन्हें सहोदर कहते हैं। एक विचार में से जिनका जन्म हुआ है, वे अधिक नजदीक के सहोदर हुए। स्वराज्य-आन्दोलन में हजारों नहीं, बल्कि लाखों लोगों ने भाग लिया। परन्तु जिन्होंने भाग लिया, वे सब एक विचार के लोग नहीं थे। वह तो एक निषेधक विचार था कि अंग्रेजी सत्ता यहाँ न रहे। क्या रहेगा, इस बारे में उन लोगों ने सोचा नहीं था। जिन लाखों लोगों ने स्वराज्य-आन्दोलन में भाग लिया था, जिन्होंने विचार किया था, उनके विचार अलग-अलग थे। अंग्रेजी सत्ता के कारण हिन्दुस्तान की जनता दबी हुई है, उसमें से उसे छुड़ाना चाहिए—इतनी बात सब लोग जानते थे। परन्तु जाति-भेद का काफी दबाव हिन्दुस्तान में था। आज भी है। गाँवों पर शहरों का, शहरों पर परदेशों का आर्थिक दबाव है, यंत्रोद्योग का ग्रामोद्योग पर असर है। अब उस जाति-भेद को मिटाना है, ग्रामीणों की सत्ता गाँवों पर स्थापित करनी है, लोकनीति बनानी है। शासन से मुक्ति पानी है। ये सारे विचार स्वराज्य के आन्दोलन में जिन्होंने भाग लिया था, उनको मालूम नहीं और मंजूर भी नहीं था; इसलिए स्वराज्य के आन्दोलन में जिन्होंने हिस्सा लिया, वे इतने सहोदर नहीं हैं। उन्होंने एक साथ काम जरूर किया, इसलिए वे सहयोगी हुए। लेकिन काशी तक साथ गये, फिर वहाँ से एक ने कहा कि हमको अयोध्या जाना है। दूसरे ने कहा, हमको मथुरा जाना है। काशी के बाद दोनों की राह अलग-अलग हो गयी। इसलिए स्वराज्य के लिए जो लोग साथ रहे, वे सारे इस ग्रामराज

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

की कल्पना में नहीं आये। जो एक ही विचार के उदर में से पैदा हुए सहोदर थे, वे लोग इस आन्दोलन में आये।

हमारी खूबी

यह करीब-करीब पागलों की जमात है। जो जमात छोटी होती है, चाहे उसके पास अक्ल भी हो, तो भी वह दुनिया में पागलों की जमात मानी जाती है। आप लोग जानते हैं कि यह दिन बहुमत के सत्ता के दिन हैं। ग्रामराज्य-वाले हम लोग आज तक बिलकुल ही अल्पमत में थे। जो सच्चे पागल होते हैं, उनमें एक-न-एक खूबी होती है। उनका जब समाज को स्पर्श होता है, तो वे समाज को पागल बनने की दीक्षा देते हैं। हमने समाज को ग्रामराज की दीक्षा देने के लिए भूदान-आन्दोलन शुरू किया। उसी विचार से व्यंकटाचल-पति सरकार में दाखिल हुए हैं। दीखने में तो ऐसा दीखता है कि दोनों के रास्ते बिलकुल विपरीत दिशा में जाते हैं; लेकिन पृथ्वी गोल है, इसलिए उलटे रास्ते जाने पर भी दोनों इकट्ठे हो सकते हैं। अब हम दोनों इकट्ठे हुए हैं। उनकी भी यही इच्छा है कि ग्रामदान हो और ग्रामराज्य चले। इस काम में सरकार के जरिये भी कुछ मदद हो सकती है, सिर्फ उतने से लाभ के कारण वे वहाँ नहीं हैं। उस स्थान को छोड़ने के लिए वे किसी भी क्षण राजी हैं। ऊपर-ऊपर से ऐसा दीख सकता है कि हम दोनों अलग-अलग स्थान में हैं, लेकिन सचमुच दोनों में से कोई अलग स्थान में नहीं है।

रामचन्द्र जंगल में भटकते थे, किसी शहर में प्रवेश भी नहीं करते थे। अपनी माता की आज्ञा का वे अक्षरशः पालन करते थे। गुह और सुग्रीव ने उनसे अपने नगर में आने के लिए कहा, तो 'ना' कह दिया और नगर के बाहर ही रहे। दूसरी ओर भरत नगर में ही रहे। ऊपर-ऊपर से दोनों के काम उलटे दीखते हैं। रामचन्द्र ने राज्य छोड़ा, भरत को राज्य चलाना पड़ा। ये जंगल में रहे और वे नगर में रहे। लेकिन जो तपस्या रामचन्द्र ने जंगल में की, वही भरत ने अयोध्या में की।

बहुत खुशी की बात है कि तमिलनाड का वातावरण अनुकूल हो रहा है। जो लोग एक-दूसरे के अनुकूल नहीं हैं, जिनका एक-दूसरे के साथ झगड़ा है, वे भी ग्रामदान और भूदान के साथ अनुकूल हैं।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

हमारा रास्ता सबके लिए खुला है

एक उत्तम झरना है। उस पर गाय आती है। प्रेम से पानी पीकर शान्त होती है और चली जाती है। थोड़ी देर बाद प्यासा शेर आता है, पानी पी लेता है। गाय की शेर के साथ नहीं बनती, और शेर की गाय के साथ नहीं बनती है। लेकिन दोनों को पानी प्रिय है।

लोग पूछते हैं कि बाबा ने यह क्या कीमिया की कि सब लोग भूदान के अनुकूल हो जाते हैं। जो लोग बाबा को अनूकुल नहीं बनाना चाहते, वे बाबा के नजदीक ही नहीं आते। वे डरते हैं। वे समझते हैं कि बाबा के नजदीक जायेंगे, तो अनुकूल ही बनना पड़ेगा, क्योंकि यह विचार ही मीठा है। गुड़ मीठा है, तो उस पर चींटियाँ आयेंगी ही। मक्खियाँ भी आयेंगी और बच्चा भी गुड़ खाने को लपकता है। इसलिए ये लोग हमारे पास आते ही नहीं और आते हैं तो टिकते नहीं। 'हाँ, जी' करके चले जाते हैं। हमारे पास कोई सत्ता तो है नहीं, न हम उनको कोई सीट देनेवाले हैं। परन्तु हमारे पास आते हैं, तो अनुकूल हो जाते हैं, क्योंकि यह विचार पानी के समान जीवनदायी है। इस विचार को कोई इनकार नहीं कर सकता।

अर्थशास्त्रज्ञ कबूल करते हैं कि सारा गाँव अगर एक हो जायगा, तो अत्यन्त उत्तम रीति से गाँव सुव्यवस्थित होगा।

समाज-शास्त्रज्ञ कहते हैं कि ग्रामदान बहुत अच्छा है। उससे जाति-भेद मिटने में बहुत मदद होती है। कोरापुट में ग्रामदान के कारण जाति के भेद मिट रहे हैं, प्रेम बढ़ रहा है। जाति-भेद ही नहीं, धर्म-भेद भी मिट रहा है। जाति-सुधार, समाज-सुधार ग्रामदान से होता है।

राजनैतिक विचारवाले तो ग्रामदान पर लट्टू ही हैं। वे कहते ह कि हर गाँव एक-एक युनिट हो जायगा, तो स्वराज्य की बड़ी भारी ताकत बनेगी। गाँवों में शान्ति रखने में कोई मुश्किल नहीं होगी। गाँव के लिए कोई योजना करना भी आसान होगा, गाँववालों की अक्ल का पूरा उपयोग होगा। गाँव-गाँव में राज्य होगा, तो गाँव-गाव में अच्छे शासक तैयार होंगे।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

जो समस्या गाँव की, वही देश की

वीच में पंडित नेहरू कुछ समय के लिए प्रधान मंत्री और कांग्रेस के अध्यक्ष पद से अलग होना चाहते थे। वे थोड़ा चिन्तन करना, जरा दिमाग ताजा करना चाहते थे। कुछ समय के लिए बोझ हटे, ऐसा वे चाहते थे। परन्तु यह सुनते ही सव लोग घवड़ा गये। लेकिन इसमें घवड़ाने की क्या बात थी ? अगर गाँव-गाँव में स्वराज्य चलता है, तो गाँव-गाँव में से अच्छे-अच्छे मुख्य-प्रधान और शासक निकलते। जो गाँव के कारोबार में करना होता है, वही विस्तार से देश के कारोवार में करना होता है। अभी तो ग्राम-कार्य ही नहीं चलता। उसको सोचनेवाले लोग भी नहीं हैं। इसलिए देश में राज्य-कर्ता वहुत ही अल्प संख्या में रह गये। अगर गाँव-गाँव में ऐसी सुन्दर संस्था चले, तो असेम्वली और पार्लमेंट में कोई समस्या खड़ी होते ही ग्रामराज के जरिये उसका हल मिल सकता है। राह दिखाने के लिए वे गाँववालों से आकर कहें, "जमीन की वहुत वड़ी समस्या है, जमीन की मालकियत वनी है, अलग-अलग टुकड़े पड़ गये हैं। हम आपका गाँव देखना चाहते हैं।"

"देखो न। हमने यहाँ कैसे सारा एक कर दिया है।"

"अरे, हमारे सामने हिन्दू-ममलमान के झगड़े की बहुत वड़ी समस्या है। उन झगड़ों का क्या हल है ?"

"जरा आओ हमारे गाँव में और देखो सब कितने प्रेम से रहते हैं ? सब लोग मिल-जुलकर काम करते हैं और प्रार्थना में भी एक साथ वैठते हैं। यह नमूना ही आप ले लें।"

जो समस्या गाँव में होती है, वही वड़े पैमाने पर देश में होती है। गाँव-गाँव में अगर ग्रामदान और ग्रामराज्य होगा, तो राजनीति का चिन्तन करनेवाले तो वड़े खुश होंगे कि इससे बड़ी ताकत पैदा होगी।

शिक्षणशास्त्रज्ञ तो ग्रामराज्य पर बेहद खुश हैं। कहते हैं, ग्रामराज्य हो जायगा, तो सव वच्चों की तालीम की समस्या जल्दी ही हल हो जायगी। आज तो चंद लोगों के पास बड़ी-बड़ी जमीनें हैं। वे खुद काश्त नहीं करेंगे। उनके वच्चे भी कर्मशून्य तालीम पायेंगे। भूमिहीनों के वच्चे स्कूल में

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

नहीं जा सकेंगे। इसलिए वे ज्ञान-शून्य कर्म किया करेंगे। ग्रामदान से सब को जमीन मिलती है, इस वास्ते सबके बच्चे ज्ञान पायेंगे, सबके बच्चे काम करेंगे। इसलिए तालीम वालों को तो ग्रामदान का विचार अत्यन्त प्रिय है।

धार्मिक विचारवाले लोग तो ग्रामदान के विचार से नाचते हैं। वे कहते हैं कि 'मैं—मेरा' मिटा दो—यह हम चिल्लाते रहे, लेकिन कोई सुनता नहीं। हम 'तिरुवाचकम्, तिरुकुरल, तिरुवायमुलि' गाते हैं, लेकिन सुनता कौन है? कहते हैं कि "मैं—मेरा' मिटाने की बात तो संन्यासी की है, हम तो संसारी हैं। ग्रामदान से 'मैं—मेरा' मिट गया और 'हम—हमारा' आ गया। धर्म का, शास्त्रकारों का काम हो गया। हजारों उपनिषदों से जो नहीं हुआ था, वह इस जीवन की योजना से बन गया।

क्या यह न्याय है?

"ला एण्ड आर्डर" वाले, दुनिया भर के इंतजाम करनेवाले कहते हैं कि ग्रामदान हो जाय, तो हमारा इंतजाम बहुत ही अच्छा हो जाय। बेचारे गरीब मनुष्य को दिन में काम नहीं मिलता और घर में बाल-बच्चे भूखों मरते हैं, तो रात को काम करता है। लेकिन उस पर कोर्ट में केस चलाकर जेल में डालते हैं। जेल में उसकी १४ घंटे की नींद, दो दफा बराबर खाना, वजन कम न हो, इसका बराबर इंतजाम होता है। सजा तो वास्तव में उसके घर-वालों को होती है; क्योंकि कमानेवाला घर में वह एक ही था। यह क्या कोई न्याय है? क्या यह ला-आर्डर है? और क्या इससे समाज में शान्ति की स्थापना होगी?

फिर बढ़ाओ पुलिस और फौज की संख्या। पड़ोसी देश यह देखकर घबड़ाता है और अपनी फौज बढ़ाता है। उसे देखकर यह भी अपनी संख्या बढ़ाता है। इससे देश में गरीबों का इंतजाम ही नहीं हो सकता। इसलिए ला एण्ड आर्डर का कुल का कुल मसला ग्रामदान से हल हो जाता है।

बाबा सरकार को बचा रहा है

कुछ लोग कहते हैं कि भूदान के लिए सरकार अनुकल हो गयी है। शायद

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सरकार बाबा को बचा लेगी। अरे, बाबा सरकार को बचा रहा है। यह समझने की बात है। सरकार के कानून में जो लिखा है, उससे बिलकुल विरुद्ध बात हो रही है। लेकिन सरकार कबूल कर रही है कि हरएक का जमीन पर अधिकार है। व्यक्तिगत मालकियत एक पवित्र वस्तु है, उसकी रक्षा के लिए पार्लमेंट में संविधान बना है। उसके बचाव के लिए सरकार, सेना, कोर्ट सब कुछ है। परन्तु क्या सरकारी कानून में यह लिखा है कि खानगी मालकियत गलत, जमीन की मालकियत पाप है? लेकिन बाबा इसका प्रचार कर रहा है, तो सरकार कहती है कि हाँ, भाई अच्छा काम हो रहा है। अब कौन किसको बचा रहा है? सरकार बाबा को बचा रही है, कि बाबा सरकार को बचा रहा है? यह ठीक ही हो रहा है। इसलिए ग्रामदान हो रहा है। इस वास्ते सरकार जो ला-आर्डर के पीछे खर्च कर रही है, वह सबका सब बाबा को मिलना चाहिए। ला और आर्डर का गुप्त काम हो रहा है। इसलिए इंतजाम करनेवाले सब लोग, जो दुनिया का अच्छा इंतजाम चाहते हैं, सब ग्रामदान से खुश हैं।

चोर के डर से व्याख्यान छोड़ना पड़ा!

फिर नाराज कौन हैं? इतने सारे लोगों को यह विचार कबूल है। कहते हैं कि जिनके पास जमीन, सम्पत्ति है, उनको जरा विरोध मालूम हो रहा है। उनको विरोध करने का कोई कारण नहीं है। उनका इसमें कोई नुकसान नहीं है। जिस काम में सारी दुनिया का भला है, उस काम में उनका भला है। आज तो उनकी उनके बेटों के साथ भी नहीं बनती। इधर तो सारे गाँव के साथ उनकी बनेगी। उधर तो उनको रात में चोरों का डर रहता है। आन्ध्र में हमारी एक सभा में दो-चार बड़े लोग आना चाहते थे। फिर भी नहीं आ सके। क्योंकि उनको डर था कि वे ही अगर सभा में आ जायँ, तो घर की रक्षा कौन करे! दिन में चोरी करना चोर के लिए आसान होगा, क्योंकि रात में अन्धकार में काम करना पड़ता है। चोर के डर से बाबा का व्याख्यान छोड़ना पड़ा, यह क्या कोई सुख है?

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

ग्रामदान का स्रोता सूखने न पाए

हमारा एक मित्र था। उसका वजन २५० रतल था। वह मेरे साथ जेल में था। उसका बड़ा भयानक हाल हो गया था। मैंने उससे कहा कि डरो मत, जेल का खाना तुम्हारे लिए अनुकूल नहीं हो रहा है। मैंने जेलर से कह दिया कि मैं उसका वजन कम करना चाहता हूँ। इसलिए ५० तोला ज्वार के बदले दूध आवश्यक है। वह भी दो-चार रतल नहीं, आधा रतल और आधा तोला शक्कर। इससे पाँच महीने में ५० पौंड वजन घट गया। जो आदमी चल नहीं सकता था, वह अब दौड़ने लगा। दिन भर में दो पाव दूध और स्वाद के लिए शक्कर। इसी तरह बड़े-बड़े जमींदारों को सौ-सौ एकड़ जमीन रखने की क्या जरूरत है। सात एकड़ रखकर बाकी गाँव को दे दें और खुद काम करने लगें, तो आयु बढ़ेगी। इसलिए उन पर हमारी यह कृपा है कि हम जमीन की आसक्ति कम करते हैं। इसमें उनका कोई नुकसान नहीं है। यह बात जँच जाती है, इसीलिए बड़े-बड़े लोगों ने काफी जमीन दी है। अब तो यहाँ तालुकादान, जिलादान होने की बात चल रही है। तो, व्यंकटाचलपतिजीका गाँव तो होना ही चाहिए। एक बहुत ही बड़े आन्दोलन का आरम्भ तमिलनाड में हो चुका है। दस-दस महीने हम यहाँ खोदते रहे। अब जरा पानी आया है। लेकिन और भी गहरा खोदना होगा, नहीं तो यह झरना इतना छोटा है कि गर्मी में सूख सकता है। हम आशा करते हैं कि ये सारे भाई इस खोद-काम में प्रवीण होने के लिए प्रयत्न करेंगे।

गोपीनायकम्पट्टी (मदुरा)
२१-३-'५७

लोक-क्रांति का आधार लोक-सम्मति :४:

सातत्य-योग

अभी एक बहुत बड़े जिले की यात्रा समाप्त करके इस जिले में हमारा प्रवेश हुआ है। दोनों जिलों के कुछ लोग इकट्ठा हुए हैं। एक स्नेह में से दूसरे स्नेह में हमारा प्रवेश हो रहा है। हमें पूरी उम्मीद है कि जो सद्भावना

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

हमने कोयम्बतूर जिले में छोड़ी है, वह यहाँ काम करती रहेगी और योजना भी ऐसी है कि आगे करीब साढ़े तीन-चार ही महीने के बाद हमारी तमिलनाड की यात्रा-समाप्ति के समय फिर से इस जिले में हमारे पाँच-छः दिन बीतेंगे। हम उम्मीद करते हैं कि इस जिलेवाले विश्राम नहीं लेंगे, बल्कि आज से ही कार्य को जारी रखेंगे। कोई भी गृहिणी, जब रसोई करनी होती है, तो चूल्हा को ठंडा नहीं पड़ने देती। जो लोग वातावरण को ठंडा पड़ने देते हैं, और सोचते हैं कि फिर हम काम करेंगे, वे कर्मयोग का रहस्य नहीं जानते। कर्मयोग का रहस्य, उसका प्राणतत्त्व है—सातत्ययोग। यह हमने उत्कल में देखा। उत्कल के लोगों ने जिस दिन हमें आन्ध्र के लिए विदा किया, उसी दिन से फौरन वहाँ के गोपबाबू वगैरह कार्यकर्ता काम करने के लिए देहातों में चले गये और वहाँ पर कार्य जारी रहा, जो अभी भी जारी है। हमने जितने ग्रामदान लेकर उस प्रदेश को छोड़ा था, उससे दुगुने ग्रामदान अब वहाँ हुए हैं। ६०० ग्रामदान की संख्या ११०० से ऊपर पहुँच गयी है। यह सातत्योग का परिणाम है। सातत्योग की मिसाल अगर देनी है, तो हम अपनी ही देंगे। ४० साल पहले हमने एक विचार लेकर घर छोड़ा था। उसी विचार पर हम लगातार चले हैं और हमें ऐसा एक भी दिन याद नहीं है, जब कि हमें उस विचार का विस्मरण हुआ हो। इसलिए हमें यही अनुभव आया कि हमारी सद्वासना की विरोधी शक्ति दुनिया में है ही नहीं, बल्कि हमारी सद्भावना को मदद करनेवाली शक्ति दुनिया में जाग्रत है। सूर्यनारायण हाजिर ही हैं, लेकिन हमने अगर अपना दरवाजा नहीं खोला, तो प्रकाश अन्दर नहीं आयेगा। जरा दरवाजा खोलते ही प्रकाश अन्दर आ जायेगा। दुनिया में एक ऐसी शक्ति काम कर रही है जो न निद्रा जानती है, न आलस्य। वह सतत् काम करती ही रहती है। अगर भक्त उसकी मदद लेने के लिए तैयार हो, तो उसे मदद मिलती है। हमें आशा है कि कोयम्बतूर जिले के कार्यकर्ता कर्मयोग के इस रहस्य का संगोपन करेंगे।

निर्माण-कार्य की बुनियाद

भूदान के काम की पूर्णता ग्रामदान में होती है। लेकिन जहाँ ग्रामदान हो गया, वहाँ सर्वोदय-निर्माण-कार्य का आरम्भ हो ही जाता है। बिना भूदान

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

के और ग्रामदान के ग्राम-निर्माण-कार्य के प्रयोग हमने ३०-३२ साल तक किये हैं। उनमें हमें यश नहीं मिला। हमारी कोशिश में किसी भी प्रकार की कसर रही हो, ऐसा हमें मालूम नहीं। उसमें कमी यही थी कि उस कार्य की बुनियाद भूमि में नहीं थी। हम स्वराज्य-प्राप्ति के पहले की बात कर रहे हैं। जहाँ सारा देश ही दूसरों के हाथ में था, वहाँ कैसे ग्रामदान होता और कैसे भूदान होता ? इसलिए यह चीज उस जमाने में हो नहीं सकती थी। उसके विना हम जो काम करते थे, वे विना बुनियाद के होते थे, यह हमने अच्छी तरह से परख लिया। इसलिए जब से भूदान की युक्ति हाथ आयी है, तब से हम दूसरे सब काम छोड़कर इसी में लगे हैं। अब ध्यान में आता है कि भूदान के बाद ग्रामदान होता है, तो निर्माण-कार्य के लिए दुनिया बिलकुल खुल जाती है। विना भूदान के और ग्रामदान के आज भी जो निर्माण-कार्य के प्रयोग कर रहे हैं, उनका निर्माण-कार्य खतरे में है। हम यह सब अपने अनुभव से कह रहे हैं। हम कोई प्रचारक (प्रोपेगैंडिस्ट) नहीं हैं। प्रचारक ऐसे नहीं होते हैं कि जवानी के तीस साल निर्माण-काय में बिताकर बुढ़ापे में प्रचार के लिए निकलें। वे तो जवानी में ही निकलते हैं। यह सारा हम इसलिए कह रहे हैं कि निर्माण-कार्य को हम बुनियाद देना चाहते हैं। निर्माण-कार्य के लिए बुनियाद या तो सरकारी कानून से हो सकती है या जनता की सम्मति से हो सकती है। सरकार अगर कानून से गाँव की जमीन एक करे और बाहर की चीजें गाँव में आने से रोके, तब कुछ काम हो सकता है। उसमें लोकशक्ति विकसित नहीं होगी, लोक-कार्य होगा। लेकिन सरकार अगर वह नहीं करती और हम यों ही विना भूदान के और ग्रामदान के निर्माण-कार्य में लगते हैं, तो न लोकशक्ति विकसित होती है, न लोकाकार्य बनता है। इसके मानी यह नहीं कि उससे कुछ भी सेवा नहीं बनती है, कुछ न कुछ तो सेवा जरूर होती है; परन्तु जिसे हम सर्वोदय-कार्य कहते हैं, वह निष्पक्ष नहीं होता। सर्वोदय-कार्य के लिए या तो लोक-सम्मति का आधार चाहिए या सरकार का आधार चाहिए। सर्वोदय-कार्य इन दो तरीकों से हो सकेगा परन्तु सर्वोदय क्रान्ति एक ही तरीके से हो सकती है, वह केवल लोकशक्ति के आधार से ही होगी। उसमें कानून की कोई मदद नहीं हो सकती है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

लोककार्य का आधार : जन-सम्मति

आज की सरकार पुरानी समाज-रचना पर खड़ी है। उस समाज-रचना में फर्क किये विना, जितनी सेवा वह कर सकती है, करती है। हमने सुना कि जहाँ कुमारप्पाजी वैठे हैं, उसके नजदीक एक राइसमिल खुली है। अव इसको क्या किया जाय? मैंने यह मिसाल इसलिए दी कि आज की सरकार सेवा तो करना चाहती है, परन्तु पुरानी समाज-रचना पर ही करना चाहती है। सोशल पैटर्न आफ सोसाइटी (समाजवादी रचना) का नाम तो लिया जाता है, परन्तु समाजवाद के दुनिया में इतने अर्थ हैं कि उस अर्थ को पूंजीवादी भी हजम कर लेंगे। हिटलर का राज्य भी एक समाजवादी राज्य था। उसका उन्होंने वहुत अच्छा नाम रखा था—नेशनल सोशलिस्ट स्टेट। इस तरह डवल इंजिन लगाया था। तिस पर भी दुनिया के नाश के सिवा उससे और कुछ नहीं हुआ और उसका खुद भी नाश हो गया। इसलिए पुराना ढाँचा वदलने की शक्ति, इच्छा होते हुए भी, आज की सरकार में दीखती नहीं। इसमें उनका दोप नहीं है। शायद मैं भी वहाँ जाता, तो मुझसे भी यह काम नहीं वनता। यह वात अलग है कि कोई मनुष्य वदले, तो थोड़ा-सा वदल होता है। परन्तु सम्भव है कि आज जिस हालत में अपना देश है, उस हालत में सरकार के जरिये यह कार्य होना कठिन है। हाँ, कोई दूसरा मनुष्य होता, तो इतनी तो मर्यादा रखता कि कुमारप्पा के सामने मिल न खोलते हुए, उनसे ३०-४० मील दूरी पर खोलता। मेरा मतलव यह नहीं कि आज जो व्यक्ति राज्य चला रहे हैं, उनका दोप दिखा रहा हूँ। मैं चुनाव के प्रचार के लिए नहीं निकला हूँ, मैं तो एक विचार-प्रचार के लिए निकला हूँ। लेकिन आज की सरकार के जरिये समाज-रचना की वुनियाद वदलने का काम नहीं होगा,ऐसा दीखता है। इसलिए अव जनशक्ति और जन-सम्मति के आधार से ही काम करना होगा। मैंने अभी कहा कि सरकार की पूरी मदद हो, तो भी लोक-क्रान्ति नहीं हो सकती, लोककार्य वन सकता है। हम लोककार्य और लोक-क्रान्ति, दोनों करना चाहते हैं। उसके लिए जन-सम्मति का आधार चाहिए। वह आधार हमें ग्रामदान से मिलता है। उसके वाद ग्राम-राज्य की योजना करना आसान हो जाता है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

विज्ञान के लिए सर्वोदय ही प्राणवायु

सर्वोदय-विचार मनुष्य-शुद्धि की तरफ ध्यान देते हुए साथ-साथ उसकी रचना की ओर भी ध्यान देता है। हृदय में शुद्ध भक्तिभाव का स्नेह भरा हो, समाज-रचना शान्तिमय हो, कुल वातावरण शान्त हो। बाहर शान्तिमय रचना और अन्दर भक्तिमय हृदय, दोनों मिलकर जीवन बनता है। हम समझते हैं कि ऐसा दुहरा प्रयत्न करने के लिए भारत का स्वभाव ज्यादा अनुकूल है। अन्तःशुद्धि के लिए भारत में काफी प्रयत्न किये गये, फिर भी वे कम पड़े। भारत में दोनों प्रयत्न हुए हैं। आन्तरिक शुद्धि पर ज्यादा हुआ है और यह उचित ही है। बाहरी शुद्धि के लिए भी प्रयत्न किये गये हैं, परन्तु वे भी अपूर्ण साबित हुए। विज्ञान के जमाने में जो प्रयोग हुए, उनके मुकाबले में वे टिक नहीं सके। हमें फिर से वह प्रयत्न करना है। हम समझते हैं कि ये दोनों प्रयत्न यूरोप से हमारे देश में ज्यादा हुए हैं। दोहरे प्रयत्न के लिए भारत का वातावरण अब अनुकूल हुआ है। भारत में आत्मज्ञान की परम्परा है ही और विज्ञान का पूरा लाभ सर्वोदय-विचार में हम लेते हैं। सर्वोदय से बढ़कर विज्ञान के लिए अनुकूल कोई विचार नहीं है। क्योंकि सर्वोदय के बिना विज्ञान बढ़ता चला जायेगा, तो व्यक्ति को महत्त्व देता जायगा और उसके जरिये समाज को खत्म करेगा। स्वार्थी लोगों के हाथ में, स्वार्थी गुटों के हाथ में सत्ता रहेगी, यह विज्ञान का परिणाम होगा। विज्ञान का विस्तार पूँजीपतियों ने बहुत किया है, लेकिन उससे लाभ नहीं होता है, उससे झगड़े बढ़ते हैं। यह विज्ञान का दोष नहीं है। विज्ञान चंद लोगों की शक्ति बना रहे, इसमें दोष है।

विज्ञान लोक-जीवन के लिए होना चाहिए। आम लोगों के जीवन के लिए जिस चीज का शोध जरूरी है, उसमें वैज्ञानिक को लगना चाहिए। हिन्दुस्तान में इतना मलेरिया है, कैसे हटेगा? उसमें विज्ञान जोर लगाये। भारतीय लोगों के उत्पादन के औजार बिलकुल कमजोर हैं, इसलिए छोटे-छोटे औजार अच्छे बनाये जायें। आज तो विज्ञान छोटे-छोटे औजारों की तरफ देखता ही नहीं है। बड़ी-बड़ी मशीनें बनती हैं, वे चंद लोगों के हाथों में आती हैं। विज्ञान को छोटे औजारों की ओर ध्यान देना चाहिए और उनमें दुरुस्ती

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

करनी चाहिए। जैसे अम्बर चरखा निकला है, वैसे छोटे-छोटे औजार अपन हाथ से इस्तेमाल कर सकते हैं, लेकिन वे अच्छे हों। इस तरह विज्ञान की दृष्टि जव सर्वोदय के साथ जुड़ जायेगी, तव विज्ञान समर्थ होगा। इसलिए विज्ञान के लिए सर्वोदय ही प्राणवायु है।

लोग पूछते हैं कि 'आपके ग्रामदान में तो विलकुल पुराने औजार चलेंगे'। क्यों, ग्रामदान में पुराने औजार क्यों चलेंगे ? ग्रामदान कोई पुरानी चीज है क्या ? वह तो विलकुल आधुनिक विज्ञान के जमाने में उत्तम अर्थशास्त्र माना जायेगा। ग्रामदान निकलने के वाद विज्ञान का घमण्ड करनेवाले सारे अर्थशास्त्र चुप हो गये। अव वे वावा के खिलाफ कुछ नहीं बोलते। पहले कहते थे कि आध्यात्मिक दृष्टि से और नैतिक दृष्टि से भूदान ठीक है, परन्तु जब से ग्रामदान हाथ में आया, तब से कहते हैं कि हाँ भाई, यह सर्वोत्तम आधुनिकतम अर्थशास्त्र है। उसके साथ नये-नये औजार जुड़ जायेंगे, इसलिए ग्राम-राज्य के गाँव पुराने जमानें के गाँव नहीं होंगे। पुराने जमाने का आध्यात्मिक ज्ञान उसके साथ होगा और आज के जमाने का विज्ञान उसके साथ होगा। हमारा हृदय प्राचीन संस्कृति का वना हुआ रहेगा और हमारी वुद्धि आधुनिक विज्ञान से भरी हुई रहेगी। इस तरह दोनों का योग करके सर्वोदय-योजना ग्रामदान के गाँव में चलेगी। हम आशा करते हैं कि आज का गाँव भी ऐसा गाँव वनेगा।

कंदप्पकोंडनवलसु (मदुरा)

१४-११-'५६

ज्ञान-कला और ग्राम-संस्था : ५ :

प्राचीन काल में ज्ञान-कला और ग्राम-संस्था

सारे अक्षर एक अकार में हैं। परमेश्वर इसके मूल में भी है। इसलिए परमेश्वर को अकार की संज्ञा दी गयी। यह भी दिख रहा है कि वह समाज शिक्षित था, जिसके सामने यह उपमा दी गयी। उपमा वही दी जाती है, जिसका जीवन

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

के साथ सम्बन्ध हो, जो बात लोगों के मन में बैठ गयी हो। ये सारे आत्मा जितनी भिन्न देहों में दीख पड़ते हैं, वे ताने में बाना और बाने में ताना की तरह एक-दूसरे में ओत-प्रोत हैं। जिस समाज में घर-घर बुनने का काम चलता हो, उसी समाज में यह उपमा दी जायगी। यह बुनने की उपमा, अक्षरों की उपमा, खेती की उपमा प्राचीन ग्रंथों में दिखाई पड़ती है। उसका अर्थ स्पष्ट है कि जितना व्यापक प्रचार खेती और बुनाई के काम का था, उतना ही व्यापक प्रचार विद्या का था।

ऋग्वेद में भी वर्णन आता है कि ज्ञानी किस तरह बनता है। जो बड़ी फजर उठकर गुरु के पास बैठकर उनके शिक्षण के अनुसार पठन करेगा, उसको ज्ञान प्राप्त होगा; सोनेवालों को नहीं।

अनुब्रुवाणां अध्येति न स्वपन,
यो जागार तमृच कामयन्ते;
यो जागाव तमु सामानि यन्ति,
यो जागार तमयं सोन आह तवाहमस्मि सख्येन्योकाः ॥

जो जागेगा, उसके पीछे-पीछे वेद जायेगा, सामवेद भी जायेगा। उसको अध्ययन भी नहीं करना पड़ेगा। वेद ही उसके पास आयेगा। लेकिन उसको जागना पड़ेगा।

यह ऐसा देश है, जहाँ दस हजार साल से ज्ञान की परम्परा चली आई है, इस देश ने चीन में बुद्ध के जरिये ज्ञान पहुँचाया है। चीन और जापान में यहीं से ज्ञान का प्रकाश गया है। वही भारत आज अशिक्षित है!

यह भारत की बहुत बड़ी विशेषता थी कि यहाँ गाँव-गाँव में ग्राम-संस्था थी। हमारी वह ग्राम-संस्था आज टूट गयी है। उसका भी उल्लेख ऋग्वेद में आता है। भगवान् से प्रार्थना करते हुए ऋषि कहता है कि "यथा शमसद्-द्विपदे चतुष्पदे, विश्वं पुष्टम् ग्रामे अस्मिनमातुरम्।" हमारे गाँव में सभी निरोग हों। जैसे गाय शाम को गाँव में वापस आती है, वैसे ही हे भगवन्, हम तुम्हारी शरण में आते हैं। इस तरह सारी कल्पना ऋग्वेद में है। गाँव की आवश्यकता की चीजें गाँव में ही पैदा होती थीं। व्यक्तिगत मालकियत

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

नहीं थी। सब मिलकर काम करते थे। बढ़ई को मजदूरी नहीं मिलती थी। हर घर से उसको अनाज का थोड़ा-थोड़ा हिस्सा मिलता था। किसी घर में ज्यादा काम हो या किसी घर में कम काम हो, तो भी उसको निश्चित हिस्सा दिया ही जाता था। इसी तरह से वैद्य, शिक्षक, और दूसरे कारीगरों की योजना थी। याने आज की भाषा में बोलना हो, तो कहेंगे कि वह एक प्रकार की सेवा मानी जाती थी। तमिलनाड से काश्मीर तक हमारे गाँवों की यही योजना थी। वह सारी ग्राम-संस्था टूट गयी, क्योंकि गाँवों के धंधे खतम कर दिये गये। वे ऐसे ही खतम नहीं हुए, खतम करने की योजना से वे खतम किये गयें। अभी सेलम का जिला-गजट पढ़ा। उसमें लिखा था कि वहाँ के बुनकरों का धंधा धीरे-धीरे टूटता गया। संस्कृत भाषा में सेलम का अर्थ ही कपड़ा होता है। कुचेलन (सुदामा) याने खराब कपड़ेवाला। सेलम जिले में करघों को बिजली से चलाने की बात अभी चल रही थी। याने हजारों साल से जो हाथ की कला चली आ रही है, उसको तोड़ने की बात। जिस विद्या को सीखने के लिए राज्य को कुछ खर्च नहीं करना पड़ा, उस विद्या को खतम करने के लिए पैसे खर्च किये जा रहे हैं।

जीवन की समस्या

आज देहात के धंधे टूट गये हैं। जमीन की मालकियत भी धीरे-धीरे उनके हाथ से चंद लोगों के हाथ में चली गयी है। इसके साथ हर गाँव में एक-एक शाला थी, वह भी टूट गयी है। डा० एनीबेसण्ट ने एक किताब में लिखा है कि ईस्ट इंडिया कम्पनी के जमाने में बंगाल में हर ४०० जन-संख्या के पीछे एक स्कूल था। मतलब हर गाँव में शिक्षा की योजना ग्राम-सभा की तरफ से थी। उसमें सभी लोग थोड़ा-सा पढ़ लेते थे। आज जैसी आठ-दस साल की पढ़ाई नहीं होती थी। यह ठीक है, लेकिन पढ़ना-लिखना सीख लिया, चंद अच्छी-अच्छी कविताएँ कंठ कर लीं, तैरना, पेड़ पर चढ़ना, घोड़े पर सवारी करना—यह सब उस जमाने का ज्ञान था। बाकी विद्या काम करते-करते हासिल की जाती थी। गाँव में धंधे मौजूद थे, इसलिए उन-उन धंधों की विद्या

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

तो काम करते-करते ही आ जाती थी। यह पाँच हजार साल पहले की बात है। मैं आपको उपनिषद के जमाने में ले जा रहा हूँ। राजा के राज्य का वर्णन है। "नमे स्तेनो जनपदे न मद्यपः न अनाहितानिः न अविद्वान् न स्वैरी, स्वैरिणी कुतः।" मेरे राज्य में न चोर हैं, न कंजूस हैं, न कोई शराब पीनेवाला है, भगवान् की पूजा न करता हो, ऐसा एक भी शख्स नहीं है। पढ़ा-लिखा न हो, ऐसा एक भी मनुष्य नहीं है। पुरुष दुराचारी नहीं हैं, तो स्त्रियाँ दुराचारिणी कैसे होंगी ? दुनिया के सारे दुराचार की जिम्मेवारी पुरुष पर डाली। राज्य के संबंध में लिखा है कि मेरे राज्य में कोई अपढ़ नहीं है। अगर यह माना जाय कि यह व्यर्थ का गौरव-गान है, तो बात अलग है। चाहे वह व्यर्थ का ही गौरव-गान हो, फिर भी वह आदर्श राज्य था, ऐसा तो मानना ही होगा। इस तरह जहाँ सभी लोगों को विद्या हासिल थी, उस देश में चंद लोगों को ऊँची शिक्षा और बाकी बहुत ज्यादा लोगों को बिलकुल शिक्षा नहीं, यह हालत हो गयी। यही पूँजीवादी समाज-रचना है। चंद लोग इतने महा विद्वान् कि वे तमिल भाषा में बोल ही नहीं सकते, अंग्रेजी में ही बोल सकते हैं और दूसरे लोग ऐसे हैं कि तमिल भी पूरी नहीं पढ़ सकते। खेतों में जो तमिल चलती वह चलेगी। एक बाजू यह तमिल और दूसरे बाजू अंग्रेजी। एक ओर विद्या के पूँजीपति और दूसरे ओर बिलकुल विद्याहीन। जैसे एक बाजू बड़े-बड़े संपत्तिधारी और दूसरी बाजू कुछ भी खाना नहीं पानेवाले लोग। इस तरह समाज के दो टुकड़े हो गये। हिन्दुस्तान का इससे बहुत बड़ा नुकसान हुआ। इसे दुरुस्त करने का काम करना होगा। यह पहचानना चाहिए और जीवन की समस्या क्या है, इसे समझना चाहिए। टूटी हुई ग्राम-संस्था को खड़ी करने की प्रतिज्ञा करनी चाहिए। आप लोग सोचेंगे, तो ध्यान में आयेगा कि भूदान, ग्रामदान, नयी तालीम ये सारी चीजें गाँव को खड़ी कर सकती हैं। इसी को 'सर्वोदय' कहते हैं।

वेदारण्यम (तंजौर)
३-२-'५७

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

मानव की मूलभूत आकांक्षा

वचपन के वाद जवानी, जवानी के वाद बुढ़ापा और फिर मृत्यु ! एक पीढ़ी के वाद दूसरी और दूसरी के वाद तीसरी ! इस तरह मानव समाज का प्रवाह सतत प्रवाहित हो रहा है। दुनिया में मानव-समाज ही नहीं है। चीटियों, मक्खियों, जानवरों और परिन्दों का भी समाज है। कुछ प्राणी मिलजुलकर काम करते हुए दिखाई देते हैं, तो कुछ अलग-अलग। चीटियाँ और मधु-मक्खियाँ मिलजुलकर काम करती हुई दिखाई देती हैं। मधु-मक्खियाँ अपना घर वहुत सुन्दर वनाती हैं। उनमें एक रानी मक्खी होती है। उसके पीछे वाकी मक्खियाँ चलती हैं। उनका एक अपना समाज होता है और अपनी समाज-व्यवस्था होती है। मनुष्यों का भी एक ऐसा ही समाज वना है। परन्तु मनुष्य अपने को अन्य सभी प्राणियों से दूसरी श्रेणी में रखता है। किसी मनुष्य का घोड़ा वहुत सुख में रहता है और दूसरा कोई अन्य मनुष्य अत्यन्त दुखी है। क्या वह दुखी मनुष्य सुखी घोड़ा होना पसन्द करेगा ? उसके सामने अगर यही विचार रखा जाय कि तू अत्यन्त दुखी मनुष्य रहना पसन्द करेगा या सुखी-संतुष्ट परिन्दा या जानवर होना पसन्द करेगा, तो वह दुखी मनुष्य ही रहना पसन्द करेगा। अपनी तुलना ही वह दूसरे प्राणी से नहीं करता। अपने को वह विल्कुल अलग श्रेणी में रखता है। अगर उससे पूछा जाय कि तेरी क्या श्रेणी है, दूसरे प्राणियों से तू अपने को क्यों भिन्न मानता है, दूसरे प्राणियों में भी तेरे जैसे ही जन्म, मृत्यु, खान, पान आदि होते हैं, तो तुझमें और अन्य प्राणियों में क्या फर्क रहा, तो हर कोई शायद इसका जवाब न दे सकेगा। यदि शब्दों से इसका जवाव न दे सके, तो भी अन्तर में उसका जवाब उसके पास है। मानव में एक मूलभूत आकांक्षा होती है। सिर्फ खाने-पीने से ही उसको जीवन में सन्तोष नहीं मिलता। यह वात सही है कि उसको भी खाना-पीना चाहिए। इसके विना उसकी देह नहीं टिक सकेगी। परन्तु खाना-पीना मिल गया तो मनुष्य सन्तुष्ट हो जाता है, ऐसा नहीं है। उसके वाल-वच्चे भी हैं।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

लेकिन उतने से भी उसको सन्तोष नहीं। उसका सन्तोष और किसी चीज में है।

श्रीमानों के घर में पचासों प्रकार का भोजन मौजूद है। फिर भी वे कहते हैं कि आज हम नहीं खायेंगे। भूख नहीं है, इसलिए नहीं बल्कि वे कहते हैं कि आज शिवरात्रि है, इसलिए न खाना अच्छा है। हम नहीं समझते कि कोई भी प्राणी इस तरह घर में खाना मौजूद हो और भूख लगी हो, तो भी शिव-रात्रि के खयाल से खाना छोड़ता होगा। हाँ, शेरों की शिवरात्रि उस दिन होती होगी, जिस दिन उसको शिकार नहीं मिलता होगा। मनुष्यों में कोई शिवरात्रि करेगा, कुछ लोग रोजा रखेंगे। इस तरह देह को नहीं खिलानेवाला यह एक अजीब प्राणी है। कुछ लोग तो लगातार उपवास करते दिखाई पड़ते हैं। यह सारा इसलिए करते हैं कि वे अपने को देह से अलग देखना चाहते हैं। यह शरीर एक चोला है, हम इससे भिन्न हैं, ऐसा अनुभव मनुष्य लेना चाहता है। मैंने यह ऊपर का कपड़ा पहना है, लेकिन घर पर जाते ही उसको हम फेंक देंगे। लेकिन वड़ी उमर में हम बिल्कुल नंगे नहीं होते। हमको याद है कि वचपन में जब हमको धोती पहनने को कहा जाता था, तब हमने पहन तो ली थी, लेकिन घर जाते ही सारे कपड़े निकाल देने की इच्छा होती थी। सिर्फ लंगोटी लगा कर घर में रहते थे। आनन्द मिलता था। यह शरीर भी एक चोला है, और हमने यह कपड़े पहन लिए हैं। परन्तु यह हमारा रूप नहीं है। हमारा रूप अलग है। इस देह के सुख-दुख से हमारा सुख-दुख अलग है। हर कोई अपने ढंग से यह कोशिश करता है कि इस देह से वह अपने को अलग अनुभव करे। जिस क्षण वह अपने को देह से अलग पाता है, उस क्षण वह आत्म-सन्तोष और आत्म-समाधान का अनुभव करता है। कोई भोजन करने बैठा है, सामने थाली परोसी है, पेट में भूख भी है, लेकिन इतने में कोई भूखा अतिथि आ गया तो परोसी हुई थाली अतिथि को दे देने और स्वयं फाका करने में बड़ा आनन्द होता है। लेकिन उस आनन्द से भी मूल्यवान आनन्द वह है जो उसे खुद फाका करके अतिथि को खिलाने से मिलता है।

सेवा का आनन्द

इस देह से जो चीज अलग है, वह हमारा रूप है। लोग धर्म के लिए

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

देश के लिए, खुशी से फाँसी पर चढ़ते हैं। उनको उसी में आनन्द मिलता है कि इस देह से भिन्न अपना अनुभव कर लिया। यह समझ लीजिए कि इस तरह मनुष्य सोचता नहीं है। परन्तु विना सोचे ऐसा होता रहता है। जितने अंश में इस देह को भूल जाते हैं, उतने अंश में हमको आनन्द मिलता है। आपको खिलाने के लिए हमने अपनी देह की परवाह नहीं की, तो हमको बड़ा आनन्द मिल गया। माँ को वच्चे की सेवा में आनन्द मिलता है। वह वहुत तकलीफ उठाती है। रात-रात भर जागती है। उसे उसमें आनन्द मिलता है, क्योंकि वच्चे की सेवा में वह अपने को भूल जाती है।

हमारे साथ लोग पैदल चलते हैं। ३–४ मील भी नहीं चल सकने वाले १०–१२ मील यात्रा करते हैं। कहते हैं, कोई तकलीफ ही नहीं हुई, क्योंकि वावा के साथ ऐसी वातें चलीं कि वहुत आनन्द हुआ। याने वे अपनी देह को भूल गये। राह चलते समय यदि साथ में कोई साथी रहता है, तो चलने में आनन्द आता है, नहीं तो तकलीफ होती है, क्योंकि अकेले में देह याद आती है। कहते हैं कि सत्पुरुष और सन्त पुरुषों को बड़ा आनन्द होता है। क्योंकि वे अपनी देह को ही भूल गये होते हैं। वावा का व्याख्यान आपको बड़ा अच्छा लग रहा है, आप खुश हैं, समय इतनी जल्दी व्यतीत हो गया कि पता नहीं चला, क्योंकि आप अपनी देह को भूल गये थे। व्याख्यान सुनने के कारण, व्याख्यान देने के कारण, चाहे लड़के की सेवा करने के कारण, देश के लिए चिन्तन करने के कारण, चाहे वेदाध्ययन में, चाहे गाढ़ निद्रा लेने के कारण, जिस किसी भी कारण से आप अपनी देह को भूल जाओगे तो आनन्द होगा। यह मनुष्य का स्वभाव है। इसलिए अपनी देह की चिन्ता न करते हुए सारे समाज की चिन्ता करने की आदत पड़ जाय, तो मनुष्य को चौवीसों घंटे सुख ही सुख है। आप कहेंगे कि फिर हमारे शरीर की चिन्ता कौन करेगा? इतना याद रखो कि तुम अपने शरीर की चिन्ता शुरू करोगे, तो दुखी होगे। लेकिन अपने शरीर की चिन्ता कम करोगे, तो दुखी नहीं होगे। अपनी चिन्ता में यदि लगे तो फौरन दुख शुरू हो जायगा। जैसे वच्चे शरीर को खिलाने-पिलाने की भी चिन्ता नहीं करते हैं, क्योंकि उनके शरीर की चिन्ता करनेवाली माँ है, इसलिए तुम दूसरे की चिन्ता करो और दूसरे तुम्हारी चिन्ता करें। उसीमें दोनों को

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

आनन्द हैं। इस तरह दोनों के खाने-पीने का इन्तजाम हो जायेगा। दोनों के सुखी होने की युक्ति सध जायगी। अगर हम अपनी चिन्ता करते हैं, तो दोनों दुखी होते हैं। लेकिन अगर एक दूसरे की चिन्ता करते हैं, तो दोनों सुखी होते हैं। तो हमें समाज सुखी बनने की युक्ति मिल गयी।

जिस घर में शादी होगी उस घर की एक कौड़ी भी खर्च नहीं होगी। सारा गाँव—थोड़ा-थोड़ा अपना हिस्सा दे देगा। जब दूसरे के घर में शादी होगी तब यह भी अपना हिस्सा देगा। एक घर में शादी होगी तो गाँव के हर एक घर में आनंद मनाया जायेगा।

आज तो किसान को रात भर जागना पड़ता है, क्योंकि उसको डर है कि पड़ोसी के बैल खेत चर न जाँय। पड़ोसी भी उसी चिंता में जागता रहता है। सारा गाँव मिलकर उसका इंतजाम करे। किसी एक मनुष्य को जागने के लिए कहा जाय, तो सारा गाँव शांति से सो सकेगा। परंतु आज तो एक दूसरे में विश्वास ही नहीं है। अपनी रोज की आवश्यक चीजें खुद बना लें, एक दूसरे की चिंता करें, इसका नाम है ग्रामदान। सुखी होने का रास्ता ही यही है कि हम दूसरे की चिंता करें।

सब लोग कहते हैं कि बाबा बड़ा त्यागी है। अरे, बाबा तो बड़ा भोगी है। बाबा सोता है, तो कोई आसपास शब्द नहीं करते हैं: अरे, बाबा सो गया है, बोलना नहीं चाहिए। बाबा के लिए खाने पीने की योजना दूसरे लोग ही करते हैं। बाबा को रहने के लिए रोज नये घर आप ही देते हैं। बड़े-बड़े श्रीमानों को बहुत हुआ तो १०-१५ बंगलें होंगे। लेकिन बाबा को तो ३६५ दिन के लिए ३६५ नये घर हैं। रोज नये-नये घर। सुखी होने का यही रास्ता है। तुलसीदास ने लिखा है, 'परहित बस जिन्हके मनमाँहीं, तिन्ह कहँ जग दुर्लभ कछु नाहीं।' जिसके मन में परहित ही की भावना है, उसके लिए इस दुनिया में कुछ भी दुर्लभ नहीं है। वशिष्ठ के पास कामधेनु थी। वह अपने घर में कुछ भी चीज नहीं रखता था। जब कभी उसे किसी चीज की जरूरत होती थी, कामधेनु के पास जाता था। मुझे शक्कर चाहिए रे—"लो,

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

खाना शुरू करो।" शक्कर मिल जाती थी। "मुझे सोना है रे," तुरन्त सोने के लिए पलंग हाजिर। आज यह कामधेनु है–"परहितबुद्धि"। यह कामधेनु अगर आपको मिल जाय, तो सभी चीजें आवश्यकतानुसार मिल जायँगी।

नेरकुप्पै (रामनाड)
१८-२-'५७

गाँव-भलाई की तीन बातें : ७ :

सत्ता की राजनीति

स्वराज्य के पहले जेल में जाना पड़ता था, लाठी खानी पड़ती थी, त्याग करना पड़ता था। उन दिनों निष्काम, निःस्वार्थ सेवा की आदत लोगों को पड़ी थी। पर स्वराज्य-प्राप्ति के बाद सत्ता की राजनीति चली और भिन्न-भिन्न राजनैतिक पक्षों में सत्ता की राजनीति ही रही, सेवा कम रही। वैसे सत्ता किसलिए चाहते हैं? तो कहते हैं, सेवा के लिए, नाम तो सेवा का लेते हैं, परन्तु सत्ता चाहते हैं। चुनाव में एक स्थान के लिए आठ-दस उम्मीदवार खड़े होते हैं। सचमुच उनमें सेवा की भावना होती और सेवा में ऐसे एक के बदले दस लोग आये होते, तो देश सचमुच उन्नत होता। सेवा के कार्य-क्षेत्र हिन्दुस्तान में बहुत से पड़े हैं। महा-रोगियों की सेवा करनी है, टी. बी. वालों की सेवा करनी है, हरिजनों की सेवा करनी है। वे बेचारे कितने दुःखी हैं। भूमिहीनों की सेवा करनी है। उनमें भी असंख्य दुःख भरे पड़े हैं। उधर बंगाल और पंजाब में शरणार्थियों का मसला है, बहुत बड़ा सेवा का काम पड़ा है। पर उसके लिए कोई नहीं मिलता। असेम्बली के लिए दस खड़े होते हैं। वहाँ जाकर सेवा करेंगे, यह नाम तो लेते हैं।

नाम लेते हैं, यह भी ठीक है, क्योंकि आखिर सेवा करनी पड़ेगी, नहीं तो उस सेवा के क्षेत्र से भी हटना होगा। परन्तु यह सब सेवा के लिए नहीं, सत्ता के लिए करते हैं। उनमें परस्पर द्वेष होता है। चुनाव में हजारों व्याख्यान गाँव-गाँव होते हैं। उनमें क्या चलता है? एक दूसरे के बारे में द्वेष फैलाते

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

हैं। एक-दूसरे को गाली देते हैं। अपनी स्तुति और दूसरों की निन्दा, यही चलता है। अगर यह सारा निष्काम सेवा के लिए होता, तो ये गाली-गलौज, द्वेष किसलिए ? तो यह कोई शुद्ध सेवा का लक्षण नहीं है। परन्तु परमेश्वर ने यह भूदान ऐसी चीज पैदा की है कि उसके कारण निष्काम, निःस्वार्थ सेवक पैदा हुए हैं। देश का तभी उद्धार होगा, जब गाँव की, देश की, समाज की, निष्काम सेवा करनेवाले लोग सर्वत्र निकलेंगे।

खाने के लिए सेवा नहीं, सेवा के लिए ही खाना

यह सारा जो ग्रामदान-आन्दोलन चला है, वह क्या है ? लोगों को अपना जीवन निष्काम बनाने की यह प्रेरणा है। आज हर किसान काम तो करता है, पर किसलिए करता है ? तो वह कहता है पेट के लिए। ग्रामदान वाले गाँव में भी किसान काम करेगा। उससे पूछा जायेगा कि तू किसलिए काम करता है?, तो वह यह नहीं कहेगा कि पेट के लिये काम कर रहा हूँ। वह कहेगा कि गाँव के लिए काम कर रहा हूँ। पेट के लिए खाना तो चाहिए। घोड़े से काम लेते हैं तो उसको भी खाना खिलाना पड़ता है, ताकि वह काम कर सके। वैसे यह शरीर घोड़ा है, काम के लिए है। वह काम के लिए खायेगा। बाबा गाँव-गाँव घूमता है। लोगों को विचार समझाता है, तो उसने अपना खाना छोड़ा है क्या ? वह तो रोज खाता है। बाबा से पूछा जाय कि तू किसलिए घूमता है, तो बाबा यह नहीं कहेगा कि वह खाना के लिए घूम रहा है, यद्यपि वह रोज खाता है, और गाँव के लोग खिलाते हैं। आस-पास के लोग उसकी चिन्ता करते हैं। पर बाबा खाने के लिए नहीं घूमता, घूमने के लिए खाता है। आज किसान की क्या हालत है? खाने के लिए काम करता है। लेकिन ग्रामदानी गाँव में किसान काम के लिए खायेगा, सेवा के लिए खायेगा, उद्देश्य होगा कि हमें सेवा करनी है। तो सेवा के लिए ही वह खायेगा। देखो कितना फर्क पड़ता है दोनों में। खाने के लिए काम करता है और सेवा के लिए खाता है। दोनों शख्स खाते हैं, दोनों सेवा चाहते हैं। एक खाने के लिए सेवा करता है, दूसरा सेवा के लिए खाता है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

गाँव के टुकड़े न हों

तो ग्रामदानी गाँवों में और दूसरे गाँवो में यही फर्क पड़ेगा। कुल जमीन गांव की; सब मिलकर गाँव की सेवा करेंगे। किसी की भी मदद में जायेंगे। हम सारे भाई-भाई हैं। परमेश्वर के सामने सब समान है। हमारे गाँव के टुकड़े नहीं होने चाहिए। पाँचो पाडंवों के समान सारा गाँव रहे। पाँडव जंगल में घूमते थे, लेकिन शत्रु को भारी होते थे, क्योंकि वे एक हुए थे। उनके बीच मतभेद नहीं होता था, यह बात नहीं। हर एक के विचार हर समय एक नहीं होते थे। फिर भी वे सब अपने बड़े भाई को मानते थे। उनकी हार कभी नहीं हुई। इसलिए गाँव के लोगों को पाँडवों की तरह एक होकर रहना है।

अभी दो बातें हमने आप के सामने रक्खीं। एक सेवा करने के लिए सत्ता रहे। कुल गाँव की सेवा हमें करनी है। ग्रामदान बनेगा, तो सब सेवक बन सकते हैं। सबकी भावना होगी कि गाँव की सेवा करनी है। निष्काम सेवा की सेना बन जायगी। दूसरी बात यह है कि गाँव के टुकड़े नहीं होने चाहिए। ये दो बातें होंगी तो गाँव की उन्नति होगी। इन दो बातों पर आप को सोचना चाहिए।

भाइयों, आज के जमाने को पहचान कर उस पर सोचना चाहिए। पहले पुराने जमाने में ५० मील पर क्या हो रहा है, इसका पता नहीं चलता था। आज सारी दुनिया का सम्बन्ध नजदीक आ गया है, और फैल गया है। विज्ञान के कारण सारी दुनियाँ नजदीक आ गयी है। पुरानी जिन्दगी की जो पद्धति थी, वह आज नहीं चलेगी। पुराने जमाने में अपने-अपने परिवार अलग-अलग रखते थे। पर आज की हालत में जो समाज अलग रहेगा, वह टिक नहीं सकेगा। जहाँ छोटे-छोटे राष्ट्र नहीं टिकते, वहाँ छोटे-छोटे समाज कैसे टिक सकेंगे? आज के जमाने की माँग है कि ग्रामदान होना चाहिए।

केवल स्वच्छ, निर्मल कल्याण की बात आपके सामने हमने रक्खी है। इसमें हमारा किसी प्रकार का स्वार्थ नहीं है। न हमारा कोई पक्ष है, न हम वोट माँगने आये हैं। हम यह भी नहीं कहते कि हमको चुनो। हमको भगवान ने चुना है। उसने कहा कि जाओ, घूमो गाँव-गाँव। तुम्हारे खाने-पीने की चिन्ता मैं करूँगा। इस वास्ते हम आप की उन्नति की, कल्याण की बातें

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

कहने आये हैं। इसमें हमें कोई शक नहीं कि हिन्दुस्तान में ग्रामदान होकर ही रहेगा और इसमें भी शक नहीं कि हिन्दुस्तान में ऐसा कोई पक्ष नहीं है, जो ग्रामदान पसंद नहीं करता। इससे किसी का बुद्धि-भेद नहीं है। आप को जो भला लगे, वह आप कर सकते हैं। जो शुद्ध विचार था, वह हमने आप के सामने रख दिया है। हमने जो कहा, वह थोड़े में फिर से बता देते हैं—(१) निष्काम सेवा अवश्य होनी चाहिए, (२) किसी कारण भी गाँव के टुकड़े नहीं होने चाहिए और (३) जमीन पर किसी की व्यक्तिगत मालकियत नहीं होनी चाहिए। इन तीन बातों में गाँव का भला है। ऐसा हमारा विश्वास है।

अप्पाकुराई (मदुरा)
५-३-'५७

सर्वोदय के चार सिद्धान्त

किसी के मन में यह भ्रम नहीं होना चाहिए कि सर्वोदय में मनुष्यों को ज्यादा काम करना पड़ेगा। औजारों में जितने सुधार हो सकते हैं, उतने करने के लिए सर्वोदय राजी है। उसे इतना ही कहना है कि वे साधन किसान के हाथ में होने चाहिए। अच्छे साधन देने के निमित्त से किसान के हाथ से साधन छीनना और दूसरों के हाथ में देना गलत है। आप को रास्ते बनाने हैं, परन्तु एक दफा रास्ते बना लिए, तो ५–७ साल में पूर हिन्दुस्तान में रास्ते बन जायेंगे। क्या वह कोई उत्पादक काम है ? जो उत्पादक काम होता है, वह कायम रहने के लिए मनुष्य के पास रहता है। इसलिए लोगों के हाथ में धंधे होने चाहिए। गाँव में जो कच्चा माल होता है, उसका पक्का माल गाँव में ही बनाना लोगों के लिए सबसे बड़ा उद्योग (इम्पलायमेन्ट) है। उसके बदले गाँव के कच्चे माल का पक्का माल शहर के कारखाने में बनायेंगे, तो गाँववालों के के पास धंधे नहीं रहेंगे। गाँव के बच्चों को मक्खन नहीं मिलेगा। परिणाम यह होगा कि वे बच्चे कमजोर बनेंगे। आगे की आप की खेती भी कमजोर हो जायगी, जिससे सारा देश कमजोर बनेगा। इस वास्ते हमें इसमें सजग रहना चाहिए। सर्वोदय विचार यह मानता है कि गाँव के औजारों में सुधार हो,

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

पुराने औजार सतत चलते रहें, यह ठीक नहीं है। उनमें सुधार होना जरूरी है, पर गाँव में ही हो। गाँव के कच्चे माल का पक्का माल गाँव में ही वने और गाँववाले जो चीजें इस्तेमाल करते हैं, उतनी करके वाकी की वची हुई चीजें ही वेची जाँय। गाँव में दूध, मक्खन, फल, तरकारी, आदि खूब चाहिए। गाँव में दो साल के लिए पर्य्याप्त अनाज हो। गाव के सब उद्योग गाँव में होने चाहिए। यह सर्वोदय का प्रथम विचार है।

सर्वोदय का दूसरा विचार यह है कि गाँव के लोगों को भूमि मिलनी चाहिए, नहीं तो गाँव में ही दो वर्ग हो जायेंगे। फिर ग्रामों में शहरों के खिलाफ खड़े होने की शक्ति नहीं रहेगी, आपस में लड़ने में ही सारी शक्ति खतम हो जायगी। शहरों का गाँवों पर हमला होगा जिसका प्रतिकार करना गाँवों के लिए असम्भव होगा। क्योंकि गाँव में प्रेम नहीं रहेगा, झगड़ रहेंगे, जिससे गाँव वालों का भला नहीं होगा। इसलिए जमीन पर सबका अधिकार मान कर सवको जमीन देनी चाहिए।

सर्वोदय का तीसरा सिद्धान्त यह है कि गाँव में हर बच्चे को तालीम देनी चाहिए। वह तालीम ऐसी नहीं होगी कि जिसमें ज्ञान और कर्म अलग-अलग हों। आज तो बच्चे को पढ़ना-लिखना आ गया तो काम के प्रति उसमें नफरत पैदा होती है। इसमें ग्राम के लिए भी खतरा है और देश के लिए भी। इसलिए गाँव में पराक्रमी तालीम मिलनी चाहिए, ऐसी तालीम कि जिसमें विद्या के साथ-साथ उत्पादन बढ़ा सकें। फिर देश के लोग पराक्रमी और ज्ञान-सम्पन्न होंगें।

सर्वोदय का चौथा सिद्धान्त यह है कि गाँव में किसी प्रकार का जातिभेद का ख्याल नहीं होना चाहिए। ये जातियाँ इसलिए बनीं कि काम बँटे हुए थे, उसमें किसी प्रकार का ऊँच नीच भेद नहीं होना चाहिए। प्रेम में कमी न होनी चाहिए, किसी भी सार्वजनिक काम में जाति का ख्याल नहीं होना चाहिए, सब लोग परमेश्वर की सन्तान हैं, इसका सतत भान होना चाहिए।

पीलमेडु (कोइम्बतूर)
१-१०-'५७

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सच्चा ईश्वर-भक्त

धूप सबके लिए है, इसलिए तो मैंने आप सब लोगों को धूप में बुलाया। धूप से डरोगे तो खेती कैसे करोगे ? अभी धूप ज्यादा कहाँ है, धूप ज्यादा तो बारह बजे के बाद होती है, इस प्रदेश में तो धूप कम है। धूप का मजा तो उत्तरभारत में पलामू जिला या नागपुर में है। यहाँ तो मामूली धूप है। इतनी धूप भी नहीं मिलेगी, तो बच्चे नाजुक और कमजोर बन जायेंगे। वे खेती नहीं कर सकेंगे। हाथ में खेती पकड़े रखेंगे और काश्त करने की ताकत नहीं होगी, तो हर गाँव दुःखी हो जायगा। धूप बड़ा भारी खाना है। धूप नहीं मिली तो फसल नहीं बढ़ेगी, पेड़ नहीं बढ़ेंगे, हड्डी मजबूत नहीं होगी। इस लिए धूप खूब खानी चाहिए। लेकिन वह मुँह से नहीं खायी जाती, हाथ-पाँव-छाती से-बदन से खायी जाती है। अगर खूब धूप खाओगे तो, शरीर से गंगा, कृष्णा, कावेरी आदि बड़ी-बड़ी नदियाँ बहेंगी। जहाँ पाँच नदी बहती हैं वह बड़ा पवित्र स्थान है। जो लोग धूप में मेहनत करते हैं, जिनके शरीर से, जटा से नदियाँ बहती हैं, वह "शिवमेरुमाण" है। शिव भगवान् के क्या लक्षण हैं ? उनकी जटा से गंगा नदी बहती है, घर के अन्दर बैठ रहेंगे, तो जटा में से नदी बहेगी ? इसलिए जो खूब पसीना बहाकर रोटी खायगा, वह सच्चा शिवभक्त है। बालों में से पानी गिरना चाहिये, तेल नहीं। पानी-अन्दरवाला पसीना निकलना चाहिए। हरएक को खेत में काम करना चाहिए। लेकिन बड़े लोग शिवमेरुमाण के शिवमेरुमाण हैं। घर में रहते हैं, पेट में भूख नहीं लगती है, पसीना बहता नहीं है, क्योंकि गंगा-कावेरी सूख गयी हैं। अगर नदियाँ सूख जायेंगी तो फसल बढ़गी ? घर में बैठे रहोगे, तो नदी सूख जायेगी। शरीर में से अपर-भवानी, लोअर-भवानी और भवानी की केनाल्स बहेंगी, तब तो फसल आयेगी। इसलिए किसी के पास ज्यादा जमीन नहीं होनी चाहिए, ताकि वे घर में बैठे रहें। भारती ने गाया है कि "कापी निलम् वेणुम्"

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

यानी सवा एकड़ से ज्यादा जमीन नहीं होनी चाहिए। लेकिन ज्यादा जमीन होती है, तो वे घर में बैठे रहेंगे, नौकरों से खेती करायेंगे। परन्तु बड़े जमीन्दारों को भी धूप में आना पड़ता है, क्योंकि मजदूरों की देखरेख करनी पड़ती है। अगर वे देखरेख नहीं करेंगे तो मालिकों की भी कावेरी सूख जायेगी और मजदूरों की भी सूख जायेगी। क्योंकि मालिक घर में बैठे रहेंगे, तो मजदूर काम नहीं करेंगे, जैसे बैल के पीछे कोई देखरेख करेगा तभी वह काम करेगा, वैसे ही मालिक ने मजदूरों को बैल वना दिया और खुद हाथी बन गये। फिर खेती में फसल भी नहीं आती है। इसलिए हरएक के पास जमीन होगी, तो हरएक व्यक्ति उस पर मेहनत करेगा, जमीन में खूब पसीना वहायेगा और दिन भर काम करेगा, तो रात में सिनेमा देखने भी नहीं जायगा। वह यही देखेगा कि विस्तर कहाँ है। विस्तर मिलते ही वह सो जायेगा और परलोक में चला जायेगा। सुवह पाँच वजे व्रह्मलोक में आजायेगा और तैयारी करके खेत में जायेगा। जव गाँव में प्रेम रहेगा, तो झगड़ा नहीं रहेगा, बीमारी नहीं रहेगी। वीमारी गयी तो डाक्टर भी गये, और झगड़े गये तो वकील भी गये। लोगों के पैसे चूसनेवाले वेकारों को हमने ही वढ़ाया और हम खुद वेकार वने। परिणाम स्वरूप हिन्दुस्तान में रोग, झगड़े भी खूब वढ़ गये और फसल कम हो गयी। उसका उपाय पहचानो। यह सारा (तीरुवुरम् है) भगवान् का रूप है। इसलिए हरएक की पूरी पूजा होनी चाहिए। जो सामने बैंठे हैं, वही चिदम्बरम् हैं, वे कोविल (मंदिर) हैं। हरएक मंदिर में पूजा होनी चाहिए। जो चैतन्य है, वही चिदम्बरम् है, पत्थर चिदम्वरम् नहीं है, वह अचित् है। जिसमें चित् है वही चिदम्बरम् है। जो वास्तव में चिदम्बरम् हैं, उनको हम भूल गये हैं। सब मंदिरों की पूजा अच्छी होनी चाहिए। संतों ने यह भी कह रक्खा है: "चित्तये कोविल।" एक भाई एक पुराने मंदिर की दुरुस्ती करने की चिन्ता करते थे, पैसा नहीं था। हमने उनको कहा कि पहले आप इस (हृदय) मंदिर की दुरुस्ती की चिन्ता कीजिए। उसके बाद वह मंदिर दुरुस्त हो जायेगा। भगवान की प्रार्थना खुली हवा में भी हो सकती है। भूमिहीन, दरिद्र, ये सब देवता हैं। उन सबकी पूजा अच्छी तरह होनी चाहिए।

शिवभगवान् का प्रेम ही रूप है। "अनवे शिवम्" लेकिन जब भगवान्

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

Jangamawadi Math, Varanasi
Acc. No. 3222

के हृदय में प्रेम नहीं रह गया, तव शिव भगवान् रुद्र भगवान् बन जाते हैं और कालरा जैसे रोग, अज्ञान, भूख आदि भेजते हैं। ये त्रिशूल हैं, रुद्र भगवान के तीन शूल हैं। जब शिव के भक्त ढोंग करते हैं, प्रेम नहीं करते हैं, तब रुद्र बनते हैं वे।

भूदान में हम कोई नई बात नहीं कह रहे हैं। आप के गाँव में जो मंदिर गिर चुके हैं, गिर रहे हैं, जो बीमार हैं, दुःखी हैं, अज्ञानी हैं, उनको जरा दुरुस्त करो, यही बात भदान कह रहा है।

शिव जैसे श्रमिक बनें

शिव भगवान् की पूजा के लिए फूल चाहिए, लेकिन शिव भगवान् एक दो फूल से संतुष्ट नहीं होते हैं। उनको लाखों चाहिए। शिव भगवान् हमेशा लक्ष की बात करते हैं। उनको हमेशा लक्षदान चाहिए। उनको सहस्रदान से संतोष नहीं है, क्योंकि दुनियाँ में लाखों लोग हैं। उन सबकी सेवा करनी है। इसलिए पूरी पूजा करो, लेकिन यहाँ के कार्यकर्ता भीख माँगते हैं। भीख माँगने की कोई जरूरत नहीं है। उनके दरवाजे पर जाकर समझा दो कि आप के दरवाजे पर शिवमेरुमाण आये हैं, दे दो। तुम्हारी भक्ति की परीक्षा हो रही है। हमारा रूप तुम ले लो, खुले शरीर से बैठना शुरु करो। ज्यादा मत पहनो। शिवभगवान् शर्ट पहनते थे क्या? मेहनत करते हैं, तो पसीना बहता है। खोतों में साँपों के बीच काम करना है। शिवभगवान भी एक साँप गले में रखत हैं। याने वे खेत में जाकर काम करते थे। वे कालेज में जाकर बैठते थे क्या? कालेज में तो डरपोक लड़के रहते हैं। खेतों में तो रोजमर्रा साँपों से सावधान रहना पड़ता है। शिवमेरुमाण मोटर या हवाई जहाज में नहीं बैठते हैं। रामेश्वरम् से हवाई जहाज में बैठे और कैलाश में उतर गए। वे तो बैल पर बैठते थे, क्योंकि वे किसान के देवता हैं। यह भी कवि ने लिखा है कि "तेन्नाडुड्डनै शिवम्।" शिव भगवान हमारे देश का स्वामी है, वह किसान है, उसका बैल के साथ सम्बन्ध आता है। किसान के शरीर से भी गंगा बहती है और खेतों में साँपों से भी सम्बन्ध आता है। शाम को चन्द्र दीखता है तब शहरवाले सिनेमा देखने जाते हैं, लेकिन किसानों को शाम को बैलों को चराने

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

के लिए जाना चाहिए। वहाँ सुन्दर चन्द्र दीख पड़ेगा। वह शिव भगवान किसान के, कुदरत के देवता ह।

कणकुकराय (कोयम्बतूर)
१३-९-'५६

ग्राम-धर्म

:९:

गाँव छोटे-छोटे बने हैं, प्रेम के लिए बने हैं और कदीम जमाने से बसे हुए हैं। किसी एक घर में कोई चीज बनती है, तो दूसरे घर में मालूम हो जाता है। किसी घर में कोई बीमार हुआ, तो सारे गाँव को मालूम हो जाता है। किसी घर में लड़का पैदा हुआ, सारे गाँव को मालूम हो गया। इसलिए गाँव में एक दूसरे का अच्छा परिचय रहता है, प्रेम रहता है।

पुराना रिवाज मत छोड़िये

इसलिए गाँववाले जब हमारे सामने आते हैं, तो उनको हम पहली बात यह सुनाते हैं कि मिलजुलकर काम करने का अपना जो पुराना रिवाज था, उसको मत छोड़िये। अपने गाँव में पहले यही था कि गाँव में अच्छी फसल होगी, सब बाँट करके खायेंगे। बढ़ई हर किसान के घर में, जो काम मिलता था, करता था। उसको कोई नाप करके काम नहीं दिया जाता था और न नाप कर पैसा ही दिया जाता था। साल भर में जो फसल आती, उसमें से उचित हिस्सा किसान उस बढ़ई को दे देता। जिस साल ज्यादा फसल आती, उस साल बढ़ई को भी ज्यादा मिल जाता और जिस साल फसल घट जाती, उस साल बढ़ई को भी कम मिलता। लेकिन वह चीज तो गाँववालों ने छोड़नी शुरू कर दी। इसलिए अब बढ़ई भी पैसा माँगता है, बुनकर भी पैसा माँगता है, चमार भी पैसा माँगता है, तेली भी पैसा माँगता है। पैसा गाँव में बनता नहीं। पैसा बनता है शहरों में। नासिक के छापाखाने में जो पैसा बनता है, वह पैसा 'हमको चाहिये, हमको चाहिये' ऐसा गाँववाले कहते हैं।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

पैसे के पास प्रेम नहीं टिकता

पैसे का क्या उपयोग ? पैसा न खाया जाता है, न पिया जाता है, न ओढ़ा जाता है। लेकिन लोग कहते हैं कि एक पैसा हाथ में आ जाय, तो बस सारी दुनिया हाथ में आ गयी, भगवान् भी हमारे हाथ में आ गया। फिर वह तेली कहता है कि चमार का जूता महँगा मालूम होता है, मैं नहीं खरीदूँगा, मैं शहर का जूता खरीदूंगा। मोची कहता है कि तुम्हारा तेल मैं नहीं खरीदूंगा, मैं तो मिल का तेल खरीदूंगा। तुम्हारा तेल मूझे महँगा पड़ता है और दोनों बुनकर से कहेंगे कि तुम्हारा कपड़ा हमें महँगा पड़ता है, इसलिये हम तो मिल का कपड़ा पहनेंगे। बुनकर कहता है कि तुम्हारा तेल और तुम्हारा जूता हम नहीं ले सकते, हमें महँगा मालूम होता है, हम तो शहर का लेंगे। फिर तो गाँव का धंधा खतम हो गया। सिर्फ खेती का काम रहा और कुछ रहा ही नहीं। खेती में क्या काम है, चार-छ: महीने काम मिला, बाकी दिनों के लिए काम नहीं है। यदि बारिश कम हुई, तो उतने दिनों का भी काम नहीं।

हम गाँववालों को समझाते हैं कि भाइयो, अब आप जाग जाइये और जरा अपने गाँव का अभिमान रखिये, ग्राम-धर्म समझिये।

भगवान् की भक्ति में नाम लेते हैं, और बीड़ी-सिगरेट भी नहीं छोड़ सकते। ये सारी बुराइयाँ और व्यसन अगर गाँव में आ जायेंगे, तो गाँव बिल्कुल बर्बाद हो जायेंगे, क्योंकि उनसे गाँववालों की सेहत खराब होगी।

रामचन्द्रपुर (उत्कल)
१७-२-५५

युग धर्म का संदेश : १० :

हमने यह बात भी लोगों के सामने रखी थी कि गाँववाले ही यह तय करें और कुल-के-कुल गाँव दान में दें, क्योंकि हमारा आखिरी उद्देश्य ग्रामराज्य है। गाँव में गाँववालों का राज्य चलेगा और गाँव की कुल जमीन गाँव की होगी। गाँव का सारा समाज अपने को एक परिवार समझेगा। जैसे एक कुटुम्ब

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

में, एक परिवार में इन्तजाम होता है, वैसे ही गाँव का इन्तजाम हो। जैसे परिवार में हर मनुष्य को तालीम मिलती है, हर मनुष्य को अच्छा उद्योग मिले ऐसी चिन्ता रखते हैं, हरएक मनुष्य को खाना, पीना, कपड़ा-लत्ता मुहैय्या हो ऐसी चिन्ता रखते हैं, उसी प्रकार गाँव की भी व्यवस्था हो। जैसे कुटुम्ब में यह नहीं सोचा जाता कि जिसने जितना कमाया, उतना ही खाने का उसको अधिकार है, बल्कि जितनी जिसे जरूरत है, उसे उतना ही मिलता है।

एक ही दिन में काम पूरा

लोग हमसे पूछते हैं, आपके कार्यकर्त्ता कहाँ हैं? अब समय थोड़ा बचा है, यह काम कैसे होगा; आप के कर्मी कितने हैं? हम कहते हैं कि हमारे छत्तीस करोड़ कर्मी हैं। ये जो यहाँ मूर्तियाँ बैठी हैं हमारे सामने, उन्हें हम भगवान् की मूर्ति समझते हैं। उनकी भक्ति करना ही अपना धर्म समझते हैं, कर्तव्य समझते हैं। यह तो हमारा भक्ति मार्ग है कि हम हर रोज गाँव-गाँव में घूमते हैं और भगवान् का संदेश सबके सामने रखते हैं कि भाइयो, परस्पर प्रेम करो और जमीन और सम्पत्ति को बाँट करके ही भोग करो। इतना कहते हैं और रात को बड़े आराम के साथ परमेश्वर की गोद में सोते हैं, कोई चिन्ता नहीं है। लोग पूछते हैं कि सत्तावन तक भूमि-क्रान्ति का काम पूरा करना है, यह संदेश आपने दिया है, पर समय थोड़ा बचा है, काम किस तरह होगा? तो हम कहते हैं कि काम किस तरह होगा, यह हम नहीं जानते। लेकिन यह पूरा जरूर होगा, क्योंकि यह भगवान् की इच्छा है। जैसे मृग-आर्द्रा नक्षत्र आता है और बारिश होती है, तो एक ही दिन में हिन्दुस्तान की कुल जमीन तर हो जाती है, कोई ज्यादा समय नहीं लगता। क्योंकि बारिश होती है, तो हर जगह होती है। उसी तरह से भूदान का पैगाम सब गाँव में पहुँचा दीजिये, तो आप देखेंगे कि एक ही दिन में कुल गाँवों में जमीन का बँटवारा हो सकता है।

तुलसीदास का काम

हम गाँव-गाँव जाते हैं, जमीन भी मिलती है, बँटवारा भी होता है, यह सब लोगों को समझाने का तरीका मात्र है। इससे और कुछ नहीं होता।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

तुलसीदासजी का काम इतना ही है कि रामजी को वे जगायें, "जागिये रघुनाथ कुंवर" इस तरह गा-गा के रामजी को जगायें। एक दफा रामजी जग गये, तो तुलसीदासजी का काम पूरा हो जाता है। फिर सारा काम रामजी ही करेंगे। हम तो सबके हृदय में जो रामजी विराजमान हैं, उनको जगाने का काम करते हैं। वे जग जायें तो फिर कोई चिन्ता नहीं रहेगी।

हर एक को यह चिन्ता हो कि मेरे पास ज्यादा संम्पत्ति हो गयी है, तो उसे शीघ्र बाँट देना चाहिए। आज भी लोग यह करते हैं कि घर में सम्पत्ति ज्यादा हो गयी, तो उसे घर में रखना खतरनाक समझते हैं; इसलिए बैंक में रख देते हैं। जैसे कलकत्ता के बैंक हैं, बम्बई के हैं, पटना के हैं। उसमें रख देते हैं। घर में जितनी जरूरत है, उतनी ही रखते हैं। परन्तु हम कहते हैं कि कलकत्ते के बैंक में आप क्यों रखते हैं? आप के ही गाँव में बैंक है, वहाँ क्यों नहीं रखते? लोग पूछते हैं कि जब हमें जरूरत होती है, तब बैंक से वापस मिलता है। हम कहेंगे कि इस बैंक से भी वापस मिलेगा। जब आप के पास ज्यादा संम्पत्ति आ जाय, तो आप गाँव-परिवार को दे दीजिये और गाँव के पास सम्पत्ति ज्यादा आयेगी, तो वह भी आप को समय पर दे देगा।

कराचुली (उत्कल)
२६-४-५५

जिन्दा-समाज का लक्षण : ११ :

ग्रामदान वरदान है

ग्रामदान की बात से लोगों को नाहक डराया जाता है। जिसके पास पचास एकड़ जमीन है, उससे हम कहते हैं कि अपनी सारी जमीन गाँव को दे दो और फिर गाँव की तरफ से जो कुछ पाँच-सात एकड़ जमीन मिले, वह ले लो। इसमें आपका क्या नुकसान होगा? आप पाँच एकड़ से ज्यादा जमीन की काश्त खुद तो कर नहीं सकते हैं। आज भी आप पैतालीस एकड़ जमीन की काश्त मजदूरों से करवाते हैं। अगर मजदूरों को पूरी मजदूरी दी जाय, तब तो आपके लिए कुछ बचेगा नहीं। आपको फायदा तो तब होगा,

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

जब आप उन्हें कम-से-कम मजदूरी देंगे और लूटेंगे। उस हालत में आपको उनका प्रेम नहीं मिलेगा। वे आपको ठगने की कोशिश करेंगे। आठ घंटे में से चार ही घंटा काम करेंगे और फसल भी चुरायेंगे। फिर रात को दूसरे किसानों के बैल के आपके खेत में घुसने का डर रहेगा। इसलिए या तो आपको खुद रात में जागना पड़ेगा या जागने के लिए मजदूर रखने पड़ेंगे।

आप कहेंगे कि घर में पैसा आयेगा, तो फिर उस पैसे का उपयोग मौके पर सेवा खरीदने में किया जायगा। पैसे से सेवा मिलेगी, पर सेवा के साथ प्रेम नहीं मिलेगा। अगर आप अपनी सारी जमीन और संपत्ति गाँव को दे देते हैं और गाँव के परिवार में दाखिल होते हैं, तो आपको जब सेवा की जरूरत पड़ेगी, तब लोग मुफ्त में आपकी सेवा कर देंगे और उसके साथ-साथ प्रेम भी करेंगे। इसलिए आप ही तराजू में तौलकर देखिये कि कौन-सा पलड़ा भारी है। ठीक सोचने से मालूम होगा कि माँ की गोद में सिर रखकर सोने में बच्चे का कोई नुकसान नहीं है। यह ग्राम-समाज हमारी माँ है।

इसलिए ग्रामदान में सब तरह से लाभ ही लाभ है। घास के एक तिनके को फौरन काट सकते हैं, लेकिन तिनके को बँटकर उसकी रस्सी बनायी जाय, तो वह मजबूत बनती है। यह बात यहाँ के छोटे-छोटे गाँवों के लोग समझते हैं और इसीलिए वे ग्रामदान देते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि बाबा को ग्रामदान देने वाले ये लोग मूर्ख हैं। लेकिन वास्तव में कौन मूर्ख है और कौन अकलवाला है, इसकी परीक्षा करने की जरूरत है।

डुमरपुट (कोरापुट)
२२-७-५५

जिन्दा समाज का लक्षण

कुछ लोग कहते हैं कि "बाबा दारिद्र्य बाँट रहा है। पहले संपत्ति बढ़ने दो, फिर बाँटो।" हम उनसे कहते हैं कि घर में पाँच मनुष्य हों और चार ही मनुष्य के लिए भोजन हो, तो क्या आप चारों पहले खा लेंगे और पाँचवें

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

से कहेंगे कि पहले हम उत्पादन बढ़ायेंगे, फिर तुमको खाने को देंगे ? परिवार में तो आप ऐसा करते हैं कि पहले जितना हो, उतना बाँटकर खा लेते हैं और फिर सब मिलकर उत्पादन बढ़ाते हैं और फिर ज्यादा खाते हैं, इसी तरह जो नियम परिवार पर लागू होता है, वह देश और गाँव पर क्यों न लागू होना चाहिये ? अमीर और गरीब, दोनों परिवार में बाँटकर खाते हैं; फिर चाहे मिठाई हो या रोटी। परिवार में यह चलता है, क्योंकि परिवार जिन्दा समाज है। कुटुम्ब में प्रेम होता है और प्रेम ही मनुष्य का प्राण है। जिस मनुष्य में प्रेम नहीं है, उसमें प्राण नहीं है। उसको मरा हुआ समझना चाहिए। वह फूँ....फूँ....श्वाश लेता है, इसके कारण जिन्दा माना जाता है। वैसे तो लुहार का भाता (भट्ठी) भी फूँ...फूँ... करता है, तो क्या वह जिन्दा हो गया ? जिन्दा तो वह है, जिसमें प्रेम भरा है। समाज जब प्रेममय बनेगा, तब गाँव में एक भी दुःखी मनुष्य होगा, तो उसके दुःख की जिम्मेवारी वह उठायेगा। फिर कोई यह नहीं कहेगा कि वह आलसी है, अज्ञान है, मूर्ख है, इसलिए उसे खाने को नहीं मिलता। चलते-चलते पैर को ठेस लग गयी और खून बहने लगा, तो आप यह नहीं कहते कि पैर कैसा बेवकूफ है, ठीक से चलना भी नहीं जानता। ठोकर लगी तो पैर जाने, हम कुछ नहीं जानते ! लेकिन उसकी मूर्खता की जिम्मेवारी हम उठा लेते हैं और फिर पाँव को ठीक ढंग से चलना सिखाते हैं। इसी तरह गाँव में कोई दुःखी, अज्ञानी और मूर्ख है, तो पहले उसका दुःख मिटाना चहिए। उसके बाद उसको विद्या देनी चाहिए, अक्ल सिखानी चाहिए। यह जिन्दा समाज का लक्षण है। परन्तु अगर हम कहें कि तू मूर्ख है, इसलिए तुझे खाना नहीं मिलता, तो हम क्या करें ? यह मुर्दा समाज का लक्षण है।

सुख-दुःख बाँट लेने की कला हो तो समाज मजबूत रहता है। फिर मनुष्य आपत्ति का प्रतिकार कर सकता है, वह आपत्ति पर अधिकार कर सकता है। अगर यह कला नहीं सधी, तो आपत्ति में मनुष्य एकदम हिम्मत खो बैठता है।

आपत्ति के प्रतिकार की कला

हमारा सारा दारोमदार खेती पर होता है। खेत में कभी फसल कम आती

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

है, तो हम खतम हो जाते हैं, क्योंकि हम अनाज बेचकर ये सारी चीजें लाते हैं। इसलिए पहले तो देश के कुल देहातों में दो साल का अनाज चाहिए। जो सरकार केवल एक साल के अनाज से संतोष मानती होगी, वह मूर्ख सरकार होगी। देश भर में दो साल का अनाज होना ही चाहिये और वह गाँव-गाँव में होना चाहिए। पिछले साल का अनाज इस साल खायेंगे और इस साल का अगले साल खायेंगे, ऐसा होना चाहिए। अगर अगले साल बारिश नहीं हुई, तो इस साल का अनाज काम में आयेगा। आज तो घर में अनाज बचा ही नहीं सकते, क्योंकि सब चीजें खरीदनी होती हैं। अगर हम गाँव में ही अपनी चीजें बनाते हैं, तो दो साल के लिए अनाज बचा सकते हैं। आज आप केला बेचकर मिर्च खाते हैं; घी-दूध बेचकर छाछ पीते हैं। गाँव के लोगों की ताकत कम होगी, तो खेती कौन करेगा? आज हमको बड़े-बड़े बैल दिखाये गये। देखकर खुशी हुई। परन्तु किसान कमजोर होंगे, तो मजबूत बैल को पकड़ कैसे सकेंगे? इसलिए सबसे बड़ी बात यह है कि किसानों को अच्छा खाना मिलना चाहिए। बम्बई आदि शहरों के लिए सौ-सौ मील दूरी पर से दूध भेजा जाता है, इसलिए गाँव के बच्चों को न दूध मिलता है, न छाछ मिलती है। इससे शहरवाले खुश हैं, परन्तु हम उनसे कहते हैं कि देहात को दुःखी बनाकर तुम सुखी नहीं हो सकते। दूध खरीदने के पहले आपको उनसे पूछना चाहिये कि तुम्हारे बच्चों को दूध मिलता है या नहीं? अगर मिलता है, तो बचा हुआ दूध आप खरीद सकते हैं। ऐसा आप नहीं करेंगे, तो देहात के लोग मर जायेंगे। वे दुःखी होंगे, तो आप सब भी दुःखी बन जायेंगे, क्योंकि वे कमजोर बनेंगे, तो खेती नहीं कर सकेंगे और खेती कमजोर होगी तो शहरवाले भी सुखी नहीं हो सकते।

शहर और ग्रामों का सम्बन्ध

देश एक मकान है और बम्बई, मद्रास, कलकत्ता आदि बड़े-बड़े शहर उस मकान का तीसरा तल्ला है। यह कंगयम् आदि बड़े गाँव दूसरा तल्ला है और सबसे नीचे का तल्ला ये छोटे-छोटे गाँव हैं। मान लीजिये कि ऊपरवाला तल्ला मजबूत रहा और नीचेवाला तल्ला कमजोर रहा

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

तो भवन गिरेगा या नहीं ? बम्बई आदि बड़े शहर मिल के आधार पर चलते हैं। वे कमजोर होंगे, तो भी चलेगा; परंतु नीचे का तल्ला यदि कमजोर रहेगा, तो नहीं चलेगा। देश की रचना किस तरह करनी है, इसकी यह एक मिसाल है। गाँव में छोटी-छोटी चीजें खरीदनी पड़े और अनाज, घी, दूध बेचना पड़े, ऐसा नहीं होना चाहिए। माँ कभी बच्चे को भूखे रखकर नहीं खाती, क्योंकि वह जानती है कि बच्चा ही कुल को आगे चलानेवाला है, इस तरह किसान और मजदूर आपके बच्चे हैं। आप उनके माता-पिता हैं। आप पहले खा लें और वे बाद में खायें, यह कैसे चलेगा ? गाँव के बच्चों को दूध, घी, मक्खन मिलना चाहिए। उनके वास्ते शहरवालों को सोचना चाहिए। यह शहर का काम है कि वे अपने गाँवों को मजबूत रखें। उनको देश की सुरक्षा इसमें मालूम होनी चाहिए कि अपने गाँव मजबूत बनें।

कंगयम (कोइम्बतूर)
१–११–५६

गाँव के लोग बिना एक हुए नहीं टिक सकते

इस गाँव में ग्रामदान की कुछ चर्चा चल रही है। कुछ लोग तैयार हैं और कुछ लोगों के मन में शंका है। हमें यह आश्चर्य नहीं होता कि लोगों को संदेह होता है, क्योंकि गाँव के लोगों को इसका ज्ञान नहीं होता कि दुनिया में क्या चल रहा है। आज सब देशों में यह देखा जाता है कि अलग-अलग रहने से कोई लाभ नहीं होता है। पुराना जमाना ऐसा था, जब कि देश-देश के बीच और देहात-देहात के बीच सम्बन्ध नहीं था। लेकिन इन दिनों गाँवों का और देशों का एक-दूसरे के साथ सम्बन्ध बहुत बढ़ गया है। दूर के किसी भी देश में लड़ाई छिड़ जाय, तो यहाँ के बाजार पर उसका परिणाम होगा, यहाँ के लोगों के जीवन में एकदम उथल-पुथल होगी। उसमें उनका कोई कसूर नहीं होगा। पुराने जमाने में ऐसा नहीं था। तब तो गाँव में कपास अच्छी पैदा हुई, तो गाँववाले सुखी होते थे, नहीं तो दुःखी होते थे। दूसरे गाँव के लोगों पर उसका कोई असर नहीं होता था। लेकिन आज हालत ऐसी

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

है कि आपके गाँव में फसल चाहे अच्छी आयी हो या बुरी, कपास के भाव आपके हाथ में नहीं है। अमेरिका में कपास के जो भाव जाहिर होंगे, उसका असर बंबई, मद्रास और कोयम्बतूर के बाजारों पर पड़ेगा। आपके गाँव में खूब अच्छी कपास पैदा हुई हो तो भी कपास के भाव गिर गये हों, तो आप दुःखी होंगे और आपके यहाँ कपास पैदा न हुई हो तो भी भाव चढ़ गये, तो फसल अच्छी न होने पर भी आप दुःखी नहीं होंगे। दूसरे पदार्थों की भी यही हालत है। कुल दुनिया का एक-दूसरे के साथ इतना सम्बन्ध बढ़ गया है कि कब किस गाँव पर और किस देश पर क्या आपत्ति आयेगी, यह कहा नहीं जा सकता।

ऐसी हालत में यदि एक-एक घरवाला कहेगा कि अपना-अपना मैं सोचूँगा और सुखी बनूँगा, तो वह नहीं होगा। पुराने जमाने में यह हो सकता था, परन्तु इस जमाने में नहीं हो सकता। इसलिये मुझ जैसे लोग ग्रामदान पर बहुत जोर देते हैं।

हिन्दुस्तान की हालत मैं अच्छी तरह जानता हूँ और हिन्दुस्तान के किसान किस तरह बचेंगे, इसकी राह भी जानता हूँ। गाँव के लोग, एक हुए बिना, टिक नहीं सकते हैं, यह मैं अपनी आँखों से देख रहा हूँ। आप वह नहीं देख सकते हैं, क्योंकि आपको दूर देखने की आँखें नहीं हैं। इसीलिए हम गाँव-गाँव जाकर लोगों को समझा रहे हैं।

आज एक घर में भाइयों में भी एक दूसरे के साथ नहीं बनती। गाँव में भी दो भाइयों की नहीं बनती। गाँव में दो पक्ष हो जाते हैं। इस तरह के पक्षों से गाँव के काम में बाधा नहीं आनी चाहिए, बल्कि गाँव का भला किसमें है,इस पर आपको सोचना चाहिए। अगर आप सोचेंगे, तो आपको बात जँचेगी। गाँववाले अलग-अलग रहेंगे, तो किसी आपत्ति का मुकाबला नहीं कर सकेंगे। एक मिसाल लीजिये। दो साल पहले उत्तर बिहार में भयानक बाढ़ आयी थी। ४०० मील लंबा और १०० मील चौड़ा प्रदेश पानी के अंदर था। पिछले ५० साल में ऐसी बाढ़ नहीं आयी थी। उस वक्त उसी प्रदेश में हमारी यात्रा चल रही थी। सारी फसल डूब गयी थी, सरकार लोगों को मदद पहुँचाने

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

का काम कर रही थी। गाँव-गाँव में चावल भेजा जाता था, परन्तु कौन बाँटे और किसको बाँटे, यह सवाल खड़ा होता था। हर कोई अपने लिए माँग कर रहा था और जो बड़े थे उनकी आवाज सुनायी देती थी। इसलिए जिन्हें मदद की जरूरत नहीं थी, जो खरीद सकते थे, उन्हें मदद मिलती थी और जिन गरीबों को वास्तव में मदद की जरूरत थी, उन्हें मदद नहीं पहुँचती थी। यह सब हमने अपनी आँखों से देखा है। अगर सारा गाँव एक हो जाता है, तो गाँव को मदद पहुँचाना आसान हो जाता है।

आरसम पालयम
१-११-'५६

ग्रामदान और सरकारी विकास-योजना : १२ :

ग्रामदान योजना और सरकारी विकास योजनाओं में फर्क

आप लोग देखते हैं कि आजकल हम ग्रामदान की बात सुना रहे हैं। लोगों के मन में शंका पैदा होती है कि जैसे वालाँदूर गाँव में सरकार की योजना चलती है, वैसे ही ग्रामदान की योजना शायद हो जाय। वहाँ सबका सहयोग सहकारी पद्धति से चलाया गया है, परन्तु ग्रामदान और वालाँदूर की योजना में कोई मेल नहीं है। वहाँ ऐसी योजना है कि जैसे बैलों से खेत में क्या बोया जायगा आदि विषय में पूछा नहीं जाता है, केवल उनको अच्छा खिलाया जाता है। वैसे वहाँ के लोगों से कुछ पूछा नहीं जायगा। सरकार सारी योजना बनायेगी और लोग उसके मुताबिक बरतेंगे। कुछ किसान तो बैलों को अच्छा खिलाते भी नहीं हैं, ऐसा वहाँ नहीं होगा। उनको खाना तो मिलेगा लेकिन उनके दिमागों को खाना नहीं मिलेगा। ग्रामदान में लोगों की बुद्धि का हम पूरा उपयोग करना चाहते हैं। कई जगह तो हमने और मजा देखा है। वालाँदूर हमने देखा नहीं है। दूसरे प्रान्त की बात है। वहाँ ५०० एकड़ का एक सरकारी फार्म है। जहाँ जितना ले सकते हैं, उतना ट्रैक्टर से काम लिया जाता है और बाकी काम मजदूरों से लिया जाता है। उस फार्म में उत्तम से उत्तम गेहूँ बोया जाता है। परन्तु वे मजदूर वह अनाज खा नहीं सकते

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

हैं। बैलों को तो उस गेहूँ के नीचे का डंठल ही खाने को मिलता है। परन्तु उन मजदूरों के वास्ते एक "सस्ते अनाज की दूकान" खोली जाती है। इसमें "यूफेमिज्म" है। वह असल में है 'खराब अनाज', परन्तु ऐसा नाम रखेंगे तो कोई खरीदने ही नहीं आयेगा। इसलिए उसका नाम "सस्ते अनाज की दूकान" रखते हैं। ऐसा सस्ता अनाज देकर उन पर उपकार का बोझ भी चढ़ाया जायगा। मजदूर खुद उत्तम अनाज पैदा करेंगे, परन्तु उन्हें वह खाने को नहीं मिलेगा। उनकी बुद्धि के विकास के लिए भी कोई योजना नहीं बनायी जायगी। कहते हैं उनमें बुद्धि ही नहीं है। बुद्धि हो, तभी तो विकास होगा न। इसलिए उसको तो काम ही करना चाहिए। यह ठीक है कि उसको खाना पूरा मिलना चाहिए और वह मिलेगा। इस प्रकार की योजना हमने फार्म में देखी है। वालाँदूर में क्या है, हम नहीं जानते। फिर भी वहाँ का प्रकार ग्रामदान का नहीं होगा, ऐसा कह सकते हैं।

ग्रामदान के गाँवों में गाँव के सब लोगों की एक समिति बनेगी। आज भी ग्रामपंचायत बनती है। परन्तु उसमें बहु-संख्या से लोग चुने जायेंगे और वे भी ऐसे लोग होंगे, जिनके हाथ में जमीन, संपत्ति होगी, जिनका सरकार में कुछ वजन होगा। उनके हाथ में सत्ता भी आ गयी। याने हर गाँव में गाँव को लूटने की विकेन्द्रीकरण की योजना हो गयी। बहुत दूर से लूटने के लिए लोगों को न आना पड़े, इस वास्ते अपने-अपने गाँव के मुखिया ही गाँववालों को लूटें। इसलिए पंचायत याने झगड़ा होता है।

इन लोगों ने तय किया कि कुछ लोगों में दिमाग है ही नहीं, इसलिए उनके वास्ते योजना बननी चाहिए। उन लोगों ने दो विभाग किये। कहा जाता है कि मिल में इतने हैंड्स हैं और इतने-इतने हेड्स हैं। याने जो हाथ का काम करते हैं उनमें दिमाग है ही नहीं और जिनमें दिमाग है, उनके हाथ नहीं हैं। अगर भगवान् का ऐसा विचार होता कि कुछ लोग हाथ का ही काम करें और कुछ लोग दिमाग का ही काम करें तो वह कुछ लोगों को हाथ ही देता और कुछ लोगों को दिमाग ही दिमाग देता। परन्तु सरकारी योजना ऐसी होने के कारण वह सर्व सुखकारी नहीं होती। वह सबका विकास करने में समर्थ नहीं होती।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

बड़ी बात—बुद्धि का विकास

स्वराज्य-प्राप्ति के पहले हम कहते थे कि स्वराज्य-प्राप्ति के बाद सुख नहीं मिलेगा, तो भी चलेगा, लेकिन स्वराज्य चाहिए। क्योंकि स्वराज्य में हमारा कारोबार हम चलायेंगे तो हमारी बुद्धि का विकास होगा। स्वराज्य में सुख भी बढ़ सकता है, परन्तु वह बड़ी बात नहीं है। स्वराज्य में बड़ी बात यह है कि उसमें बुद्धि का विकास होता है। सुखी होना न होना, हमारे अक्ल की बात है। उस समय हमसे पूछा जाता था कि स्वराज्य मिलेगा तो क्या हम अधिक सुखी बनेंगे ? यही आज ग्रामदान के बारे में पूछा जाता है। ग्रामदान से ज्यादा पैसा मिलेगा ? उत्पादन बढ़ेगा ?

हम उत्पादन बढ़ाने के वास्ते ग्रामदान नहीं चाहते। हम बुद्धि के विकास के वास्ते ग्रामदान चाहते हैं। बुद्धि के विकास के साथ-साथ सुख बढ़ेगा ही। मान लीजिये कि सरकार किसानों से यह कह दे कि हम आपके खेतों का कब्जा लेते हैं। हम आपको हमेशा पाँच रुपये मजदूरी देंगे। तो हम कहेंगे कि हमको यह नहीं चाहिए। आपकी सलाह हम ले सकते हैं, परन्तु तय हम करेंगे। हमारी उन्नति हमारी बुद्धि के विकास में ही हो सकती है। यों करते-करते हमारी योजना गलत हो जाय और उत्पादन घटे तो ? अरे, एक गाँव में घटेगा तो दूसरे गाँव में बढ़ेगा। वहाँ जो हुआ, वह देखेंगे और सीखेंगे और अगले साल उसमें फर्क करेंगे। अपनी बुद्धि के अनुसार काम करने में अगर कुछ तकलीफ सहन करनी पड़े, तो भी अच्छा है।

लोग कहते हैं कि ग्रामदान अच्छा है, बशर्ते कि उत्पादन बढ़े। उत्पादन-उत्पादन क्या करते हो ? अमेरिका में उत्पादन कोई कम नहीं है। जमीन, संपत्ति में वह देश सबसे आगे है। परन्तु दुनिया में सबसे ज्यादा आत्म-हत्या वहाँ होती है। वहाँ किसी को समाधान नहीं है। सारा देश भयग्रस्त है। शस्त्रास्त्र बढ़ा रहे हैं। कहीं एक जगह कुछ हुआ, तुरन्त देशवालों को कहेंगे कि अरे खतरा है, खतरा है। किसी जगह कम्युनिस्ट नेता चुनकर आया तो सैन्य सामग्री बनाने के वास्ते लोगों से पैसा माँगेगा। सारे लोग डरे हुए हैं। चाहे जितने पैसे हों, परन्तु समाधान जैसी चीज बाजार में नहीं बिकती। इसलिए

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

ग्रामदान के गाँव में उत्पादन तो बढ़ेगा ही, इसमें क्या पूछते हो। क्योंकि जितना घट सकता था, उतना घट गया है। इसलिए वह तो बढेगा। परन्तु अगर न बढ़े, तो भी ग्रामदान चाहिए; क्योंकि इससे हर एक की बुद्धि के विकास की योजना होगी।

ग्रामदान के गाँव में हरएक की तालीम की योजना बनाई जायगी। आज कुछ ही बच्चे स्कूल में जाते हैं, बहुत से नहीं जा सकते। जो पढ़ते हैं, वे शहर में नौकरी के लिए चले जाते हैं। शहर में ज्ञानी लोग पैसा लेकर ज्ञान देते हैं। इसके बिना ज्ञानी लोग गाँव-गाँव पहुँचते ही नहीं हैं। आज तो गाँव की ऐसी हालत है कि बाबा गाँव-गाँव घूमता है, लेकिन उसके ज्ञान का उपयोग ही नहीं हो रहा है। बाबा तो कुशलता से, विनोद से कुछ समझाता है। लेकिन बाबा का ज्ञान समझने के लिए देहातों की तैयारी नहीं है। एक बड़े धनी आदमी देहात में गये। उन्हें भोजन चाहिए था। गाँव के होटल में गये। होटल-वाले ने कहा कि बारह आना लगेगा। उन्होंने उसके सामने लाख रुपये का नोट रखा और कहा कि मुझे निन्यानबे हजार रुपये चार आने वापस दो। उस होटलवाले ने कहा कि मेरे पास तो सिर्फ चार आने हैं। धनी आदमी ने सोचा निन्यानबे हजार रुपये खोकर सिर्फ चार आने तो मैं नहीं ले सकता। तो पास में लाख रुपये होते हुए भी वह भूखा चला गया। आज की हालत में बाबा के पास ज्ञान होते हुए भी आप उसका उपयोग कर ही नहीं सकते। खाना, कपड़ा भी काफी नहीं मिल रहा है। लेकिन इससे भी बड़ी बात यह है कि लोगों की बुद्धि के विकास की योजना नहीं हो रही है।

शेलमपट्टा (मदुरा)
१६–३–'५७

ग्रामदान का सरकार से सम्बन्ध : १३ :

सरकार सूत्र है

आज दुनिया की हालत ऐसी है कि अलग-अलग देश के अलग-अलग राज्य हैं। सारी दुनिया का कोई एक राज्य नहीं है। लेकिन आगे जाकर

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

जब सारी दुनिया का एक राज्य बनेगा, तब ये अलग-अलग देश अपना-अपना कारोबार देखेंगे और दूसरे देशों के साथ सम्बन्ध के बारे में दुनिया की वह बड़ी सरकार सोचेगी। सारी दुनिया की सरकार की सत्ता यह होगी कि वह विभिन्न देशों की सरकारों को सलाह देगी और कोई मदद दे सकती है, तो मदद देगी। दूसरे देशों के बीच कोई सवाल पैदा होगा, तो फैसला देने की सत्ता उसकी रहेगी। बाकी सब देश अपना-अपना देख लेंगे। इसी तरह गाँव-गाँव में भी अपना राज्य बनेगा। ग्रामदान के गाँव में सारा गाँव मिलकर एक परिवार होगा। वे अपना सब कारोबार देखेंगे। सरकार सलाह देगी, दे सकती होगी तो कुछ मदद देगी और दूसरे गाँवों के साथ संबंध के बारे में कोई सवाल खड़ा होगा तो वह उसके पास जायेगा। उस हालत में ज्यादा-से-ज्यादा सत्ता गाँवों में आयेगी। जैसे अलग-अलग सुगंधवाले फूलों को एक साथ पिरोनेवाला एक सूत्र रहता है, उस सूत्र की अपनी कोई सुगन्ध नहीं होती, फूल की संगति से उसमें भी सुगंध आ जाती है। उसी तरह अलग-अलग गाँव को एक साथ पिरोने का काम सरकार करेगी। अलग-अलग गाँव अलग-अलग फूल हैं, सरकार सूत्र है।

गाँव के लोग एकमत हों

आज बिलकुल उल्टा है। गाँववाले सोचते हैं कि हमारी अपनी कोई सुगंध है ही नहीं। जो कुछ सुगंध है, वह सरकार में है। हम सारे गाँववाले दीन, दरिद्र, शक्तिहीन हैं, हमारे पास कुछ नहीं है। दूध, घी, मक्खन, फल, तरकारी, अनाज, मूँगफली आदि पैदा करने की शक्ति गाँववालों के पास है और ये कहते हैं कि हमारे पास कुछ नहीं है। गाँव के लोग एकमत नहीं हैं। आप ही सारी चीजें तैयार करते हैं, परन्तु एक-दूसरे की चिन्ता नहीं करते हैं। सबने अपने-अपने अलग-अलग परिवार बना लिये हैं। मालिक मजदूर को कम-से कम दाम देकर ठगता है, मजदूर कम से कम काम करके ठगना चाहता है। दोनों ही देश को ठगते हैं। आठ घंटे का दाम लेकर मजदूर चार घंटे का काम करता है। जैसे बैल के पीछे देख-रेख के लिए एक मनुष्य चाहिए, वैसे मालिक भी मजदूर के पीछे रहेगा तो मजदूर काम करेगा! मालिक

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

अगर बच्चे को छोड़कर गया तो मजदूर तुरन्त ही खेत छोड़कर जायेगा और दो घंटे के बाद लौटेगा। बच्चे को कौन पूछता है? बच्चा बाप से शिकायत करेगा, तो कहेगा कि पाखाने के लिए गया था। मालिक कम-से-कम मजदूरी देगा। इस तरह दोनों एक-दूसरे को ठगते हैं। जैसे गाड़ी के दो बैल एक-दूसरे का बोझ एक दूसरे पर डालने की कोशिश करते हैं और परिणाम-स्वरूप गाड़ी आगे बढ़ती ही नहीं, वैसे मालिक-मजदूर एक दूसरे का बोझ एक-दूसरे पर डालते हैं और परिणाम-स्वरूप देश की फसल कम आती है। गाँव में द्वेष पैदा होता है। वे एक-दूसरे को मदद नहीं करते, एक-दूसरे का माल नहीं खरीदते। गाँव का तेली, गाँव के बुनकर का कपड़ा महँगा कहकर नहीं खरीदेगा और उसके धंधे को काटता है। बुनकर भी उसका तेल नहीं खरीदेगा और बाहर से खरीदेगा। सभी चीजें बाहर से खरीदेंगे। खरीदने के लिए पैसा चाहिए तो फिर यह फल, तरकारी, अनाज, दूध, दही बेचते ही चले जायेंगे।

दो साल के लिए अनाज रहे

आज दुनिया की हालत ऐसी है कि कब महायुद्ध शुरू हो जायगा, कोई कह नहीं सकता। उस समय सारी चीजों के दाम बढ़ जायेंगे। उस हालत में जिनके पास अनाज होगा, वे ही टिकेंगे। इसलिए गाँव में दो साल के लिए अनाज होना ही चाहिए। ग्रामदानवाले गाँवों में यह हो सकेगा, क्योंकि वे अपना कपड़ा, तेल, शक्कर आदि पक्का माल खुद तैयार कर लेंगे। आज गाँवों में कच्चा माल होता है, परन्तु पक्का माल बाहर से खरीदते हैं। फिर खेती के सिवा गाँव में कोई उद्योग ही नहीं रहता। सारा दारोमदार पैसे पर रहता है और पैसा शहरवालों के पास रहता है। क्योंकि वे अपने मन के मुताबिक पैसे छापते रहते हैं। ऐसी चीज के लिए अपना सुन्दर धान्य बेच देना कितनी गलत बात है? शहरवालों को भी खिलाना चाहिए, उनको भूखा रखने की बात नहीं है।

हिन्दुस्तान में सौ में से अस्सी मनुष्य गाँव में रहते हैं। मान लीजिये कि सौ मनुष्यों को सौ सेर अनाज चाहिए तो नब्बे सेर अनाज गाँव में रहेगा और

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दस सेर अनाज बाहर जायेगा, क्योंकि शहर के दो मनुष्य के बराबर गाँव का एक मनुष्य है। गाँव का लड़का जितना खायेगा, उतना वहाँ का जवान मनुष्य भी नहीं खा सकेगा; क्योंकि उनको खाना पचता नहीं, काम ही जो नहीं करते हैं। पसीना बहाते नहीं हैं, तो खाना कैसे पचेगा ? इसलिए वहाँ १० प्रतिशत भेजकर बाकी ९० प्रतिशत गाँव में रखना चाहिए। लेकिन आज सारा-का-सारा अनाज बेच देते हैं, अपने पास दो-चार महीने के लिए रखते हैं। अगले साल बारिश न होने के कारण फसल न हुई, तो वही अनाज ज्यादा दाम देकर खरीदेंगे और ज्यादा पैसा पास में होगा नहीं, इसलिए आधा पेट खायेंगे। गाँव के लोग आधा पेट खाकर रहेंगे, तो गाँव की फसल भी कम आयेगी। इसलिए भाइयो, गाँव में दो साल का अनाज होना ही चाहिए और यह सब तब होगा जब गाँव की कुल जमीन गाँव की बनायेंगे और गाँव के धंधे गाँव में खड़े करेंगे। अपना कपड़ा स्वयं तैयार कर लेंगे, उसका राशन नहीं होगा, क्योंकि हम ही उसे बचानेवाले हैं और बाहर से कुछ खरीदना नहीं है। गाँव में गाँजा, अफीम बिलकुल नहीं रहेगी, और बीड़ी भी नहीं रहेगी।

पैसे का कम-से-कम व्यवहार

ग्रामदान में तीसरी बात यह होगी कि वहाँ पैसा कम-से-कम रहेगा। गाँव को शिक्षक चाहिए। वह पूछेगा कि 'तनख्वाह क्या दोगे ?,' तो हम कहेंगे कि 'हमारे गाँव में पैसा नहीं होता है, हम तो साल भर की फसल में से थोड़ा-थोड़ा हिस्सा दे देंगे और एक एकड़ जमीन देंगे जिस पर मेहनत करके आप फल, तरकारी और कपास पैदा करेंगे। उसमें एक कुआँ खुदवा देंगे। अपना कपड़ा आप स्वयं तैयार कर लेंगे। खाने के वास्ते हर घर से थोड़ा-थोड़ा अनाज दिया जायेगा।' फिर गाँववालों का पैसा सिनेमा देखने में नहीं जायेगा। शिक्षक गाँववालों को दूसरा ही सिनेमा दिखायेगा। आकाश के सुन्दर तारे, नक्षत्र दिखायेगा कि वह देखो शुक्र है, उधर बल्देव हैं, इधर शिवमेरुमाण-शंकर हैं, यहाँ अगस्ति ऋषि हैं, उधर ध्रुव है, वहाँ सप्तर्षि देव खड़े हैं। वह सारे आकाश का सिनेमा दिखायगा। अब ब्राह्मण से पूछने के लिए दौड़ना नहीं पड़ेगा कि मृगनक्षत्र कब लगेगा। छोटा-सा बच्चा भी बता देगा

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

कि मृगनक्षत्र कब लगेगा। फिर गाँववालों को तीरुपावे, तिरुकुरल, माणिक्य-वाचकर के सुन्दर भजन सिखाये जायेंगे। आज तो शहर में रात के एक-दो बजे तक रेडियो रोता रहता है। दिन में कुछ काम नहीं होता है, इसलिए सुबह सूर्योदय के बाद उठेगा। ग्रामदान के गाँव में तो भारतीयार के गीत पढ़े जायगे। सब जल्दी सोयेंगे, जल्दी उठेंगे।

आज एक प्रश्न पूछा गया कि ग्रामदान का सरकार के साथ क्या संबंध रहेगा? एक था बाप। वह पूछता है कि मेरा मेरे बाप से क्या संबंध है? अरे! तू भी तो बाप ही है न? वैसे ही यह पूछता है कि ग्रामदान के बाद सरकार के साथ क्या संबंध रहेगा? ग्रामदान होने के बाद तुम ही सरकार बन जाओगे। तुम बन जाओगे बाप और सरकार बनेगी बेटा। तुम्हारी ताकत से सरकार को ताकत मिलेगी।

देश की शक्ति कैसे बढ़ेगी ?

स्वराज्य के पहले राजनीति में ताकत थी, क्योंकि उस समय लाठी खानी पड़ती थी। जेल में जाना पड़ता था। जहाँ त्याग होता है, वहाँ शक्ति होती है। अब त्याग सामाजिक क्षेत्र में है। आज राजनैतिक क्षेत्र में मत्सर होता है। हम यह नहीं कहते कि वहाँ जानेवालों को वैराग्य की जरूरत नहीं है। उनको अपने सामने जनक का आदर्श रखना चाहिए। जनक महाराज अत्यन्त वैरागी समझे जाते थे। आज भी कुछ लोग वहाँ वैसे हैं, परन्तु हम चाहते हैं कि सभी वैसे बनें। वह तो उन पुरुषों का गुण होगा। परन्तु राजसत्ता चलाने में ऐसा कोई गुण नहीं है कि त्याग करना पड़े। समाज-सेवा में त्याग करना पड़ेगा। अपने घर में किसी हरिजन को रख लिया तो उसको समाज का कुछ मुकाबला करना पड़ेगा। उसको त्याग का मौका मिलेगा। गांधीजी ने स्वराज्य के साथ हरिजन सेवा, खादी, ग्रामोद्योग, नयीं तालीम सब जोड़ दिया। लोगों को लगता था कि स्वराज्य के साथ इसका क्या संबंध है। तो वे कहते थे कि अरे भाई, जाओ गाँवों में, इस निमित्त से लोगों से संबंध होगा तो ताकत बढ़ेगी। वे समझ जाते थे और गाँव-गाँव जाकर यह सारी बातें समझाते थे कि चरखा चलाओ। फिर पूछते थे कि क्या शिकायत है? अंग्रेजी राज्य है इसलिये

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

ऐसा है। अपने राज्य में ऐसी शिकायत नहीं रहेगी। इस तरह उस आन्दोलन में पाने की बात है। स्वराज्य प्राप्ति के बाद किसी भी देश की सामाजिक क्षेत्र में ताकत होगी। राज्य चलाने के लिये कुछ लोग चाहिये। परन्तु वे भी तड़पते रहेंगे कि समाज के लिये हम क्या करें ? ऐसा होगा तभी देश की ताकत बढ़ेगी।

चेटियपट्टी (मदुरा)
२१-१२-'५६

टी. जी. ... एवं,
स्व, वेदा...
"मा" को अर्पण,
१५-७-७८: १४ :

भूदान : मजदूर आन्दोलन

हिंसा की ताकत बेकार

इन दिनों बड़े-बड़े राष्ट्रों ने बहुत शस्त्रास्त्र बढ़ाये हैं और ऐसे बम की शोध की है कि एक बम गिरा तो हजारों मनुष्यों का संहार हो सकता है। ऐसे बम एक ही राष्ट्र के पास नहीं, बल्कि अनेक राष्ट्रों के पास हैं। अमेरिका के पास भी है और रूस के पास भी। इसलिए वे सारे शस्त्र अब बेकार हो रहे हैं; क्योंकि शस्त्रों का उपयोग तब होता है, जब सामनेवाले के पास वे न हों और हमारे पास हों। अब दुनिया के ध्यान में आ रहा है, सोचनेवाले सोचने लगे हैं कि शस्त्रास्त्र से ताकत नहीं बनेगी, दुनिया का कोई मसला हिंसा की ताकत से हल नहीं होगा। लेकिन दुनिया में दुःख है, दरिद्रता है, भुखमरी भी है। इन सबका उत्तर नहीं मिलता है, तो लोगों में शान्ति कैसे रहेगी ? इनका समाधान करने के लिए प्रेम की ताकत सिद्ध करनी होगी। प्रेम में बहुत बड़ी ताकत है, लेकिन सबका प्रेम एकत्र होना चाहिए। छोटे-छोटे लोगों को भी अपनी ताक़त का भान होना चाहिए।

मजदूरों की ताकत कैसे बनेगी ?

हमने मजदूरों का सवाल हाथ में लिया है। आपमें से बहुत से लोग मजदूर हैं। हम चाहते हैं कि आप लोग सुखी हों, आपका जीवन सुधरे, मालिकों के और आपके बीच प्रेम संबंध बने, कोई किसी को चूसे नहीं, दबाये

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

नहीं। आज खेतों में काम करनेवाले मजदूर सबसे ज्यादा दुःखी हैं और गिरे हुए हैं। इसलिए हमने उनका मसला हाथ में लिया है। परन्तु हम चाहते हैं कि शहर के मजदूरों का भी मसला हल हो। जो सबसे दुःखी हैं, उनका दुःख मिटेगा तो दूसरों का भी दुःख मिटेगा। इसीलिए हमने कहा है कि हमारा आन्दोलन मजदूर-आन्दोलन है। हम चाहते हैं कि आप मजदूरों की ताकत बने। वह कैसे बनेगी? आपमें हिम्मत होनी चाहिए, आपको अपना दिल अन्दर से देखना चाहिए। आपमें ताकत है, परन्तु आपको उस ताकत का भान नहीं है। वह भान तब होगा, जब आप एक-दूसरे की मदद करना शुरू करेंगे। गरीब ही गरीबों की चिन्ता करना शुरू करेंगे तब उसमें से नैतिक ताकत बनेगी। उस ताकत से हम श्रीमानों पर भी असर डाल सकेंगे, उन्हें समझा सकेंगे, उनकी उदारता को जगायेंगे, यह हमारा रास्ता है। हम उम्मीद करते हैं कि आप इस रास्ते से चलने की हिम्मत करेंगे। ताकत तब तक नहीं बनेगी, जब तक वे स्वयं त्याग करना नहीं सीखेंगे। वे समझते हैं कि गरीब क्या त्याग कर सकेंगे? लेकिन गरीबों के भी बाल-बच्चे होते हैं। उन बच्चों के माता-पिता उनके लिए त्याग करते हैं। वे यह नहीं कहते कि "बेटा, तू गरीब का बेटा है, इसलिए हम तेरी चिन्ता नहीं कर सकते।" वे अपने बच्चों के लिए त्याग कर सकते हैं, तो अपनी जमात के लिए भी कर सकते हैं। गरीबों को सिर्फ माँगना ही नहीं सीखना चाहिए, उनमें देने की ताकत आनी चाहिए। गरीब श्रम कर सकते हैं, देश के लिए श्रमदान दे सकते हैं। वे गरीबों के वास्ते अपने-अपने श्रम का हिस्सा देंगे तो एक बड़ी पुण्यशक्ति निर्माण होगी। उसके सामने कंजूस श्रीमान् नहीं टिकेंगे। सारे के सारे श्रीमान् कंजूस नहीं होते हैं। जो उदार होंगे, वे फौरन हम लोगों में दाखिल हो जायेंगे। कंजूसों पर उनका असर पड़ेगा। जब गरीब जाग जायेंगे और एक-दूसरे के लिए त्याग करेंगे, तो त्याग की हवा फैलेगी। आज गरीबों की इज्जत नहीं है, उनका त्याग प्रकट नहीं हो रहा है। उनमें त्याग की शक्ति है, परन्तु उसका उन्हें भी भान नहीं है। गरीब आपस में लड़ते-झगड़ते हैं, व्यसनों में पड़े हुए हैं, एक-दूसरे की चिन्ता नहीं करते हैं, इसलिए उनकी नैतिक शक्ति नहीं बनती है। वे पाँच पाण्डवों की तरह एक हो जायेंगे तो उनकी शक्ति बनेगी।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

त्याग-वृत्ति से ताकत बनेगी

आप गरीब हैं, परन्तु आपसे भी गरीब लोग हैं। आप उनके लिए त्याग करना सीखें। मुझे यह सुनकर खुशी हुई कि यहाँ के मजदूर-संघ ने संपत्तिदान देना तय किया है। पाँच हजार मजदूरों ने तय किया है कि वे प्रतिमास संपत्तिदान देते रहेंगे। हम पैसे की ज्यादा कीमत नहीं करते हैं, त्याग-वृत्ति और प्रेम की कीमत करते हैं। उसी से आपकी ताकत बनेगी और गरीबों को अपनी इज्जत महसूस होगी। फिर श्रीमानों को भी उनके लिए इज्जत महसूस होगी। आज गरीब दीन बन गये हैं, अपने को लाचार समझते हैं, अपनी ताकत महसूस नहीं करते हैं, आपस में लड़ने में शक्ति खर्च करते हैं। परिणाम यह होता है कि दूसरों को भी उनके प्रति इज्जत नहीं मालूम होती। लेकिन अब गरीब जाग रहे हैं, उनके लिए इज्जत पैदा हो रही है। आज की यह सभा बता रही है कि गरीबों में कितनी जाग्रति पैदा हुई है। उसका सुन्दर उपयोग करना होगा। उसमें से अग्नि प्रकट करनी होगी। ठंढ़ी आग प्रकट करनी होगी, जो किसी को जलायेगी नहीं, सबको पावन करेगी, सबके दोषों को जलायेगी। ऐसी नैतिक और धार्मिक अग्नि निर्माण करनी है। उसमें गरीबों के दोष भस्म होंगे। फिर श्रीमानों के भी दोष भस्म होंगे। गरीब समझते हैं कि सारे दोष श्रीमानों में ही हैं। वे चूसनेवाले हैं, पीसनेवाले हैं, सतानेवाले हैं, निर्दय हैं, स्वार्थी हैं। श्रीमान् समझते हैं कि सारे दोष गरीबों में हैं। वे पूरा काम नहीं करते हैं, अप्रामाणिक हैं, व्यसनों में पड़े हुए हैं, आपस में लड़ते-झगड़ते हैं, बुद्धिहीन हैं। इस तरह ये उनको हीन समझते हैं और वे इनको हीन समझते हैं। याने दोनों में एक-दूसरे के लिए हीनभाव रखने में स्पर्धा हो रही है। जहाँ समाज में आदर ही खतम हुआ, वहाँ ताकत कैसे पैदा होगी ? सबसे पहली बात यह है कि मनुष्य को अपने लिए आदर होना चाहिए, अपनी शक्ति का भान होना चाहिए।

बुद्धि–परिवर्तन ही सही

भूदान-यज्ञ में पाँच लाख लोगों ने दान दिया है, जिनमें साढ़े चार लाख गरीब हैं। जब साढ़े-चार लाख गरीबों ने दान दिया, तब पचास हजार श्रीमानों

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

को देना ही पड़ा, क्योंकि एक ताकत पैदा हुई। श्रीमान् दो प्रकार के होते हैं। एक होते हैं हृदयवाले, उनके हृदय पर फौरन असर होता है। दूसरे होते हैं बुद्धिवाले। जब वे देखेंगे कि गरीबों में इतनी नैतिक ताकत पैदा हुई है कि उसके सामने हम टिक नहीं सकते हैं, तो वे भी इसमें शामिल हो जायेंगे। यह बात ध्यान में रखिये। श्रीमानों में कुछ लोग हृदयहीन दीख पड़ेंगे, परन्तु यह बात नहीं है कि वे हृदयहीन हैं, बल्कि वे बुद्धिमान् हैं। जिनको हृदय है, वे फौरन आपके साथ हो जायेंगे। आप यहाँ भी देख रहे हैं कि दस-बीस श्रीमान् लोग भूदान में लगे हैं, क्योंकि उनमें हृदय है। जिनके पास हृदय नहीं है, उनके पास बुद्धि होगी। अपना काम ऐसा होना चाहिए कि जिन्हें हृदय है, उनके हृदय पर असर होगा और जिन्हें बुद्धि है, उनकी बुद्धि पर असर होगा। अंग्रेज लोग एकदम भारत छोड़कर चले गये। क्या आप समझते हैं कि वे एकदम हृदयवान् बन गये ? ऐसी बात नहीं है। वे बुद्धिमान थे। उन्होंने समझ लिया कि वे यहाँ टिक नहीं सकते, टिकने की कोशिश करेंगे तो मार खायेंगे, हार जायेंगे। वे बुद्धिमानी से चले गये, तो उनके लिए यहाँ पर आदर भी रहा। हिन्दुस्तान में राजा-महाराजा खतम हुए। उन्होंने कोई झगड़ा नहीं किया और राज्य छोड़ दिया। उसके लिए उन्हें संपत्ति भी मिली और राजप्रमुख भी बनाया गया। अब वह राज्यप्रमुखपद भी खतम हो रहा है। उन्होंने झगड़ा नहीं किया, क्योंकि उनमें से कुछ हृदयवाले थे, वे हृदय से समझ गये और जो हृदयवाले नहीं थे, वे बुद्धिवाले थे, वे बुद्धि से समझ गये कि इसके आगे वे टिक नहीं सकते हैं। सारा प्रवाह राज्य के लिए विरुद्ध है, इतना वे समझ गये। जिनके हाथ में सत्ता और संपत्ति होती है, वे या तो हृदयवान होते हैं या बुद्धिमान होते हैं। जिसको हृदय भी नहीं और बुद्धि भी नहीं, ऐसा मनुष्य उनमें होता ही नहीं। क्योंकि दोनों में से एक भी न हो तो उनके पास सत्ता या संपत्ति आयेगी ही नहीं। इसीलिए मैं किसी भी श्रीमान् को हृदयहीन नहीं कहता। मैं कहता हूँ कि वह हृदयहीन दीख पड़ेगा, परन्तु होगा बुद्धिमान ही।

भूदान और संपत्तिदान में से नैतिक ताकत पैदा होगी, तो हृदयवाले श्रीमान् साथ हो जायेंगे और बाकी श्रीमान् भी आहिस्ता-आहिस्ता पीछे

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

आयेंगे। कुछ लोग पूछते हैं कि "आप सब श्रीमानों का हृदय-परिवर्तन कैसे करेंगे? कुछ लोगों में हृदय ही नहीं होता है, तो फिर आप उनका हृदय-परिवर्तन कैसे करेंगे?" मैं उन्हें जवाब देता हूँ कि जिन्हें हृदय नहीं है, उन्हें बुद्धि तो है, इसलिए हम उनका बुद्धि-परिवर्तन करेंगे। बाबा का भूदान का कार्य हृदयवान और बुद्धिमान कार्य है। यह प्रेम का कार्य है, इसलिए इसमें हृदयवाले आयेंगे। यह ऐसा कार्य है कि इसके बिना श्रीमान् बच ही नहीं सकते। वे समझ गये हैं कि जमाना बाबा के साथ है, अगर हम काल के साथ अनुकूल होंगे तो बचेंगे, नहीं तो हर्गिज नहीं बच सकते हैं। इसलिए बाबा को पूरा विश्वास है कि श्रीमानों की चिन्ता करने का कोई कारण नहीं है। चिन्ता गरीबों की ही करनी है। उनमें त्याग और प्रेम पैदा हो, उनकी हृदयशुद्धि हो, वे एक-दूसरे को मदद करके बलवान बनें, श्रीमानों के सामने दीन न बनें, बल्कि छाती खोलकर खड़े रहें और उनके दुर्गुणों को खतम करें। यह शुद्धि का कार्य गरीबों में हो, तो उनकी ताकत बनेगी।

मजदूरों का दान : वटबीज

यहाँ के मजदूर हमें संपत्तिदान देंगे, तो क्या करोड़ों रुपयों का ढेर लगेगा? वे करोड़ों का ढेर नहीं लगायेंगे,थोड़ा-थोड़ा देंगे। लेकिन यह जो थोड़ा है, वह वटबीज है। वटवृक्ष का बीज बोया जाता है, तो उसमें से प्रचण्ड वृक्ष पैदा होता है। आप मजदूर लोग जो थोड़ा-सा धन देनेवाले हैं, उसे बाबा बोयेगा। उसका उपयोग भूमिहीनों के लिए, गरीबों के लिए किया जायेगा। फिर बाबा आपकी ताकत लेकर श्रीमानों के पास पहुँचेगा और उनसे पूछेगा कि "देखो गरीबों ने इतना दिया है, तो आप भी दीजिये। उसने रुपये में दो पैसा दिया है तो क्या आप भी उतना ही देंगे?" फिर श्रीमान् समझ जायेंगे और प्रेम से दान देने के लिए सामने आयेंगे। प्रेम से नहीं आयेंगे, तो लज्जा से आयेंगे। एक अमेरिकन भाई ने हमसे पूछा कि "बाबा, क्या आपको सभी लोग प्रेम से दान देते हैं? कोई लज्जा से नहीं देते हैं?" हमने जवाब दिया कि लज्जा से देते हैं, तो ज्ञानपूर्वक देते हैं। छोटा बच्चा नंगा रहता है, उसे लज्जा नहीं मालूम होती। क्योंकि उसे ज्ञान नहीं होता। अगर ज्ञान होता तो लज्जा

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

मालूम होती। इसलिए जो लज्जा से दान देता है, उसे ज्ञान हुआ है कि देना धर्म है। इसलिए जो लोग मुझे प्रेम से देते हैं, उनका दान मुझे अत्यन्त मंजूर है और जो लज्जा से देते हैं, उनका दान मुझे अत्यन्त मंजूर है; क्योंकि एक ने हृदय से दिया है, दूसरे ने बुद्धि से दिया है। शास्त्रों में भी लिखा है कि "श्रद्धया देयम्, अश्रद्धया अदेयम्, ह्रिया देयम्, भिया देयम्।" श्रद्धा से दो, अश्रद्धा से मत दो, लज्जा से दो, भय से दो। यह शास्त्र की आज्ञा है। हम अगर नहीं देते हैं, तो हमारा भला नहीं होगा। इसको भय कहते हैं। यह भी ज्ञान है। हम नहीं देते हैं, तो लोग हमसे घृणा करेंगे, इसको लज्जा कहते हैं। यह भी ज्ञान है। जो लज्जा से देते हैं, जो भय से देते हैं, जो प्रेम से देते हैं, वे ज्ञान से देते हैं। इसलिए मुझे प्रथम चिन्ता आप गरीबों की करनी है।

एक भी मजदूर, एक भी गरीब, बिना दान दिये नहीं रहना चाहिए, आपको अगर आधा पेट खाना मिला, तो उसमें से भी एक कौर देना चाहिए वह तपस्या होगी। तपस्या से ही ताकत पैदा होगी।

सिंगनल्लर
३-१०-'५६

ग्रामीण अर्थशास्त्र : १५ :

अनाज की कीमत की कल्पना ही गलत

अनाज ऐसी वस्तु है कि उसके बिना किसी का नहीं चलता। वह उसको मिलना चाहिए। इसलिए यह महँगा भी नहीं बिक सकता। वास्तव में तो 'अनाज की कीमत' यह कल्पना ही छोड़ देनी होगी। जैसे हवा, पानी, सबको मुफ्त में मिलते हैं, वैसे अनाज भी बिना दाम मिलना चाहिए। अगर मुफ्त न मिल सके तो, कम-से-कम दाम होना चाहिए कि वह मुफ्त जैसा ही मालूम हो। लेकिन अगर अनाज का बहुत कम दाम मिलता है, तो किसानों को तकलीफ होती है। इसलिए न महँगा और न सस्ता, ऐसा बीच का रास्ता निकालना चाहिए। वह इतना महँगा भी न होना चाहिए कि दूसरे लोगों को तकलीफ हो और वह इतना सस्ता भी न होना चाहिए कि किसानों को तकलीफ हो।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

यह तो जाहिर है कि अनाज पैदा करके बहुत पैसा पैदा नहीं कर सकते हैं। किसान यह वात जानते हैं। अनाज की कुछ ज्यादा कीमत होनी चाहिए। ऐसी किसान लोग माँग करते हैं, परन्तु वे जानते हैं कि अनाज बहुत ज्यादा महँगा नहीं हो सकता। जो चीज सबको चाहिए वह महँगी नहीं हो सकती। इसलिए किसान तम्बाकू, गन्ना, जूट, कपास, हल्दी जैसी पैसे की चीजें बोते हैं। यह भी ज्यादा दिन नहीं चलेगा, क्योंकि दिन-ब-दिन जनसंख्या बढ़ रही है। इसलिए जितनी जमीन में दूसरी चीजें बोयी जायेंगी, उतने प्ररिमाण में अनाज कम मिलेगा। देश को नुकसान होगा। अगर ज्यादा गन्ना बोयें, तो यद्यपि शक्कर खाने की चीज है, फिर भी वह अनाज की जगह नहीं ले सकती। दो तोले शक्कर दो तोले अनाज के बदले में ले सकते हैं, लेकिन उससे ज्यादा शक्कर नहीं खा सकते। इसलिए अनाज कम पड़े, उतना गन्ना नहीं बो सकते। देश को कपास भी चाहिए क्योंकि कपास के विना कपड़ा नहीं बनेगा। लेकिन कपास ज्यादा बोयेंगे, तो कपड़ा खूब मिलेगा, परन्तु अनाज कम मिलेगा। अनाज के वदले में कपड़ा, तम्बाकू, गन्ना आदि नहीं चलेगा। जैसे-जैसे जन संख्या बढ़ती चली जायेगी, वैसे-वैसे अनाज के लिए ही जमीन का उपयोग करना होगा और पैसे के लिए जो चीजें बोते हैं, वे शायद छोड़नी पड़ेंगी, या तो कम-से-कम बोनी होगी। अनाज की कीमत बहुत ज्यादा नहीं हो सकती, इसलिए किसान को बहुत ज्यादा पैसा नहीं मिल सकता, यह निश्चित है। तो वह दूसरी कौन-सी चीज बोयेगा।

जमीन पोषण का साधन, पैसे का नहीं

किसान को पैसे के आधार पर अपना जीवन नहीं रखना चाहिए। उसके हाथ में दूसरे उद्योग होने चाहिए। तेल, शक्कर, जूता, कपड़ा आदि चीजें गाँव को खरीदने की चीजें नहीं होनी चाहिए। वे चीजें अपने गाँव में ही बननी चाहिए। किसान के हाथ में कुछ उद्योग होने चाहिए और उस उद्योग का माल शहर में बेचा जाना चाहिए और वह महँगा भी होना चाहिए। आज-कल गाँव के लोग बाहर से तेल खरीदते हैं। वह शुद्ध नहीं होता। इसलिए जवानी में बाल पक जाते हैं। इसलिए गाँववालों को अपना खुद का तेल

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

बनाना चाहिए और बाकी बेचना चाहिए। कपड़े का भी वैसा ही होना चाहिए। किसानों की चीज महँगी होनी चाहिए इसलिए खादी महँगी है। गाँववाले उसके खिलाफ शिकायत करते हैं कि खादी महँगी है। अरे, यह तो तुम्हारी चीज है। वह बेचने की चीज है, खरीदने की नहीं। उसका तो ज्यादा पैसा मिलना चाहिए, तभी किसानों को कुछ पैसा मिलेगा। क्योंकि अनाज में तो उनको खास पैसा मिलेगा नहीं। जनसंख्या बढ़ेगी, तो दूसरी चीजें पैदा नहीं कर सकेंगे और दस-बीस साल के बाद ज्यादा-से-ज्यादा जमीन अनाज में लगानी पड़ेगी। इसलिए तुम्हारी चीजें शहरों में बेची जानी चाहिए, तुमको खरीदनी नहीं चाहिए। इसलिए आप सब लोगों को खद्दर पहनना चाहिए और बची हुई खद्दर शहर में बेचनी चाहिए। शहरवालों को उसका ज्यादा दाम देकर खरीदना होगा। परन्तु आज तो देहात के लोगों का कुल जीवन पैसे पर खड़ा किया गया है, खेती के सिवा बाकी धंधे टूट गये हैं। आज जमीन पैसे का साधन हो गयी है, जो नहीं होना चाहिए। जमीन माता है। वह सबके पोषण का साधन हो सकती है, पैसे का साधन तो उद्योग होना चाहिए और उसका खुद उपयोग करना चाहिए। आज तो जमीन कोही पैसे का साधन बनाया गया। इसलिए गरीब लोगों के हाथ से पैसेवालों ने जमीन छीन ली। घर में शादी हुई तो सौ रुपए का कर्जा दो सौ रूपया लिखवाकर लेना पड़ा। दिन-ब-दिन रुपए बढ़ते गये और आखिर दो सौ रूपए के बदले में पाँच एकड़ जमीन देनी पड़ी। इस तरह जमीन की पैसे में कीमत हो गयी और किसान बेचारा बेहाल हो गया। घर में कल्याण (तमिल में अर्थ 'शादी') के बदले सर्वनाश हो गया और जमीन श्रीमानों के हाथ में आ गयी और लोगों ने जमीन की कीमत शुरू की। जमीन का मूल्य रुपए में नहीं हो सकता। दस हजार रुपए के नोट को गढ़े में रखकर ऊपर पानी डालोगे, तो फसल आयेगी? मिट्टी की कीमत पैसे में हो ही नहीं सकती। मिट्टी में से खाने की चीजें मिल सकती हैं, उसमें से पैसे नहीं मिल सकते। जमीन तो हमारी माँ है। माँ की कीमत पैसे में नहीं हो सकती। परन्तु आज जमीन पैसे का साधन बनी और वह चन्द लोगों के हाथ में आ गयी। क्योंकि पैसा किसानों के हाथ

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

की चीज नहीं है। नासिक के छापेखाने में पैसे छपते हैं। वहाँ एक रुपए के नोट बनाने में जो श्रम होता है, वही श्रम सौ और हजार रुपए के नोट बनाने में लगाना पड़ता है। सिर्फ दो चार शून्य और लगा दिये तो एक में से सौ और हजार रुपए के नोट हो गये। परन्तु एक रुपए के अनाज के बदले में सौ रुपए का अनाज बनाने में सौ-गुना श्रम करना पड़ता है। शहरवालों को पैसा बनाने म तकलीफ नहीं होती। आपने भी जमीन को पैसे का आधार बनाया, तो आपकी चोटी उनके हाथ में आ गयी। कुल जमीन गाँव के बड़े लोगों के हाथ में है। वे खुद तो खेती नहीं करते हैं। उनके बच्चे भी शहर के कालेजों में पढ़ते हैं। यह आपकी बड़ी भारी गलती है। जमीन की मालकियत ही नहीं हो सकती। कोई अगर गंगा-कावेरी नदी की मालकियत बनाये या कुएँ का मालिक बनकर पानी बेचना शुरू करे, तो चलेगा? वैसे ही जमीन की मालकियत नहीं हो सकती। वह पैसे की चीज नहीं, प्राण की चीज है। उस पर अपना प्राण टिकेगा। परन्तु आपने उसकी पैसे में कीमत आँकी। उसके परिणामस्वरूप गाँव के उद्योग टूट गये और गाँव के लोग चूसे गये। बहुत ज्यादा लूटनेवाले शहर में होते हैं। गाँव के लोगों को लूट कर पैसा इकट्ठा करने वालों को शहरवाले खूब लूटते हैं। लूटने का तो शहर में व्यापार ही चलता है। इसलिए गाँव को लूटने वाले, गरीब लोगों की तुलना में ज्यादा पैसेवाले होते हैं। परन्तु शहर में तो वेह लूटे जाते हैं। क्योंकि जमीन से वे कितने पैसे कमायेंगे? इस तरह शहरों में एक-दूसरे को मारकर लोग जीते हैं। इससे समाज कभी सुखी नहीं हो सकता, समाज में शान्ति नहीं हो सकती। हृदय का समाधान नहीं हो सकता और जीवन में कभी पूर्णता नहीं आयेगी। क्योंकि जहाँ देखो वहाँ सब चीजों की कीमत पैसे में होने लगी है, और पैसे शहरवालों के हाथ में हैं। आपको सुखी होने के लिए चार-पाँच चीजें करनी होंगी—(१) जमीन पैसे की चीज नहीं होनी चाहिए, जमीन पैसे का आधार नहीं होनी चाहिए, (२) गाँववालों को पैसे की ज्यादा जरूरत नहीं होनी चाहिए, (३) थोड़ा पैसा चाहिए तो उसके लिए गाँव में उद्योग चाहिए और उन उद्योगों की चीजें बाहर बेंचनी पड़ेगी, (४) उन उद्योगों की चीजों का दाम ज्यादा होना चाहिए, और (५) गाँव में सब लोगों को जमीन मिलनी चाहिए। जैसे शादी करने का अमीर-गरीब आदि सभी को हक है, क्योंकि

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

उसकी सबको जरूरत है, वैसे देहात में हर मनुष्य को जमीन मिलनी चाहिए। इसलिए गाँव की जमीन सब में बाँटो। जमीन का मूल्य पैसे में नहीं हो सकता। इतनी उसकी कीमत है।

यह गाँव का अर्थशास्त्र है। यह ग्रामीण अर्थशास्त्र आप समझ लेंगे, तो आपको भूदान समझाने की जरूरत नहीं रहेगी। आप गाँव में जमीन बाँट लेंगे, गरीबों को जितनी जमीन चाहिए उतनी दान में देंगे, गाँव म ग्रामोद्योग खड़ा करेंगे। महत्व की चीजें बाहर से नहीं खरीदेंगे, खुद बनायेंगे और जो चीजें बाहर बेचेंगे, उनका दाम ज्यादा रखा जायेगा। यह सब इन्तजाम संघशक्ति से किया जायेगा। अलग-अलग बेचने जायेंगे तो ज्यादा पैसा नहीं मिलेगा, इसलिए आप को गाँव का एक संघ बनाना होगा। यही हमारा ग्रामीण-अर्थ-शास्त्र है।

सिवा गीरी (कोयम्बतूर)
२७–१०–५६

गाँव-शासन निरपेक्ष हो : १६ :

आज गाँव में अनेक प्रकार के भेद हैं ,जो मिटाने होंगे। इसके लिए गाँव की एक समिति बनानी होगी। गाँव में २१ साल के ऊपर के जितने स्त्री-पुरुष हैं, उन सबकी एक सभा बनेगी, वे लोग सबकी एक-राय से ८–१० व्यक्तियों की एक समिति चुनेंगे, आजकल की तरह बहुमति से नहीं। आज-कल तो यह होता है कि७लोगों ने इधर राय दी और ६ लोगों न उधर राय दी, तो ७ वालों की जीत मानी जाती है। फिर गाँव में ७ और ६ वालों के बीच कटुता कायम रह जाती है। जिस गाँव के दो टुकड़े हो जाते हैं, उस गाँव का कभी भला नहीं हो सकता। इसलिए अपने यहाँ पश्चिम से चुनाव का जो तरीका आया है, वह गाँवों के लिए खतरनाक है। गाँव के चुनाव सर्वसम्मति से होने चाहिए। उसमें किसी प्रकार का जातिभेद न हो।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

गाँव की जिम्मेवारी गाँववालों पर

भूदान आन्दोलन में जमीन हासिल हुई और २-३ साल होने पर भी वह बाँटी नहीं गयी है। होना तो यह चाहिए कि गाँव के लोगों की एक आम सभा बुलाकर भूमिहीनों की राय से जमीन बाँट देनी चाहिए। फिर मालिकों की तरफ से उन्हें और मदद पहुँचायी जानी चाहिए। यह सब काम गाँववालों को ही करना चाहिए और फिर जिन्होंने दान दिया और जिन्हें दान मिला, उनके हस्ताक्षर लेकर भूदान-समिति के पास भेद देना चाहिए। भूदान-समिति सिर्फ रेकार्ड रखेगी। अगर किसी ने सलाह माँगी तो सलाह देगी, साहित्य निर्माण करेगी, उसका प्रचार करेगी और लोगों को समझाने का काम करेगी। लेकिन हर गाँव का कारोबार क्या भूदान-समिति चलायेगी? वह काम तो गाँववालों को ही करना होगा। जमीन देना भी गाँव वालों का काम है, जमीन बाँटना भी उनका काम है, भूमिहीनों को और मदद देना भी उन्हींका काम है और भूदान-समितिके पास इत्तला भेजना भी उन्हींका काम है। अपने गाँव में ग्रामराज्य बनाना भी उन्हींका काम है। गाँव में कोई बेकार न रहे, इसकी जिम्मेवारी भी गाँववालों को ही उठानी चाहिए। आप जो चीजें इस्तेमाल करते हैं, वे ही उद्योग देने होंगे। आपको कपड़ा चाहिए और शहर से मिल का कपड़ा खरीदते हैं। आपको तेल, गुड़ चाहिए लेकिन आप बनाते नहीं हैं, शहर से खरीदते हैं। तो फिर आप बेकारों को कौन-सा काम देंगे? सब लोगों का केवल खेती से काम नहीं चल सकता। गाँववाले कच्चा माल पैदा करके, उसे बेचकर, शहर का पक्कामाल खरीदते रहेंगे, तो हमेशा घाटे में रहेंगे। इसलिए गाँव में उद्योग खड़े करके सबको काम देना चाहिए। गाँव के कारोबार के लिए गाँव की समिति बनाना, गाँव में सबको उद्योग देना, गाँव की सब शादियों का गाँव की तरफ से इन्तजाम करना, गाँव की तरफ से एक दूकान चलाना, जिससे गाँववालों को अच्छा माल मिले और उन्हें कोई ठगे नहीं, बाहर से चीजें खरीदना और गाँव की चीजें बाहर भेजना आदि सब काम उस दूकान के जरिये होंगे। इस तरह गाँववालों में यह उत्साह उत्पन्न होना चाहिए कि हमें अपने गाँव का राज्य बनाना है,

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

हम अपने गाँव को सुन्दर वनायेंगे, गाँव में ज्ञान, आरोग्य और सम्पत्ति बढ़ायेंगे, धंधे वढ़ायेंगे, गाँव की पैदावार बढ़ायेंगे, मिलजुलकर काम करेंगे और बाँट कर खायेंगे। जिस तरह घर का प्रमुख व्यक्ति घरवालों की जिम्मेवारी उठाता है, उसी तरह गाँव का कोई भी मनुष्य गाँव की समिति के पास जाकर काम माँगेगा तो उसे फौरन काम दिया जायेगा। इस तरह गाँव वालों को काम करना है।

कुछ लोग पूछते हैं कि भूदान में जो इतनी जमीन मिली है, वह कैसे बँटेगी ? आरम्भ में ज्यादा काम नहीं हुआ था, इसलिए भूदान-समिति के जरिये बँटवारे का काम कराया, परन्तु अब तो गाँव-गाँव और घर-घर में काम होना चाहिए। पाँच लाख गांवों का इतना विशाल काम क्या कोई भूदान-समिति करेगी ? वह काम तो पाँच लाख गाँवों को ही करना होगा।

अभी सरकार ने पाँच साल के लिए एक योजना बनायी है। उसमें ४८०० करोड़ रुपये की सम्पत्ति लगनेवाली है। याने एक साल के ९६० करोड़ रुपये, एक महीने में ८० करोड़ रुपये। अपने देश में ३६ करोड़ लोग हैं, याने हर मनुष्य के पीछे हर महीना सवा दो रुपया, याने रोज के पाँच पैसे खर्च होंगे। इन पाँच पैसों में ही रास्ते बनेंगे, रेलवे बनेगी, गाँव की सेवा होगी, खेती बढ़ेगी, धंधे वढ़ेंगे, लोंगों को सब प्रकार की मदद दी जायेगी। पाँच पैसे याने एक मनुष्य का एक घंटे का काम। अब आप ही सोचें कि सरकार जो वड़ी-बड़ी योजनाएँ वना रही है, वह आपकी शक्ति का कितना हिस्सा है ? आप के एक घंटे की ताकत का काम सरकार करने जा रही है। आदमी २४ घंटों में से १४ घंटे खाना, सोना, आराम आदि में बितायेगा, तो भी उसके पास काम के १० घंटे पड़े हैं। आपकी १० घंटे की ताकत है और सरकार जो योजना बना रही है, उससे आप को १ घंटे की ताकत दे रही है।

सरकार के पास क्या ताकत है ?

लोग कहते हैं कि सरकार सब कुछ करेगी। कहीं पर वड़ा भारी नल हो, तो उसका पानी ज्यादा है या बूंद-बूंद बारिश का ? सरकार के जरिये जो

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

काम होगा, वह हर घर में नहीं होगा। कुछ खास जगहों पर होगा, तो एक बड़े नल का पानी बहता हुआ दीखेगा। आप कहेंगे कि सरकार न कितना बड़ा काम किया, बंगलोर में सेलम रेलवे बनायी। लेकिन घर-घर में जो काम होता है, वह बूंद-बूंद बारिश के समान है। आप लोग एक प्रस्ताव कीजिये कि जिस तरह स्कूलवाले, साल में एक-दो महीनों की छुट्टी लेते हैं, उसी तरह सरकार एक साल की पूरी छुट्टी ले। फिर दुनिया का क्या बिगड़ता है, जरा देख लीजिए, किसान खेती करते रहेंगे, धंधेवाले अपना-अपना धंधा करेंगे, बाजार में बेचनेवाले बेचेंगे, खरीदनेवाले खरीदेंगे, जिनकी शादियाँ होनेवाली हैं, उनकी शादियाँ होंगी, मरनेवाले मरेंगे, जिनको स्मशान ले जाना है, उनको वहाँ ले जायेंगे ; जो पैदा होनेवाले हैं वे पैदा होंगे, बच्चों को उनकी मातायें दूध पिलायेंगी। आरोग्य मंत्री नहीं होगा तो उसके बिना क्या रुकेगा ?

कुछ लोग कहते हैं कि पुलिस न हो, तो चोरियाँ बढ़ेंगी। लेकिन पुलिस ही चोरी करती है। पुलिस न हो तो चोरियाँ कम होंगी। चोरी इसलिए होती है कि कुछ लोग अपने पास बहुत ज्यादा धन रखते हैं। किसी गरीब मनुष्य ने अपनी बीबी-बच्चों को खिलाने के लिए काम ढूंढा। परन्तु काम नहीं मिला, इसलिए उसने किसी श्रीमान के घर में चोरी की। उसे पकड़ कर कोर्ट में ले जाया जाता है और दूसरे एक बेकार मनुष्य के सामने खड़ा कर दिया जाता है, जिसे न्यायाधीश कहा जाता है। आप अगर झगड़ा नहीं करेंगे, तो उसे उस कुर्सी पर बैठने के सिवा और कोई काम नहीं रहेगा, वह बेकार मनुष्य इस चोर को तीन साल की सजा देता है। एक बेकार ने ५० रुपये की चोरी की, इसलिए उसे सजा देने के लिए हजार रुपये माहवार पानेवाला दूसरा बेकार रखा जाता है। जिसे सजा होती है, उसे तो जेल में ठीक से समय पर, दिन में तीन बार खाना मिलता है। १४घंटे आराम मिलता है,वास्तव में सजा तो उसके बीबी-बच्चों को होती है, जो बाहर भूखों मरते हैं। क्योंकि उनके घर में जो कमाने-वाला था, उसीको आपने जेल में रखा। वास्तव में ऐसे चोर को तीन साल की सजा नहीं, बल्कि तीन एकड़ जमीन देनी चाहिए और कहना चाहिए कि इस पर मेहनत करके वह अपने बीबी-बच्चों का पालन-पोषण करे। फिर वह चोरी क्यों करेगा ? चोरों का भय बिल्कुल व्यर्थ है। चोरों का भय चोरों ने निर्माण

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

किया है। जिन्होंने खूब संपत्ति जमा कर ली, वे चोर ही हैं और उन्हींने चोरों का भय पैदा किया है। और उनके वास्ते पुलिस, कोर्ट, न्यायाधीश,जेल आदि सब बनाये गये हैं। आप सब लोग चोरी नहीं करते हैं। क्या इसलिए नहीं करते हैं कि चोरी के लिए सजा है? क्या यह कानून, कोर्ट, जेल नहीं होते, तो आप चोरी करते? मनुष्य के हृदय में यह भावना है कि चोरी नहीं करनी चाहिए। यह भावना संतों ने पैदा की है।

घर-घर में माताएँ बच्चों को दूध पिला रही हैं। क्या वे इसलिए पिलाती हैं कि न पिलाने पर जेल भेजी जायेंगी? लोग अपना सारा काम खुद कर लेते हैं, परन्तु आपको लगता है कि सरकार परमेश्वर है। कुछ लोग कहते हैं कि परमेश्वर है ही नहीं। अगर उनसे पूछा जाय कि "फिर कौन है?" तो वे कहते हैं कि सरकार है। याने वे सरकार की भक्ति करते हैं। वे कहते हैं कि हम "पेरुमान" (शिव)को भी नहीं जानते हैं और "पेरुमाल" (विष्णु) को भी नहीं जानते, हम तो सरकार को जानते हैं। जैसे कोई भक्त भूत को मानते हैं, कोई पिशाच को मानते हैं, वैसे ये सरकार को मानते हैं। वे समझते हैं कि जो कुछ ताकत है, वह सरकार में है। अरे, सरकार के पास क्या ताकत है? क्या आपके घर का झाड़ू सरकार ने लगायां? आप रोज झाड़ू लगाते हैं। इसलिए आपका घर साफ है। लड़का वीमार होने पर क्या आप हेल्थ मिनिस्टर को तार भेजते हैं? आप खुद अपने वींमार बच्चे की सेवा करत हैं। सारे काम तो आप खुद ही करते हैं, फिर भी ऐसा मानते हैं कि सरकार के विना नहीं चलेगा और सरकार काम करेगी तभी काम होगा। गाँव-गाँव के काम, गाँव-गाँव के लोग ही कर सकते हैं। सरकार सिर्फ ऐसे काम करेगी, जो सारे देश के लिए करने होते हैं। गाँवों का संयोजन ,रेलवे, पोस्ट, परदेश के साथ सम्बन्ध, खानों का इन्तजाम आदि काम सरकार करेगी, परन्तु गाँव-गाँव की दौलत बढ़ाने का काम, गाँव की समस्या हल करने का काम गाँववालों को ही करना चाहिए। आप क्या खायेंगे, पियेंगे यह आपको ही तय करना होगा, सरकार नहीं करेगी।

अब तो जन-आंदोलन चले

कुछ लोगों ने हमसे कहा कि यहाँ पर भूदान-समिति को काफी जमीन

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

मिली है, परन्तु अभी तक बाँटी नहीं गयी। हमने उनसे कहा कि इसमें भूदान-समिति का सवाल ही क्या था, आपको जमीन बाँट देनी थी,क्या आप बाँटते तो आपको कोई फाँसी पर चढ़ा देता? सिर्फ यही करना है कि बँटवारे के जो नियम हैं, उसके अनुसार बाँटना है, जिससे कि ठीक मनुष्य को जमीन मिलेगी और किसी प्रकार का पक्षपात नहीं होगा। कल अगर तमिलनाडमें शादी-समिति बनेगी, तो आपके यहाँ की शादी उसके जरिये होगी ? वह काम तो आपको करना होगा। इसी तरह जमीन लेना, बाँटना, यह सब आपका काम है । बाबाकी बात समझकर आप सब लोग गाँव में एक जगह इकट्ठा हो जाओ और फिर सोचो कि अपने गाँव में कितने भूमिहीन हैं,उन्हें कितनी जमीन देनी पड़ेगी। फिर हर कोई कहेगा कि मैं इतना देता हूँ, इस तरह पर्याप्त जमीन हासिल करने पर गाँव की सभा करके जमीन बाँटनी चाहिए। फिर इसकी इत्तला भूदान-समिति के पास भेज देनी चाहिए कि हमारे गाँव में जमीन का बँटवारा हो गया। अब इसके आगे क्या करना है, सुझाइये। फिर भूदान-समिति को सुझाना होगा तो सुझायेगी। लेकिन काम आपकी ही अक्ल से होगा।

बाबा का एक बड़ा सिद्धान्त है कि वह किसी को आज्ञा नहीं देता है। आपको तो वह आज्ञा देगा ही नहीं, परन्तु उसके साथ दस-बीस साल रहे हुए साथियों को भी वह आज्ञा नहीं देगा। कोई सलाह पूछेगा तो बाबा सलाह देगा । उस व्यक्ति को बाबा की सलाह मानने और न मानने का अधिकार है। वह जो करना चाहता है, कर सकता है। अपनी सत्ता हम किसी पर भी लादना नहीं चाहते। हम प्रेम से समझायेंगे और आप अपने विचार से करेंगे। भूदान-समिति आपको सलाह देने के लिए है, आपकी शक्ति को रोकने के लिए नहीं है, आपके हाथ बाँधने के लिए नहीं है, बल्कि आपके हाथों को थोड़ी मदद पहुँचाने के लिए है , यह समझकर आप काम कीजिये। हर गाँव में दाताओं की समिति बनाओ,जो आगे काम करेगी। दाता अपने गाँव का काम पूरा करके आसपास के गाँवों में जायेंगे, अपने मित्रों से जमीन हासिल करेंगे, उसका बँटवारा करेंगे। वे अपना संघ बढ़ाते जायेंगे। इस तरह एक बड़ी विशाल सेना खड़ी होगी। किसी पर जबरदस्ती नहीं करनी है, किसी को आज्ञा नहीं देनी है। सब काम प्रेम से करना है। होना तो यह चाहिए कि गाँव-गाँव का काम गाँव-

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

गाँव के लोगोंने उठा लिया है। फिर सरकार उनसे पूछती है कि हम आपकी क्या मदद कर सकते हैं, फिर गाँववाले अपनी शर्तों पर सरकार की थोड़ी मदद लेते हैं। आपको अपनी शक्ति से काम करना है। फिर आप सरकार से थोड़ी-सी मदद ले सकते हैं। यह बात याद रखिये कि आपके पास बहुत शक्ति है और उसका एक थोड़ा-सा हिस्सा सरकार के पास है।

तांडम पाळेयम
२७-१०-'५६

भोग योगमय बने : १७ :

अभी मैं जो बोलने की सोच रहा था, वह कुल विचार इस भजन में आ गया। "भोग मेल योगत्तीन पोलिने" याने भोग ही योगमय करना है, यह हमारी सर्वोदय-योजना का सार है। अमेरिका में उत्पादन-वृद्धि के काम चलते हैं। लेकिन उनकी सारी योजना भोग की है। उसमें योग कुछ भी नहीं है। आज अमेरिका में क्या हालत है ? धन बहुत है, जमीन बहुत है, सुवर्ण बहुत है, कारखाने बहुत हैं, विद्यालय, कालेज बहुत हैं, उसके साथ-साथ स्थल - सेना और जल-सेना भी बहुत है, लेकिन शान्ति नहीं है, प्रेम नहीं है। उनका आदर्श हमें नहीं चाहिए, वैसी भोग की योजना हम करेंगे तो हिन्दुस्तान में मार खायेंगे। वह योजना न हिन्दुस्तान में बन सकेगी, न उसमें हिन्दुस्तान की अपनी शक्ति प्रगट होगी। इसलिए ग्रामदान के कार्य में हम ऐसे विषय ला रहे हैं, जिनमें परमार्थ और व्यवहार एक रूप हो जायँ। "नान एनदु" -'मैं, मेरा' छोड़ना चाहिए। यह बात वेदांत हमेशा कहता है। यह कैसे छोड़ा जाय ? सब प्रकार से संसार का त्याग करके यहाँ भोग और योग अलग होंगे। अगर आप लोग चाहते हैं, तो आपको भोग छोड़ना होगा। यह हिन्दुस्तान में अब तक चला। आग्रहपूर्वक कहा गया कि भोग की परवाह मत करो, योग करो। इससे बिलकुल उल्टी चीज अमेरिका में शुरू है। वे योग नहीं जानते। परवाह नहीं, भोग बढ़ना चाहिए, जीवनस्तर बढ़ना चाहिए। यह उन लोगों को बहुत प्रिय है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

काम को सेवा का रूप दें

अपने देश में हम कौन-सी योजना बनाते हैं ? हमने ऐसी योजना बनायी कि "नान एनदु" 'मैं-मेरा' न रहे कि और 'हम-हमारा' चले ? उसमें भोग को ही योग का रूप आता है। आज क्या होता है ? किसान खेती में मेहनत करता है। किसान स्वार्थी माना जाता है, सेवक नहीं। वह भी अपने को सेवक नहीं मानता। उल्टे सरकारी नौकरों की सेवा मानी जाती है। वे दावा भी करते हैं कि हमारी यह सेवा है, हम सेवक हैं। सबसे बुनियादी सेवक किसान हैं। लेकिन वह दावा नहीं करता कि मैं सेवक हूँ। क्योंकि वह समाज के लिए उत्पादन करता है। वह यह भावना नहीं रखता कि अपने लिए उत्पादन करता हूँ। यही उसकी भावना होती है। जो उत्पादन होता है वह बेचता है, पैसा हासिल करता है। बेचने में दूसरों की सेवा का हेतु नहीं रहता। सेवा हो जाती है। परन्तु विचार सेवा का नहीं रहता। इसलिए रात-दिन सेवा-कार्य करते हुए भी उसे सेवकत्व का अनुभव नहीं है। ग्रामदान के गाँवों में किसान कहेगा कि मैं अपने गाँव के लिए सब कर रहा हूँ। मैं अपने लिए कुछ नहीं करता हूँ। काम तो पहले जैसा करेगा। परन्तु उसके काम को सेवा का रूप आयेगा। पहले उसे भोग का रूप था। इसलिए ग्रामदान में उसे भोग तो मिलेगा, लेकिन वह सबको मिलेगा। इसलिए उस भोग को योग का रूप आयेगा, याने जिसे भोग कहते हैं वह योग बन गया। योग के समान भोग हो गया। मैं सोच रहा हूँ कि यही बात आज आप से कहूँ कि अपनी योजना में केवल उत्पत्ति की बात नहीं है। उत्पत्ति तो होती है, अगर नहीं करनी है तो ग्रामदान की जरूरत क्या है ? खेती सब मिलकर करेंगे, उत्पादन बढ़ायेंगे, यह तो है। परन्तु यह सारा ऐसे ढंग से होगा, जिससे आत्मा का का विकास होगा। उसके लिए जो भोग बाधक है उसे नहीं करेंगे। हरएक भोग आत्मा के विकास के लिए बाधक है। ऐसा मानने का कोई कारण नहीं है। कुछ भोग योग की बराबरी में आते हैं। ये ही हम करते हैं।

भोगो रोगस्य कारणम्

यह दुनिया भर का अनुभव है कि उत्पादन बढ़ता है, उसके साधन बढ़ते हैं।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

डाक्टर भी बढ़ रहे हैं और दवाइयाँ भी बढ़ रही हैं। रोगी भी बढ़ रहे हैं, और नये रोग भी बढ़ रहे हैं। डाक्टरों की अकल काम नहीं करती, कहते हैं ऐसे नये-नये रोग पैदा हो रहे हैं जिनका हमने कभी खयाल ही नहीं किया था। ऐसा क्यों? इतने उत्तम-उत्तम ज्ञानी डाक्टर होने पर भी यह हालत क्यों? कारण यही है कि समाज भोगपरायण हो गया है। आरोग्य भी भोग के के लिए चाहते हैं। आयुर्वेद-शास्त्र में लिखा है कि परमेश्वर प्राप्ति के लिए बुद्धि होनी चाहिए। बुद्धि निर्मल रहे, इसलिए शरीर भी निर्मल होना चाहिए। इसलिए शरीर साफ करने के लिए आयुर्वेदशास्त्र का आरंभ हो गया है। याने देहारोग्य, बुद्धि-शुद्धि ईश्वर सिद्धि के लिए है। एलोपैथी वगैरह पश्चिम से आयी हैं। वे कहती हैं कि शरीर में स्वास्थ्य रहेगा, तभी दुनिया का आनंद भोग सकेंगे, नहीं तो नहीं भोग सकेंगे। आयुर्वेदशास्त्र में और ऐलोपैथी में इतना फर्क पड़ता है। एक कहता है शरीर-शुद्धि और बुद्धि-शुद्धि द्वारा परमेश्वर-प्राप्ति और दूसरे का उद्देश्य है, शरीर के आरोग्य से भोग प्राप्त करना और आनंद लूटना। उन भोगों से ही रोग पैदा होता है, क्योंकि उसमें शुद्धि का खयाल नहीं रहता, आनंद का खयाल रहता है। इस वास्ते चाहे वह भोग आरोग्य के विना न सधता हो, तो भी वह कैसे भोग सके, इसलिए आयुर्वेदशास्त्र बनाते हैं। तो भी रोग कम नहीं होते हैं। अभी साल-डेढ़ साल पहले से अखबार में मजेदार विषय चल रहा है। कैन्सर के रोग का धूम्रपान के साथ कहाँ तक संबन्ध है, परस्पर विरोधी कई प्रकार के अभिप्राय प्रसिद्ध हो रहे हैं। दो दिन पहले एक निश्चित अभिप्राय प्रसिद्ध हुआ है। वह यह है कि धूम्रपान से कैन्सर बढ़ता है। अक्सर स्त्रियाँ सिगरेट कम पीती हैं, इसलिए उन्हें पुरुषों की बराबरी में कैन्सर कम होता है। आज तक केवल बीड़ी पीने से कैन्सर होता है, कि और भी कारणों से होता है, यह चर्चा थी। अब तो निश्चित अभिप्राय डाक्टर ने प्रकट किया है कि बीड़ी पीने से ही कैन्सर होता है। अभी भी आयुर्वेदशास्त्र में संशोधन की गुंजाइश रही होगी तथा और भी प्रयोग होंगे।

भोग के साथ योग

समाज को भोग और योग दोनों चाहिये। भोग के बिना शरीर नहीं

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

टिकता, इसलिए समाज भोग के विना चलेगा नहीं। योग के विना भोग अच्छा चलेगा, ऐसा भी नहीं है। आज अमेरिका में तरह-तरह के मैनिया होते हैं। उसका एक वड़ा विभाग है। हम पागलपन याने पागलपन समझते हैं परन्तु अमेरिका में उसके पचासों प्रकार हैं। यह क्यों है ? आत्महत्याएँ बहुत परिमाण में होती हैं। पश्चिमी समाज में यह देखते हैं कि शादी की चर्चा हुई, लड़की ने स्वीकार नहीं किया, लड़के ने आत्महत्या की। परीक्षा में फेल हुआ, आत्महत्या की। वाप के साथ झगड़ा हुआ, वाप नाराज हुआ, लड़के ने आत्महत्या की। व्यापार में नुकसान हुआ, व्यापारी ने आत्महत्या की। सिनेमा शो देखने जाना था, टिकट नहीं मिला, आत्महत्या की। बिलकुल छोटी-छोटी चीजों के लिए आत्महत्याएँ होती हैं। भोग की कमी नहीं है। फिर भी यह सारा क्यों है ? क्योंकि योग नहीं है।

आज हम चर्चा करते थे, सर्वोदय-योजना में ग्रामोद्योग कहाँ तक चलेगा, खादी चलेगी कि नहीं, हाथ कागज रहेगा कि नहीं, अंवर चरखा चलेगा कि सादा चरखा चलेगा, विजली का उपयोग कहाँ होगा ? कुएँ से पानी खींचने में विजली लगानी चाहिए कि नहीं? आहार में नमक, मिर्च होना चाहिए कि नहीं ? ऐसी पचासों चर्चाएँ हुईं समझना चाहिए कि सबमें योग होगा।

यन्त्र समय और परिस्थिति पर आधारित हो

अव चरखा चलेगा कि तकली चलेगी, कि अंवर चलेगा, यह स्वतन्त्र विषय है। जिस देश में जनसंख्या ज्यादा है, खेती कम है, वहाँ खेती में यंत्र नहीं चलेगा। उसमें भी यंत्र चल सकता है, अगर बैलों को खाना तय किया होगा। लेकिन बैलों की रक्षा करनी है, तो यंत्र का उपयोग नहीं होगा। जिस देश में एक व्यक्ति के पीछे औसतन १५ एकड़ जमीन है, वहाँ खेती में भी यंत्र आ सकते हैं। फिर भी कुछ काम हाथों से करना होगा। उसके बिना हाथ का समाधान नहीं होगा। फिर भी मनुष्य कम हैं, वहाँ यंत्र हर समाज में योग्य अथवा अयोग्य हैं, ऐसा नहीं कह सकते। वह समय पर, परिस्थिति पर आधारित है, देश-काल-मान पर आधारित है। हमने कहा है कि यंत्र के कई प्रकार होते हैं—

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

१. कुछ यंत्र संहारक होते हैं। मनुष्य का संहार करने का काम जो यंत्र करते हैं, ऐसे यंत्र हमें बिलकुल नहीं चाहिए।

२. समय बचानेवाले कुछ यंत्र होते हैं। वे संहार नहीं करते, उत्पादन भी नहीं करते, सिर्फ समय बचाते हैं। जैसे मोटर, रेलवे, हवाई जहाज़ ये सिर्फ समय बचाते हैं। ऐसे यंत्र हमें उचित मर्यादा में चाहिए। बाबा पैदल चलता है। कुछ लोगों को लगता है कि बाबा दकियानूस है। यह युग ऐसे पुराने ढंग का नहीं है। बाबा को अंबर चाहिए। दूसरा व्यक्ति कहता है कि मुझे अंबर नहीं चाहिए, सादा चरखा चाहिए। बाबा रेल में नहीं जाता है, यह शख्स रेल में जाता है। पर इस पर मैं कोई आक्षेप नहीं करना चाहता। बाबा जमीन पर चलता है, क्योंकि वह जमीन का काम करता है। वह हवाई जहाज में घूमता, तो उसे हवा मिलती; जमीन नहीं मिलती। मैं नहीं जानता, पर ऊपर हवा कम होती होगी। यहीं कहीं नजदीक घूमा, तो हवा मिलेगी, परन्तु जमीन नहीं मिलेगी। इसलिए बाबा पैदल चलता है। परन्तु रेल, हवाई जहाज आदि सब बाबा चाहता है। इतना ही नहीं, वह तो इन यंत्रों में सुधार भी चाहता है। परन्तु उसमें मर्यादा भी होनी चाहिए। जहाँ उचित है, वहाँ उसका उपयोग करना चाहिए। सायकिल पाँव की मदद के लिए आई है। पाँव के बदले नहीं। इसलिए जहाँ पाँव से जा सकते हैं, वहाँ सायकिल का उपयोग नहीं करना चाहिए। थोड़े में, हम समय-साधन यंत्र चाहते हैं। कागज का धंधा एक समाज में करेंगे, एक समाज में नहीं करेंगे। परन्तु मान लीजिये, हमें हाथ-कागज चाहिए। संभव है, "पल्प" बनाने का काम हम मशीन से करें। बाकी काम हाथ से करेंगे। यह सारे तफसील के विषय हैं। समय-समय पर फर्क करना होगा। हम संहारक यंत्र बिलकुल नहीं चाहते हैं। समय-साधक-यंत्र जरूर चाहते हैं, परन्तु उसमें मर्यादा चाहते हैं।

३. उत्पादक-यंत्र दो प्रकार के होते हैं। कुछ यंत्र मनुष्य को मदद देते हैं। कुछ यंत्र मनुष्य के शरीर को क्षीण करते हैं, बेकार बनाते हैं, आनंद को क्षीण करते हैं, बुद्धि-विकास पर रोक लगाते हैं। ऐसे दो प्रकार हैं, एक मनुष्य का पूरक है और दूसरा मनुष्य-मारक है। जो मनुष्य के पूरक होते हैं, उन्हें

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

हम चाहते हैं और जो मारक होते हैं उन्हें हम नहीं चाहते। लेकिन उत्पादन यंत्र में भी कौन-सा मारक है और कौन-सा पूरक है, इसमें हमेशा के लिए निर्णय नहीं किया जा सकता। जो निर्णय देंगे, वह उस काल के लिए, उस स्थल के लिए लागू होगा, तो करेंगे। स्थल बदलेगा, तो यंत्र बदलेगा। काल बदलेगा, तो यंत्र बदलेंगे। समाज बदलेगा, तो यंत्र बदलेंगे। परस्पर चर्चा के लिए गुंजाइश रहेगी। भिन्न-भिन्न अभिप्राय लोग बतायेंगे। हमारा अभिप्राय दूसरों से भिन्न रहेगा, दूसरों का हम से भिन्न रहेगा। भिन्न-भिन्न अभिप्राय से समाज बदलेगा। परन्तु बुनियादी एक चीज कायम रहेगी। भोग को योग बनाना है। दोनों का विरोध पैदा नहीं करना है। भोग में प्रतियोगिता होती है। भोग के परिणामस्वरूप चित्त चंचल रहता है, यह मर्यादा है। इन मर्यादाओं में हम सर्वोदय का काम करना चाहते हैं। सर्वोदय-विचारवालों को इस पर अच्छी तरह विचार करना चाहिए, नहीं तो दो पक्ष होंगे।

धर्म का सार भूदान और ग्राम-दान में

हम मानते हैं कि भोग एक दोष है। परन्तु वह देह के साथ जुड़ा है। उसमें हम मर्यादा रखेंगे। भोग-परायण वृत्ति नहीं होनी चाहिए। मुझे एक वाक्य याद आता है, **"सफिशंट अनटू दी डे इज दी ब्रेड देयरआफ"** भोग का संग्रह हम नहीं करेंगे। भोग लेंगे तो मर्यादा में लेंगे और सब मिलकर बाँटकर भोगेंगे। बचे हुए समय में हम भगवान् की भक्ति करेंगे, भजन गायेंगे। इसलिए भोग को ही योग बनाना, यह सर्वोदय-योजना का सूत्र है। वह माणिक्य वाचकर के भजन में हमें अभी सुनने को मिला।

ग्रामदान का आन्दोलन रुकेगा नहीं, बढ़ेगा। उसमें से एक वृक्ष बढ़ेगा। एक अजीब बात है, हम जाते हैं, लोगों को समझाते हैं और लोग मालकियत छोड़ते हैं। क्या लोग अर्थशास्त्र समझते हैं? क्या रूस की क्रान्ति और चीन की क्रान्ति हम उन्हें समझाते हैं? उन्हें प्रेम की बात समझाते हैं। हम समझते हैं, इससे बढ़कर कोई धर्म नहीं है, जिसमें सब धर्मों का सार आया है। दुनिया के सब प्रसिद्ध धर्मों का सार भूदान और ग्रामदान में आया है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

हमारा नम्र दावा है कि भूदान और ग्रामदानके जरिये परमेश्वर की भक्ति का कार्य हो रहा है। हम आशा करते हैं कि सब कार्यकर्ता अत्यन्त करुणा से, प्रेम से और धर्म-भावना से भरे हुए दिल से काम करेंगे।

पुलीरोपट्टी (मदुराई)
९–१–'५७

कर्तृत्व की महिमा : १८ :

इस धान्य की सुन्दर माला अभी लोगों ने मुझे दी। इसका अर्थ यह है कि कुल गाँवों का ग्रामदान बाबा को दिया जाता है। जमीन सबकी है, इसलिए जमीन की सेवा करने का हरएक को अधिकार है। अभी तक हमको फल-फूल की माला मिली थी, परन्तु आज धान्य की माला मिली, जिसका अर्थ है कि तंजोर जिले के सब गाँव बाबा को समर्पित हैं। तंजोर जिले के लोगों के मन अब ग्रामदान के लिए तैयार हो गये हैं।

जिस समाज के लोग देना जानते हैं, उस समाज के लोग सुखी और बलवान होते हैं। हमारे हाथ भगवान् की एक विशेष देन है, हाथ से परिश्रम करना, दान देना, सेवा करना, प्रणाम करना, गिरे हुए को उठाना, डूबते हुए को बचाना आदि सभी काम हो सकते हैं। उनसे लोगों को नीचे गिराना, नदी में डूबोना, मारा-मारी करना, किसी की चीज छीन लेना आदि काम भी हो सकते हैं। भगवान् ने जानवरों को हाथ नहीं दिये हैं, सिर्फ बंदरों को हाथ दिये हैं। परन्तु वे भी अपने हाथ का उपयोग पेड़ पर से फल खाने और पौधा उखाड़ने में करते हैं। अगर मनुष्य भी अपने हाथ का उपयोग ऐसे कामों में करेगा, तो मनुष्य और जानवर में फर्क कहाँ रहा? इसलिए अपने इन हाथों से सतत देते रहने का काम करना चाहिए। जिस समाज के लोग सतत देते रहेंगे, उस समाज के लोग सुखी होंगे, धर्म बढ़ेगा, लक्ष्मी बढ़ेगी।

तकदीर से बढ़कर तदबीर

आज यहाँ जो ग्रामदान मिला है वह मदुरा के ग्रामदानों से भिन्न प्रकार का है। यहाँ एक ही मालिक ने अपनी सारी जमीन गाँव को दे दी है। हमने

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

गाँववालों से पूछा कि उस भाई ने तो अपनी सारी जमीन का दान दे दिया, लेकिन इससे आपकी ताकत क्या बनेगी ? आप लोग क्या दोगे ? जैसे आपको प्रेम से दान दिया गया, वैसे आप भी प्रेम से दान दोगे तो आपकी ताकत बढ़ेगी। आपको भी भगवान् ने हाथ दिये हैं। अपने इन हाथों से खेत में खूब मेहनत करके अच्छी फसल तैयार करें और हर साल उसका एक हिस्सा गाँव को संपत्तिदान के तौर पर देते रहें। सारी संपत्ति दो हाथों से बनती है। "कराग्रे वसति लक्ष्मी", इसलिए वेदों ने कहा है "प्रभाते करदर्शनम्"। जहाँ हाथ पत्थर जैसे बन गये होंगे वहाँ लक्ष्मी रहेगी। ऋषि कहता है अयम् मे हस्तो भगवान्। ये मेरे हाथ भगवान् से भी बढ़कर हैं। इससे अधिक नास्तिक क्या कहेगा ? ऋषियों ने, "भगवान से बढ़कर हाथ हैं" ऐसा कह दिया। समुद्र बड़ा है या बादल ? बादल का हम पर सीधा उपकार है, इसलिए हमारे लिए समुद्र से बादल बढ़कर है। यह ठीक है कि समुद्र के पानी से ही बादल बनते हैं। परन्तु हमारे लिए बादल का सीधा उपकार है। हाथ ही हमें सब कामों में प्रत्यक्ष मदद देता है। इस वास्ते ऋषि ने कह दिया कि भगवान् से भी बढ़कर हाथ है, अयम् मे हस्तो भगवान. "अयम् मे भगवत्तरः" इस हाथ में विश्व का औषध भरा है। इससे माता बच्चे पर प्रेम करती है, इसलिए इसमें औषध भरा है। "अयम् मे विश्व भेषजः" इसके स्पर्श से पुण्य-कार्य होते हैं। गुरु ने शिष्य के सिर पर हाथ रख दिया तो दिमाग का परिवर्तन हो गया। इतनी शक्ति हमारे हाथ में है। इस वास्ते जैसे उस भाई ने प्रेम से आपको अपने गाँव की सब जमीन दे डाली, वैसे आपको भी प्रेम से भर-भरकर देना चाहिए। साल भर में एक हिस्सा। तो आपके गाँव में संकट निवारण-योजना हमेशा के लिए हो जायेगी। किसी भी गाँव में कोई दुःखी होगा तो फौरन मदद दी जायेगी। भू-माता की सेवा के लिए आपको जमीन दान में दी गयी है। पूरी भक्ति और प्रेम से आपको पैदावार बढ़ानी चाहिए। आलस्य नहीं करना चाहिए।

ईमानदारी से ही अन्त में लाभ

आज ही बिहार से एक खत आया है कि वहाँ पलामू जिले के सेवा गाँव में दो साल पहले लोग भूखे मरते थे। ग्रामदान के बाद भूमिहीनों ने अपने

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

प्राण खेती के काम में लगाये और दो साल में इतना उत्पादन बढ़ा कि अब अनाज उनकी आवश्यकता से अधिक होता है। आज तो मालिक और मजदूर एक दूसरे को ठगने की कोशिश करते हैं। मजदूर आठ घंटे का नाम लेता है, परन्तु चार घंटे कम काम करता है। मालिक भी उसको कम-से-कम दाम देना चाहता है। गाँधीजी के भतीजे मगनलाल गाँधी दक्षिण अफ्रीका की ४० साल पहले की बात करते थे। वहाँ खेतों में मजदूरी के लिए लोग हिन्दुस्तान के मजदूर को पसंद नहीं करते थे। जापानी मजदूरों को पसंद करते थे, क्योंकि जापानी मजदूर बिना देख-रेख उत्तम काम करते थे। यद्यपि जापानी मजदूरों को ज्यादा मजदूरी देनी पड़ती थी, तो भी लोग उन्हीं को मजदूर रखते थे। तो मजदूर का काम था कम-से-कम काम करना और मालिक का काम था कम-से-कम दाम देना। ये दोनों गलत बातें हैं। परन्तु अब आपको पूरी जमीन दान में मिल गयी है, इसलिए आप अपनी पूरी शक्ति पूरे प्रेम से उसमें लगाओ और फसल बढ़ाओ।

हाथ दिये कर दान रे

लोग पहले पूछते थे कि इस तरह दान देने से क्या मजदूर आलस छोड़ेंगे? उत्पत्ति कैसे बढ़ेगी? लेकिन ग्रामदान के बाद इन सबकी जबान बंद हो गयी है। क्योंकि गरीबों को जमीन दान में दी जाती है तो वे पूरे दिल से, प्रेम से काम करते हैं। तो पैदावार बढ़ती ही है। यह आपका पहला कार्य है कि जो जमीन आपको दी गयी है, उसमें आप पूरी शक्ति लगायें और उत्पादन बढ़ायें। आपको भी भगवान् ने दो हाथ दिये हैं, इसलिए आपको गाँव को कुछ-न-कुछ देना चाहिए। देने की बात सभी पर लागू होती है। वह सबका धर्म है और सनातन धर्म है। जब गरीब लोग देने लगेंगे तो अमीरों को देना ही पड़ेगा। भूदान में ऐसा ही हुआ है। पहले गरीबों ने, छोटे-छोटे मालिकों ने दान दिया, उसके बाद अमीरों ने देना शुरू किया। दयालु कम्युनिस्ट लोग पूछते थे कि बाबा गरीबों से दान क्यों लेते हैं। हमने कहा कि हम गरीबों की भी ताकत बढ़ाना चाहते हैं। दान देनेवाले की ताकत बढ़ती है, माँगनेवालों की नहीं। गरीबों की गिनती हम देनेवालों में कर सकते हैं।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

मानव-मन्दिर सबसे श्रेष्ठ

आज जो ग्रामदान हुआ, उससे उस गाँव के लोगों के मुंह पर प्रसन्नता दिखाई देती है। लोग कहते थे कि तंजोर की तरी जमीन कैसे दान में मिलेगी। किसी ब्राह्मण से पूछो कि दान कैसे दिया जाता है? रुपया हमेशा पानी से धोकर दान दिया जाता है। रुपया सूखा है, उसमें द्रव नहीं है, इसलिए भिगोना पड़ता है। तंजोर की जमीन में कावेरी का पानी मिला हुआ है। इसलिए यही जमीन दान देने लायक है। दूर-दूर से कावेरी का पानी यहाँ आता है। आप लोग दोनों हाथों से लेंगे, और देंगे कुछ नहीं, यह कैसे चलेगा? जिन्होंने भर-भर पाया है उनके दिल उदार ही होते हैं। यहाँ के मन्दिरों को पुराने जमाने में जो लाखों एकड़ जमीन दी गयी है, वह उसका साक्षी है। दूसरे किसी जिले में ऐसी घटना नहीं घटी है। जिस जमाने में मंदिरों को जमीन देना धर्म था उस जमाने में मंदिरों को जमीन आपने दी। इस जमाने में गरीबों का जमीन देना धर्म है तो क्या गरीबों को जमीन नहीं देंगे? यह दरिद्र-नारायण ही शिव भगवान् हैं। "महोक्षः खट्वांगम् परशुरजिनम् भस्म फणिनः" शिव भगवान् का लक्षणहै खाट का टुकड़ा, एक बैल, काम करने के लिए हाथ में परशु, कपड़ा भी पूरा नहीं, भस्म और गले में साँप, क्योंकि खेतों में काम करना होता है, वहाँ तो साँप होते ही हैं। मानव-मन्दिर तो सबसे श्रेष्ठ मंदिर है। उससे ज्यादा कारीगरी वाला मंदिर कहाँ मिलेगा? उसी में शिव भगवान् रहते हैं।

करिपट्टनम (तंजोर)
२–२–'५७

जमाने के अनुसार बदलना होगा : १९ :

भगवत्-उपासना जमाने के अनुसार अलग-अलग प्रकार की होती है। पुराने जमाने में जब हिन्दुस्तान में जंगल ही जंगल था तब जंगल काटना ही जीवन का एक बड़ा भारी काम हो गया था। उस जमाने में भगवत् उपासना

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

अग्नि के इर्द-गिर्द रहती थी। वेद की पहली ध्वनि "अग्निमं ले"—हम अग्नि का स्तवन करते हैं—इस तरह शुरू होती है, उसके बाद जब ग्राम-रचना, नगर-रचना आदि विषय समाज के सामने आये, तब उपासना का रूप बदल गया। मंदिर बनाये गये और सभी प्रकार का कला-सौन्दर्य आदर्श के तौर पर उन मंदिरों में दिखाया गया। उस जमाने के आहार-शास्त्रियों के अनुसार घर-घर में किस प्रकार का आहार होना चाहिए, बताया गया और वैसाही आहार भगवान् को निवेदित करना चाहिए। प्रातः जिस समय सबको उठना चाहिए, उस समय भगवान् को उठाते थे, पल्लीषेलुच्ची (जगाने का भजन) गाते थे। वह भजन पत्थर के भगवान् को जगाने के लिए नहीं था। अगर पत्थर को जगाने का सवाल है, तो वह सदा के लिए जागता ही है या उसको सुलाने का सवाल है, तो वह सदा के लिए सोता ही है। कभी जागनेवाला, कभी सोनेवाला देव उस पत्थर में नहीं है। परन्तु समाज को जिस समय जागना या सोना चाहिए, ऐसा समाज-शास्त्री मानते थे, उस समय भगवान् को मंदिर में सुलाते-जगाते थे। जब ग्राम-रचना करनी थी, तब गाँव के बीच मंदिर बनाकर उसके इर्दगिर्द सारा गाँव बसाते थे। आज जैसे कामन हाल बनाते हैं, वैसे उस जमाने में कामन हाल को भगवत्-उपासना का रूप दिया जाता था। क्योंकि वे लोग जिन्दगी के मूल स्वरूप को जानते थे। नगर-रचना में भी सौन्दर्य का खयाल समाज के सामने था। इस तरह मंदिर और मूर्ति-स्थापना के रूप को भगवत्-उपासना का रूप मिल गया। वेद और उपनिषद जंगलों में बने। बृहदारण्यक् (बड़ा जंगल) नाम ही जंगल का है, परन्तु ये बड़े-बड़े मंदिर उसके बाद के जमाने में अच्छे-अच्छे नगरों में बने: यह जीवन का दूसरा रूप था। आज ये दोनों रूप मौजूद नहीं हैं।

विज्ञान से स्थिति-परिवर्तन

आज जीवन का एक तीसरा ही रूप है कि आज के जमाने में सारा जन-समूह परस्पर अविरोध से किस तरह जीवन व्यतीत करे। आज समाज में परस्पर जितना विद्वेष है, उतना पहले कभी नहीं था। आज समाज में परस्पर जितना प्रेम है उतना पहले कभी नहीं था। पुराने जमाने में प्रेम और द्वेष

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दोनों कम थे। आज दोनों बहुत ज्यादा हैं, क्योंकि लोगों का सम्बन्ध एक-दूसरे से बहुत होता है। इसके भी दो कारण हैं। एक तो विज्ञान और दूसरा जनसंख्या की वृद्धि। जनसंख्या भी विज्ञान के कारण ही बढ़ी है। लोग जल्दी कम मरते हैं, इसलिए संख्या ज्यादा रहती है। इतना अच्छा विज्ञान पहले के जमाने में नहीं था, अतः पहले दस-बीस साल के बच्चों का मरना बिल्कुल मामूली था। परन्तु आज विज्ञान के कारण स्थिति बदल गयी है। अब बच्चे बच जाते हैं, तो जनसंख्या बढ़ने का यह भी एक वैज्ञानिक कारण है। जैसे-जैसे सच्चा विज्ञान बढ़ेगा, वैसे-वैसे काम-वासना खतम होती चली जायगी और विज्ञान ही इस समस्या को हल करेगा। विज्ञान से आरोग्य बढ़ेगा, उत्पादन बढ़ेगा और काम-वासना भी कम होगी। इससे शरीर की ताकत हमारे हाथ में आयेगी। आत्म-ज्ञान की ताकत तो पहले से थी ही, अब विज्ञान की मदद मिल रही है। विज्ञान हर पहलू को सामाजिक ढंग से सोचने के लिए मजबूर करता है। किसी भी मनुष्य के घर में कहाँ-कहाँ की चीजें रहती हैं? बाबा के पास यह घड़ी है, याने स्वीट्जरलैंड की है। यह चश्मा है, किस देश में बना है, मालूम नहीं। लेकिन हिन्दुस्तान में नहीं बना है। दुनिया भर की कई किताबें बाबा के पास हैं। एक-एक घर में कई चीजें ऐसी होती हैं कि जो सारी दुनिया के बाजार में बनती हैं। दुनियाँ के किसी एक कोने में लड़ाई शुरू हुई तो सारी दुनिया के बाजार-भाव चढ़ जाते हैं। इस वास्ते विज्ञान सामूहिक तौर पर सोचने के लिए मजबूर करता है, और प्रेरित भी करता है। अधूरे ज्ञान में भय है, परन्तु ज्ञान बढ़ जाता है, तो उससे ताकत आती है। अल्प विज्ञान में नास्तिकता भी आ गयी थी। परन्तु जेसे-जैसे विज्ञान बढ़ रहा है, वैसे-वैसे आस्तिकता को बड़ा बल मिल रहा है। जेम्सजीन एक उत्तम गणितज्ञ और वैज्ञानिक थे। उन्होंने कहा कि सारे विश्व में परमेश्वर का होना नितांत आवश्यक है। नहीं तो विश्व की यह सारी सुव्यवस्थित रचना, जो गणित में बैठती है, कैसे बैठेगी? दुनिया में सर्वत्र गणित ही गणित दिखायी दे रहा है। इसलिए परमेश्वर का अस्तित्व लाजिमी है और उसे भी गणितज्ञ होना चाहिए। वेदान्त ने यही कहा था 'रचनानुपपत्तेश्च नानुमानम्,' इस दुनिया की ऐसी विचित्र रचना है कि ईश्वर के सिवा वह बन ही नहीं सकती।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

आत्म-ज्ञान और विज्ञान दोनों का लक्ष्य एक

आत्मज्ञान ने जिस ईश्वर के पास पहुँचाया था, उसी ईश्वर के पास गहरा विज्ञान भी पहुँचायेगा। आत्मज्ञान कम होता है, तो वह भी ईश्वर के पास नहीं पहुँच सकता। यह मेरी देह ही आत्मा है और खाने-पीने में सब खतम होना चाहिए, यह अल्प आत्मज्ञान है। उपनिषद में उसको असुराणम् एषः कहा है। देह को आत्मा समझना यह असुरों का उपनिषद है। परन्तु जब आत्मज्ञान व्यापक होता है, तो वह परमेश्वर के पास पहुँचाता है। इसी तरह जब विज्ञान छोटा था, तो उसका नास्तिकता में प्रवेश हुआ था। लेकिन अब जब वह बढ़ रहा है, गहराई में जा रहा है, तब वह परमेश्वर के पास पहुँच रहा है। विज्ञान सृष्टि के जरिये ईश्वर के पास पहुँचाता है। आत्मज्ञान देह के जरिये ईश्वर के पास पहुँचा रहा है। विज्ञान ब्रह्मांड के जरिये ईश्वर के पास पहुँचाता है। आत्मज्ञान पिन्ड के जरिये ईश्वर के पास पहुँचाता है। दोनों बाजू से हम ईश्वर के पास पहुँचते हैं। इसलिए व्यक्ति का व्यक्तित्व मिट रहा है। आत्म-ज्ञान कहता है कि तुम व्यापक हो, तुम सब देह में हो, इसलिए मैं और मेरा छोड़ दो। विज्ञान कहता है, तुम अकेले-अकेले कुछ नहीं हो, जो कुछ है वह प्रकृति है, सारी दुनिया मिलकर विराट् है। इसलिए तुम 'मैं-मेरा' छोड़ दो। आत्मज्ञान तो यह कहता ही था। आत्म-ज्ञान और विज्ञान जहाँ इकठ्ठे हो गये, वहाँ व्यक्तिगत मालकियत आदि टिकेगी ही नहीं। सारे समाज की तरफ ध्यान देना पड़ेगा: इस रास्ते भगवत् उपासना अब नये रूप में प्रकट होगी। अब जंगल काटना, खेती के क्षेत्र में शोध करना या केवल नगर-रचना के लिए सौन्दर्य बढ़ाना, इतना ही सवाल नहीं है। अब समाज जीवन बनाने का सवाल भी आज सामने आया है।

आज का देवता समाज

आज एक भाई ने सवाल पूछा था कि भूदान और ग्रामदान से व्यक्तिगत आकाँक्षा, महत्वाकाँक्षा को मौका ही नहीं मिलेगा? यह बहुत पुराने जमाने का सवाल है। वैज्ञानिक युग का यह सवाल नहीं है। विज्ञान के जमाने में मनुष्य अपना व्यक्तिगत जीवन समाज में जितना लीन करेगा, उतना उसका और

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

समाज का विकास उत्तम होगा। थाली में लड्डू रखा है। हाथ में उसे उठा लिया। अब हाथ का विकास उसी में है कि वह उस लड्डू को मुँह में डाले। अगर वह ऐसा नहीं करता है और लड्डू को अपने हाथ में ही रखे रहता है तो दो चार साल में हाथ सूख जायेगा और आखिर में हाथसे लड्डू छूट जायगा। अगर मुँह में लड्डू डालने के बाद मुँह महत्वाकाँक्षा रखेगा कि मैं बड़ा बन जाऊँ और वह लड्डू को पेट में नहीं ढकेलेगा तो मुँह फुटवाल हो जायगा, और उससे किसी का विकास नहीं होगा। मुँह और शरीर का विकास इसी में है कि मुँह में से लड्डू को पेट में ढकेला जाय। किसी तरह अगर पेट में लड्डू ढकेलने के बाद पेट उसका रस बना कर चारों ओर नहीं भेजता है, तो उसके परिणाम स्वरूप सर्जन को बुलाना होगा और आपरेशन करवाना पड़ेगा। परन्तु पेट अपने पास लड्डू को न रखकर उसको एक प्रकार के रस में परिवर्तित कर सारे शरीर में भेज देता है। उससे उसका और शरीर का दोनों का भला है। जैसे यह शरीर एक समुदाय है, अवयव है, वैसे यह सारा समाज एक अवयव है। विज्ञान के जमाने में व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास तभी होगा, जब व्यक्ति व्यक्तित्व को समाज में लीन करने को तैयार होगा। एक चम्मच दही है। अगर वह दही चम्मच में ही २०-३० दिन पड़ा रहेगा तो वह खट्टा हो जायेगा और उसमें कीड़े पड़ जायेंगे, वह सड़ जायेगा, उसमें से बदबू आने लगेगी। उसको फेंक देना पड़ेगा। उसका विकास अगर करना है तो उसको दूध में डालना होगा। सारा का सारा दूध दही बन जायेगा। एक चम्मच दही से सेर भर दही बन सकता है। अगर उस सेर भर दही को एक मन दूध में डाला जाय तो वह और बढ़ जायेगा। इसलिए थोड़ा दही अगर ज्यादा दूध में लीन होता है, तो उसका विकास होता है। इस तरह का समाज-जीवन बनाने की आज जरूरत है। व्यक्ति का जीवन समाज में लीन होकर ही सार्थक होगा। इसलिए इस जमाने में भगवत् उपासना नया रूप लेगी। भगवत् उपासना अब जंगलों के इर्दगिर्द नहीं रहेगी। मंदिरों के इर्दगिर्द भी नहीं रहेगी। इसका अर्थ यह मत समझिये कि नास्तिकता आयेगी, बल्कि अब भगवत्-उपासना समाज-रचना में प्रकट होगी। जो नैवेद्य आज मंदिरों को समर्पण करते हैं, वह सीधा समाज-देवता को समर्पण करना होगा। यह कोई नया विचार है, सो

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

नहीं। इसका आधार प्राचीन ग्रंथों में भी मिलेगा, परन्तु उस जमाने में सामाजिक जीवन वनाने से नहीं वन सकता था। अव वह मौका आया है,इसलिए भगवत्-उपासना का स्वरूप बदल जायेगा।

पुराने रचनात्मक कार्यकर्ता कितने घंटे मूर्ति के सामने अपना सिर घिसते हैं? वे वहाँ मूर्ति के सामने बहुत ज्यादा समय तक बैठे दीखते ही नहीं। फिर वे कैसे भगवत् भक्त बन गये? वे समाज-देव की उपासना कर रहे हैं। भगवत्-उपासना का रूप वदला है। इसे समझने की जरूरत है। जब नया रूप आता है, तब पुराने रूप वाला समझता ही नहीं कि भगवत्-उपासना का रूप बदल रहा है। परशुराम नारायण के एक अवतार थे। रामचन्द्र नारायण के दूसरे अवतार थे। परशुराम भी अवतार और रामचन्द्र भी अवतार और दोनों नारायण के अवतार। परन्तु नारायण के नये अवतार को नारायण का पुराना अवतार समझ नहीं सका, पहचान नहीं सका। आखिर जब राम के धनुष का चमत्कार देखा, तब समझ गये। नहीं तो शिव-धनुष भंग होने के कारण "कौन है शिव-धनुष तोड़नेवाला?" कहकर सामने लड़ने के लिए आया, क्योंकि पहचान नहीं सके। आखिर जब चमत्कार हुआ, तब नमस्कार किया और समझ लिया कि यह नया अवतार हुआ है।

उपासना का नया रूप

भगवान् की उपासना का नया रूप प्रकट होता है, तो पुरानी उपासना करने वालों को लगता है कि यह नास्तिकता है। बाबा ने कहा, मंदिरों को जमीन देना गलत है। लोग कहने लगे, "बाबा नास्तिक बन गया दिखता है। नास्तिक के पाँव में क्या इतनी ताकत हो सकती है कि वह लोगों के बीच छह साल तक घूमता रहे? क्या नास्तिक लोगों के पास जाकर सेवा में रहेगा? वावा ने यह तो नहीं कहा था कि जिस जमाने में मंदिर को जमीन दान में दी गयी है, उस जमाने में वह गलती हुई थी। बाबा कह रहा है कि इस जमाने में यह गलत बात है। मंदिर की जमीन की मालकियत की काश्त दूसरे मजदूर करेंगे, उनको सरकारी टैक्स से दुगुना टैक्स देना पड़ेगा। एक हिस्सा सरकार को और बाकी का उपयोग मंदिर करेगा। मतलब यह कि मंदिर के लिए

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

अनिवार्य कर। जैसे सरकार को कर देते हैं, वैसे मंदिर को भी कर दें। अगर देना ही है, तो प्रेम से क्यों न दें ? जब रामानुज थे, तब क्या मंदिर में कर था ? लोग प्रेम से जमीन दान देते थे। परन्तु आज हालत यह है कि उन मन्दिर के पास हजारों एकड़ जमीन है। जैसे स्वार्थी मालिक मजदूरों को चूसते हैं, वैसे उन मंदिरों के जरिये मजदूरों को चूसा जाता है। बाबा यह चाहता है और जो बोल रहा है वह नयी उपासना के कारण बोल रहा है। भगवत्-उपासना का रूप बदल गया है। जो लोग इसे नहीं पहचानेंगे, वे भक्ति के नाम पर गलत काम करेंगे। मान लीजिये कि मैं पुराना यज्ञ यानी घी, चावल, लकड़ी आदि की आहुति डालने का यज्ञ शुरू कर देता हूँ, तो चारों ओर से हमारे खिलाफ आवाज आने लगेगी कि बच्चों को गाँव का दूध पीने को नहीं मिलता और तुम घी जलाते हो। जब सारे जंगल कट चुके हैं, तब इस जमाने में तुम लकड़ी यज्ञ में डालते हो, तो कैसे चलेगा, यह सब सोचने की बात है। उस जमाने में वह ठीक था। जिस जमाने में घी से ही अग्नि पैदा करते थे, लाखों की तादाद में गायें थीं और देश में जंगल-ही-जंगल थे। खाने के लिए भोजन, जलाने के लिये लकड़ी तथा दूध-घी काफी मात्रा में थे। जैसे मलाबार में खाने में, पीने में, मकान बनाने में नारियल का ही उपयोग करते हैं। परन्तु क्या मारवाड़ में मलाबार का यह तरीका चल सकेगा ? वहाँ नारियल होते ही नहीं। जब जंगल ही जंगल थे, तब उस प्रकार का यज्ञ चल सकता था। परन्तु वह रूप आज नहीं चल सकता। इसका मतलब यह नहीं कि यज्ञ मिट जायेगा। यज्ञ मिटेगा नहीं, यज्ञ का रूप बदलेगा। भक्ति मिटेगी नहीं, मिटनी भी नहीं चाहिए। केवल उसका रूप बदलेगा। आज की हालत में समाज-रचना ही मुख्य सवाल है, नगर रचना का मुख्य सवाल नहीं है। इस जमाने में मंदिर, मस्जिद, चर्च बनाने की जरूरत नहीं है, क्योंकि उसका शास्त्र तैयार है। स्कूल, अस्पताल, पुस्तकालय, बखार (गोडाउन), पार्लमेंट ये सारे विचार काफी हो गये है। उसके नमूने पेश करने की कोई जरूरत नहीं है। अब उपासना के जरिये समाज रचना का रूप कैसे बनेगा, व्यक्तिगत मालकियत समाज से कैसे मिटेगी, उसका नमूना पेश करना होगा। एक जमाने में ब्राह्मणों को पूजा करने के वास्ते अग्रहारम्

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

मिल गये। गाँव के गाँव उनको दान में दिये गये। उन्होंने स्वयं खेती करना छोड़ दिया और खुद दूर-दूर जीविकोपार्जन के लिए चले गये। उनकी विधवा माताएँ गाँव में ही रहती थीं। अब उस अग्रहार की जगह ग्रामदान है। कुल जमीन सारे गाँव की बने, सारा गाँव मिलकर एक परिवार माना जाय। जैसे अपने परिवार की हरएक चिन्ता करता है, वैसे सारे गाँव की सभी मनुष्य चिन्ता करें।

माता का गौरवमय कर्तव्य

इतनी बहनें जो यहाँ काम कर रही हैं, उन्हें क्या करना है? आज तक जो करती रही हैं, वही करना है क्या? बहनों को समाज-रचना करने में नेता बनना है। मातृ-प्रधान, समाज-रचना बननी चाहिए। लेकिन यह नया विचार नहीं है। विचार के तौर पर यह पुराना है। लेकिन सामाजिक क्षेत्र में उसका अमल नहीं है। मनु का वाक्य है। मंत्र कहनेवाला उपाध्याय और अर्थ कहनेवाला आचार्य है। मनु ने कहा है कि 'उपाध्यायान् दश आचार्यः आचार्यनाम शतं पिता, सहस्रंतु पितृन् माता, गौरवेण अतिरिच्यते'। दस उपाध्याय के बराबर एक आचार्य है, सौ आचार्य के बराबर एक पिता है, और हजार पिता से भी बढ़कर एक माता का गौरव है। स्त्रियों के लिए भारतीय संस्कृति में यह गौरव है कि स्त्री के लिए एक शब्द महिला है। इसका अर्थ ही महान् है। आज तक समाज-रचना पुरुषों के हाथ में थी और कुटुम्ब-रचना बहनों के हाथ में रही। अब कुटुम्ब-रचना में पुरुषों को थोड़ा हिस्सा लेना होगा। एक दिन में एक बार की रसोई भाइयों को बनानी होगी। हर बच्चे को रसोई का उत्तम ज्ञान होना चाहिए। आज तक रसोई बनाना बहनों का काम माना गया। इसके आगे पुरुष रसोई बनाने का काम जानेगा, तभी उसको खाने का अधिकार हासिल होगा। पुरुषों को घर में काम के कुछ हिस्सा देना चाहिए और स्त्रियों को भी समाज-रचना में अपना हिस्सा देना चाहिए। आज तक पुरुषों ने पूरी-की-पूरी समाज-रचना अपने हाथ में रखी। उसके परिणाम स्वरूप पचीस साल के अन्दर दो महा-युद्ध हो गये। तीसरे महा-युद्ध का भी डर छाया हुआ है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

Jangamawadi Math, Varanasi
Acc. No. ......3222.........

आज-कल वहनें कहती हैं कि स्त्रियों को पुरुषों की वरावरी में आना चाहिए। ऐसा काल आया है। ये समझती हैं कि यदि पुरुष की बरावरी में आ जायेंगी तो ऊँची हो जायेंगी। मनु ने उनको हजार पिताओं से भी ऊँचा माना। लेकिन वे कहती हैं कि हम पुरुषों के वरावर हैं। याने पुरुष वीड़ी पीता है, तो वे भी वीड़ी पियेंगी। इस देश में सव वरावर-वरावर रहेंगे—'सँरि नीगर समानमा।' पुरुष स्त्रियों को किस तरह समानता देने जा रहा है? जैसे पुरुषों की पलटनें बनती हैं, वैसे लड़ाई के लिये वहनों की पलटनें वनायी जा रही हैं। याने लड़ाई में पुरुषों के जरिये संहार पूरा नहीं होता था, तो संहार-देवता को ही वुला लिया। इंग्लैंड-अमेरिका में स्त्रियों की पलटने वन रही हैं, इसलिये बहुत जरूरी है कि स्त्रियों को समाज-रचना में आना चाहिए। और पुरुषों के हाथ रोकना चाहिए। इसका नाम है मातृ-प्रधान समाज-रचना याने अहिंसा-प्रधान समाज-रचना। माता सब बच्चों को खिलाकर खाती है। वह वच्चों से यह नहीं कहती कि मैं माता हूँ, तभी तो तुम वच्चे हो। अगर मैं तगड़ी नहीं होऊँगी, तो तुमको कैसे खिलाऊँगी? घर में दूध ज्यादा नहीं है, इसलिए पहल मैं ही पी लेती हूँ। माँ तो सवसे पहले वच्चे को दूध पिलाती है। उसके वाद घर के दूसरे लोगों को पिलाती है। फिर कुछ बचता है, तो खुद पीती है। इसका नाम है अहिंसा। यही है मातृ-प्रधान समाज-रचना। इस समाज में सवसे श्रेष्ठ आवाज माता की है। ऐसी अहिंसा-युक्त मातृ-प्रधान समाज-रचना इसके आगे बनती है। जिस तरह शंकराचार्य-जैसे महाज्ञानी पुरुष निकले और सारा धर्म का रूप बदल दिया, वैसे महा-ज्ञानी सरस्वती रूप, वैरागिणी, ब्रह्मचारिणी स्त्रियां निकलनी चाहिए, और समाज का रूप बदलना चाहिए। स्त्रियों को पुरुषों की मदद में ही कुछ काम करना है, इतना ही नहीं करना है बल्कि पुरुषों से विगड़ा हुआ काम स्त्रियों को सुधारना है। इसलिए गाँधी जी हमेशा स्त्रियों के वारे में वोलते थे। हमको खुशी है कि यहाँ लड़कियाँ अच्छी तरह सीख रही हैं। उनको हमने शिक्षण की दिशा बता दी है।

स्त्रियों को सिर्फ पुरूषों की वरावरी नहीं करनी है। अगर पुरुष पूरे अक्ल वाले होते, तो उनकी बरावरी ठीक है, परन्तु वे मूर्ख बने हैं, इसलिए

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

उनकी बराबरी में लाभ नहीं होगा। उनको अंकुश में रखने का काम स्त्रियों को करना है। समाज- रचना का अन्तिम निर्णय स्त्रियों के जरिये होना चाहिए। इसलिए स्त्रियों को थोड़ी शिक्षा देने में हमको संतोष नहीं है। पुरुष कम पढ़े-लिखे होंगे, तो चल सकता है। क्योंकि वे खेत में काम करते हैं, करेंगे। उसके साथ-साथ उनका ज्ञान बढ़ेगा। लेकिन स्त्रियों को थोड़ा-सा पढ़ा देने भर से नहीं चलेगा। स्त्रियों को संस्कारों का उत्तम ज्ञान हासिल करना चाहिए। उनका कम ज्ञान में निभेगा नहीं। उनके पास ज्ञान-समुद्र होना चाहिए। माता सर्वोत्तम गुरु के तौर पर घर की नियंत्रिका और समाज की निरीक्षिका बन कर समाज का नियंत्रण करती रहे, ऐसा होना चाहिए।

जैसे मदालसा ने अपने बच्चों को अध्यात्मिक ज्ञान दिया, वैसे सारे-समाज को और घर वालों को अध्यात्मिक ज्ञान देनेवाली स्त्रियाँ होनी चाहिए। हमारा विश्वास है कि हिन्दुस्तान और दुनियाँ का उद्धार तब होगा, जब व्यक्ति समाज जीवन में लीन होगा। उसकी योजना ग्रामदान में है। वह कार्य वहाँ के सभी लोगों को हाथ में लेना है।

वेदारण्यम् (तंजौर)
३-२-'५७

धर्मचक्र प्रवर्त्तन : २० :

हमने कहा है कि भूदान, ग्रामदान आन्दोलन धर्मचक्र-प्रवर्तन का आन्दोलन है। यह शब्द भगवान् गौतम बुद्ध का है। लेकिन भगवद्गीता में इसका जिक्र आता है। गीता ने उसको "यज्ञचक्र" नाम दे दिया है। जो इस यज्ञचक्र को नहीं चलायेगा उसकी आत्मा पापमय बनेगी। इसलिए हर शख्स का कर्तव्य है कि वह धर्मचक्र यज्ञचक्र चलाने में अपना योग दे।

अभी तक लगभग दो हजार से ज्यादा ग्रामदान मिले हैं। उधर महाराष्ट्र में दो सौ के करीब ग्रामदान हुए हैं, जहाँ अभी तक मैं गया ही नहीं हूँ। इधर मदुरा जिले में भी करीब १२५ (अब दो सौ) ग्रामदान हो चुके हैं। इस तरह कुल भारत में यह चीज अब लोगों के ध्यान में आ रही है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

धर्मकार्य एक व्यक्ति ही कर सकता है।

बहुत लोग पूछते हैं कि ऐसा कार्य एक शख्स कैसे करेगा। हमारा विश्वास उल्टा ही है। हम समझते हैं कि धर्म-कार्य अकेला एक पुरुष ही करता है। ईसाई धर्म की प्रेरणा अकेले एक ईसामसीह के दिमाग में पैदा हुई और उनके शिष्यों के जरिये योरप में फैली। अब तो वह चीज दुनिया भर में फैल गयी है। उनके सिर्फ बारह शिष्य थे। उनमें से भी एक शिष्य काम नहीं कर सका। बाकी लोगों ने उनके मरने के बाद काम किया। जब तक वे जिंदा थे, वे अकेले ही काम करते थे। अकेले पैगम्बर मुहम्मद के हृदय में इसलाम की ज्योति प्रकट हुई। ईरान में एक धर्म-संस्थापक हो गये। उनका नाम था ज़रतुस्थ। करीब-करीब उसी जमाने में चीन में एक धर्म-संस्थापक लाओत्से हो गये। उसी जमाने में हिन्दुस्तान में बुद्ध भगवान् हुए। ऐसी मिसालें आप बार-बार देखेंगे कि एक-एक शख्सने देश का रंग ही बदल दिया।

ऐसे महापुरुष अपने इस देश में और दुनिया में भी पैदा हुए। खैर, उनमें बड़ी ज्योति थी। बड़ी ज्योति के सामने, सूर्यनारायण के सामने अन्धकार टिक ही नहीं सकता। परन्तु हम सभी तो सूर्यनारायण बन नहीं सकते। उतना तीव्र प्रयत्न हो जाय तो वह भी बन सकते हैं पर इतना तीव्र प्रयत्न कहाँ हो सकता है? हम सबके हृदय में ज्योति तो मौजूद है ही। हमको इतनी सुन्दर प्रकाशमय ज्योति और इतना सुन्दर वेगवान रथ मिल गया है, तो तीव्र प्रयत्न से सूर्य के समान ज्योति बन सकती है। परन्तु केवल सूर्य ही अन्धकार को नहीं जानता। एक छोटा दीया भी अंधकार को नहीं जानता। चाहे दुनिया में कितना ही अंधकार छाया हो, उसको उसका पता नहीं है कि अंधकार कहाँ है। कुल दुनिया को प्रकाशमय करना है, तो परमेश्वर ही करेगा। और कौन कर सकेगा? बाकी सब प्रकाश सीमित ही रहेंगे। एक छोटा दीपक भी अपनी प्रकाश-सामर्थ्य से आस-पास के अंधकार को मिटा देता है। वह स्वयं अंधकार को पहचानता ही नहीं है। अगर उसके सामने अंधकार की बात करेंगे, तो वह कहेगा कि अंधकार क्या चीज है, जरा मुझे अंधकार दिखाओ तो सही। एक पुड़िया में अंधकार भरकर ले जायेंगे तो उसको

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दिखायी देगा। वह अंधकार देखने जायेगा, उतने में तो अंधकार खतम हो जायेगा। इसलिए प्रकाश चाहे छोटा हो या वड़ा, उसके सामने अंधकार टिक नहीं सकता। जैसे अकेला सूर्य अंधकार का नाश करता है, वैसे अकेला दीपक भी अंधकार का निवारण करता है।

मैं कहना यह चाहता था कि धर्म-कार्य व्यक्ति ही करता है और अकेला व्यक्ति ही करता है। फिर उसके इर्दगिर्द पाँच-पचास दूसरे खड़े हो जायँ, तो अलग वात है। परन्तु दस मनुष्य का एक चेतन नहीं मिलता है। एक मनुष्य खड़ा हो गया, वस चेतन हो गया।

इस समय हिन्दुस्तान के लिए इससे वेहतर धर्म-मार्ग दूसरा नहीं है। कुछ लोग पूछते हैं कि 'भाई जव आप सारे गाँव को ग्रामदानी वनाने जा रहे हैं, तो वर्णाश्रम-भेद तो मिटाओगे ही।' इस तरह के आक्षेप करते हैं। हम उनसे कहते हैं कि 'भाई, जरा सोचो। धर्म सूक्ष्म होता है। विलकुल ऊपर-ऊपर से देखने में वह मालूम नहीं होता है। अन्दर से उसका पता चलता है। चातुर्वण्य क्या है? इनका कोई वाह्य वेष है क्या? वह विचार और अनुभव की वात है। अपने को ऊँचा समझ लिया तो वर्ण हो गया क्या? जो अपने को ऊँचा समझेगा, वह ईश्वर की निगाह में सवसे नीचे गिरेगा। जो दावा करेगा कि मैं ऊँचा हूँ, तो वह दावा ही उसको खतम करेगा। चार वर्ण की कल्पना लोगों में भेद करने के लिए नहीं है, वह समाज के गुण-विकास के लिए है। चार आश्रम भी गुण विकास के लिए हैं। हम तो नये सिरे से चार वर्ण और चार आश्रम खड़े करेंगे। हम चाहेंगे कि हरएक व्यक्ति में चार आश्रम और चार वर्ण हों।

चार वर्णों की कल्पना

ग्रामदान के गाँवों में किस प्रकार चार वर्ण और चार आश्रमों की स्थापना होगी, इसका हमने एक छोटा-सा सूत्र वनाया है, जैसे मेयवक्कण्डार का सूत्र है, जैसे ब्रह्मसूत्र है, वैसे चार शब्दों में हमने चार वर्ण और चार आश्रम रख दिये हैं। वे चार गुण जिसमें हैं, उनमें चार वर्ण हैं और चार आश्रम हैं। पहले चार वर्ण की वात लेंगे।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

चारों वर्ण अत्यन्त पवित्र होते हैं। लोगों का ख्याल है कि कुछ वर्ण ऊँचे और कुछ वर्ण नीचे हैं, ऐसी बात नहीं है। गीता में कहा गया है कि "स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धि लभते नरः" जो अपने-अपने कर्तव्य में परायण होकर निष्काम बुद्धि से परमेश्वर की सेवा समर्पित करेगा, वह समान भाव से मोक्ष पायेगा। चित्त में शान्ति का होना ब्राह्मण का लक्षण है। हम चाहते हैं कि ग्रामदानी गाँव में शान्ति हो। सबके हृदय में राम हो। क्या आज के गाँवों में शान्ति दिखाई देती है ? देश में भी शान्ति-शान्ति की चाह है, परन्तु राह पकड़ी गयी है अशान्ति की। अशान्ति की राह पर चलकर शान्ति की चाह रखते हैं। शान्ति की स्थापना तब होगी, जब सब लोगों के हृदय के दुःख मिट जायेंगे। उन दुःखों के कारणों में एक साधारण दुःख है कि लोगों को सर्व सामान्य चीजें मुहैया नहीं होती हैं। और दूसरा कारण यह है कि कुछ लोगों के पास चीजें ज्यादा पड़ी हैं। इससे उनके चित्त को शान्ति नहीं होती।

चार वर्णों में दूसरा है, 'क्षत्रिय वर्ण।' क्षत्रिय याने अपने हाथ में तलवार लेनेवाला। ऐसे लोग भी बहुत बढ़ गये हैं और शस्त्रास्त्र भी बहुत बढ़ गये हैं। हर सरकार के पीछे शस्त्रास्त्र का बल रहता है। इससे सारी दुनिया निर्वीर्य और भयभीत बनी है। क्षत्रिय का लक्षण है निर्भयता। निर्भयता किसी प्रकार के शस्त्रास्त्र से नहीं आती। निर्भयता की स्थापना के लिए हम दम-रूपी क्षत्रिय की स्थापना करते हैं। दम याने अपने पर जाप्ता, अंकुश रखना। जहाँ सब लोग अपने पर काबू नहीं कर पाते हैं, दमन नहीं कर पाते हैं, वहाँ बाहर से दमन करने की बात आती है। हम समझते हैं कि ग्रामदानी गाँव में दूसरे गाँवों से दम की प्रतिष्ठा अधिक होगी। वहाँ दूसरे का छीनने की इच्छा होगी ही नहीं। क्योंकि वहाँ कोई दूसरा या पराया है ही नहीं। सब अपने ही हैं। सारे गाँव की जमीन एक हो गयी। मालकियत मिट गयी। उस हालत में हरएक मनुष्य अपने पर काबू रखेगा। इस दम को हम क्षत्रिय वर्ण की स्थापना कहते हैं।

तीसरा है वैश्य वर्ण। हिन्दुस्तान में सब लोगों को मालूम है कि वैश्य के लक्षणों का अगर एक शब्द में वर्णन करना है तो वह है 'दया'। हिन्दुस्तान

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

में जिस तादाद में ब्राह्मण मांसाहार छोड़े हुए हैं, उनसे भी ज्यादा तादाद में वैश्य हैं। मांसाहार छोड़े हुए लोगों की गिनती की जाय, तो वैश्यों की संख्या ज्यादा निकलेगी। वैश्य का लक्षण ही यह है कि दीनों की सँभाल करना, उनके वास्ते संग्रह करना, अपने संग्रह से सबकी रक्षा करना। वैश्य का दया से बढ़कर दूसरा कोई गुण ही नहीं हो सकता। आप ही बताइये कि वैश्यों की स्थापना ग्रामदान के गाँव में होगी या नहीं। दया और करुणा के बिना ग्राम-दान का आरम्भ ही नहीं होता। आज दया कहाँ है? दिल अत्यन्त निष्ठुर बन गये हैं। दूसरों की आपत्तियाँ देखते रहते हैं, परन्तु उनके लिए कुछ करने की हमको इच्छा ही नहीं होती।

चौथा वर्ण है शूद्र। शूद्र के बिना दुनिया चल ही नहीं सकती। शूद्र का लक्षण है श्रद्धा। शूद्र के लक्षणों का अगर एक ही शब्द में वर्णन करना है, तो श्रद्धा उसका लक्षण है। शूद्र सेवा-प्रधान होता है। बिना श्रद्धा और भक्ति के सेवा हो ही नहीं सकती। इसलिए शूद्र का मुख्य गुण सेवा है और श्रद्धा उसका अन्तर रूप है। आप ही बताइये कि ग्रामदान से बच्चों के दिल में श्रद्धा पैदा होगी कि नहीं? आज बच्चों की हालत ऐसी है कि भूमिहीन और गरीबों के बच्चों को अनाथ समझकर अडिगलार को उनका पालन करना पड़ता है। अडिगलार क्या विष्णु का अवतार है? सब लोगों का पालन करने का जिम्मा उनका है? वह जिम्मा गाँव का होना चाहिए। जहाँ आपने ग्रामदानी गाँव बनाया, वहाँ आपने अनाथाश्रम खोल ही दिया। दुनिया भर के अनाथों का एक संग्रह करने की कोई जरूरत ही नहीं है। ग्रामदानी गाँवों में किसी का पिता मर गया तो एक पिता मर गया। परन्तु १५० और पिता मिल गये। ग्रामदानी गाँव में एक-एक बच्चे के सौ-दो सौ पिता होंगे। ग्रामदानी गाँव में एक-एक माता को तीन सौ-चार सौ लड़के होंगे। इसलिए स्वतन्त्र अनाथाश्रम खोलने की कोई जरूरत ही नहीं रहेगी। तो उन लड़कों में समाज के लिए कितनी श्रद्धा पैदा होगी? जिस समाज में हम पैदा हुए, वह समाज कितना दयालु और प्रेमी है कि हम सब बच्चों की बराबर रक्षा की है, ऐसा वे बचपन से ही सीखेंगे।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

ग्रामदानी गाँवों में चार आश्रमों की स्थापना कैसे ?

इन चार गुणों की याने साम, दाम, दया और श्रद्धा की समाज में प्रतिष्ठा हो गयी तो चार वर्णों की स्थापना हो गयी। अब चार आश्रमों की स्थापना ग्रामदानी गाँव में कैसे होगी ? पहला संन्यास आश्रम। समाज को संन्यासी की अत्यन्त आवश्यकता है। यह सबको मालूम है। क्योंकि संन्यासी रहा तो सबकी सेवा करने के लिए मुफ्त का नौकर मिल गया। वह सर्वत्र ज्ञान-प्रचार करता चला जायेगा। संन्यासी का लक्षण है शमन। जहाँ चित्त में शान्ति नहीं है, वहाँ संन्यास नहीं है। संन्यासाश्रमी का अर्थ यह नहीं है कि बालों की हजामत करवा दी, दाढ़ी बढ़ा दी तो संन्यासी हो गया। ये हमारे अडिगलार संन्यासी हैं कि नहीं ? उनकी परीक्षा करनी है, तो उनको तमाचा लगाओ। तमाचा मारने से अगर उनको गुस्सा आता है, तो वे संन्यासी नहीं हैं। संन्यासी की परीक्षा है शम, शान्ति। ग्रामदान से शम-रूपी इस संन्यास-आश्रम की हम स्थापना करना चाहते हैं।

दूसरा है वानप्रस्थाश्रम। वानप्रस्थाश्रम का लक्षण है—दम। हमें तपस्या से इंद्रियों का दमन करना है, अपने को संपूर्ण रूप से जीत लेना है। इस तरह जहाँ दम गुण आ गया, वहाँ वानप्रस्थाश्रम की स्थापना हो गयी। ग्रामदान से हम यह दम-रूपी वानप्रस्थाश्रम की स्थापना करना चाहते हैं।

तीसरा आश्रम है गृहस्थाश्रम। गृहस्थाश्रम का लक्षण है—दया। तिरुक्कुरल ने भी कहा है कि गृहस्थ का सबसे श्रेष्ठ गुण है दया, करुणा, प्रेम। इसलिए जहाँ दया की प्रतिष्ठा हो गयी, वहाँ गृहस्थाश्रम की स्थापना हो गयी। ग्रामदानी गाँव में हम दया रूपी गृहस्थाश्रम की स्थापना करना चाहते हैं।

चौथा आश्रम है ब्रह्मचर्याश्रम। ब्रह्मचर्याश्रम का लक्षण है—श्रद्धा। जहाँ श्रद्धा की प्रतिष्ठा हो गयी, वहाँ ब्रह्मचर्याश्रम की स्थापना हो गयी। ग्रामदान से हम श्रद्धा रूपी ब्रह्मचर्याश्रम की स्थापना करना चाहते हैं।

शम, दम, दया और श्रद्धा, इन चार शब्दों में चार वर्ण और चार आश्रम आ गये। "शम, दम, दया, श्रद्धा" ग्रामदान के सूत्र हैं। इस प्रकार ग्राम-

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दानी गाँव बनेंगे तो धर्म-स्थापना, धर्मचक्रप्रवर्तन होगा। इसलिए हमारी माँग है कि जिनके हृदय में परमेश्वर ने कुछ-न-कुछ धर्म-भावना रखी है उन सबको इस काम में पड़ना चाहिए और जल्दी से जल्दी इस काम को पूरा करना चाहिए।

शाक्कोट्टै (रामनाड)
१४-२-'५७

ग्रामदान : भक्ति मार्ग :२१:

उत्तर भारत के सबसे श्रेष्ठ गुरु स्वामी रामानंद रामानुज संप्रदाय के एक शिष्य थे। स्वामी रामानंद के दो सर्वोत्तम शिष्य थे—कबीर और तुलसीदास। इन दो नामों से बढ़कर और कोई नाम हिन्दुस्तान में नहीं मिलेगा। तुलसीदास जी की रामायण जहाँ पढ़ी नहीं जाती, वह घर ही नहीं। कबीर का दोहा उत्तर भारत के बहरे ने भी सुना है। ऐसे दो महान् व्यक्ति स्वामी रामानंद के जरिये रामानुज संप्रदाय को मिले। इतने बड़े प्रचार का कार्य रामानुज ने किया। भक्ति-विचार के मुख्य प्रचारक रामानुज रहे। वह है दक्षिण भारत का विचार। यह तो पुराने जमाने में रामानुज ने किया। लेकिन इस जमाने में तमिलनाड के लोग क्या अपने को एक जगह में कैद रखेंगे ?

उस जमाने में रामानुज ने सारे भारत में प्रचार करने की हिम्मत की। अब तो अच्छा मौका आया है। भारत के किसी भी कोने से आसानी से आ सकते हैं, बहुत सुलभता से प्रचार हो सकता है। सारे भारत का दिल कितना एकरूप है ? हम यहाँ घूम रहे हैं, परन्तु हमें ऐसा कोई भास ही नहीं हो रहा है कि हम दूसरे प्रान्त के हैं। सैकड़ों ग्रामदान वहाँ मिले और यहाँ भी मिल रहे हैं। लोगों को और हमको कोई भेद हीं मालूम नहीं होता। आपका और हमारा हृदय बिलकुल एक है। इस हालत में आप फैलना चाहते हैं कि अपने को कैद करना चाहते हैं ? सोचते हैं, हिन्दी सीख लेंगे तो छूत लगेगी। संस्कृत का अभ्यास रामानुज ने न किया होता, तो वह सारे भारत में फैल नहीं सकता था। उन दिनों राष्ट्रभाषा संस्कृत थी। संस्कृत से हिन्दी आसान

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

है। आज यहाँ कुछ बच्चों को हिन्दी के प्रमाण-पत्र मिले। यहाँ के कुछ लोग आसानी से हिन्दी सीख सकते हैं। थोड़ी मेहनत करेंगे, तो ज्ञान के प्रचार का सारा मैदान खुला हो जायेगा, भारत भर में प्रचार का मौका मिलेगा। आपको तो वह हिम्मत दिखानी चाहिए जो रामानुज ने उत्तर भारत में दिखाई। उत्तम से उत्तम संस्कृत भाषा का ग्रंथ शंकराचार्य का माना जाता है। काशी के प्रखर विद्वान् भी उनकी संस्कृत की बराबरी नहीं कर सके। तो, आज क्या तमिलनाड से एक शख्स ऐसा नहीं निकलेगा कि जो शंकर, रामानुज की बराबरी कर सके? तमिलनाड में ताकत पड़ी है, इसलिए हिन्दी सीखकर नौकरी नहीं पाना है, ज्ञान प्रचार करना है।

यहाँ ग्रामदान हो रहे हैं, तालुकादान की बातें हो रही हैं। सारे भारत की नजर वहाँ लगी हुई है कि तमिलनाड के लोग क्या चमत्कार कर रहे हैं कि तालुकादान की हिम्मत कर रहे हैं। यह बाबा का चमत्कार नहीं है, यह तमिलनाड की सभ्यता का चमत्कार है।

समर्पण की भावना

तमिलनाड की सभ्यता है कि छोटे-छोटे गाँव भी मन्दिर के इर्द-गिर्द बसे हुए हैं याने सारा गाँव भगवान् को समर्पण किया गया है और उससे जो प्रसाद रूप मिलता है, उसे गाँव स्वीकार करता है। यही हम भारत के लोगों को समझाते घूम रहे हैं कि जमीन की मालकियत क्यों बनायी है? मरोगे तो क्या जमीन साथ जायेगी? यह बात लोग सहज में समझ जाते हैं। बाबा के व्याख्यान का कोई असर नहीं है। यह ठीक है कि बाबा कहता है तो सच्चे दिल से कह रहा है, ऐसा लोग समझते हैं। इतनी प्रीति, इतनी श्रद्धा लोगों में है। परन्तु यह जो ग्रामदान हो रहे हैं, यह उसका परिणाम नहीं है। सारा गाँव भगवान् का है। इस भावना का परिणाम है। यह भावना शैव-भक्त, वैष्णव-भक्त और आचार्यों की निर्माण की हुई भावना है। आप अगर इसको बहुत अच्छी तरह समझ लेंगे तो बाबा को बहुत ज्यादा घूमना नहीं पड़ेगा। गाँव के लोग बाबा के पास आकर ग्रामदान देंगे। ग्रामदान से नया भक्ति-मार्ग खुल जायगा। अपना सर्वस्व समाज को समर्पण कर दिया और उसकी

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

ओर से जो मिला, उसका भगवत्-प्रसाद के तौर पर स्वीकार करेगें। उस प्रसाद से कोई वंचित नहीं रहेगा। आज भी लोग समर्पण की भावना रखते हैं। लेकिन वह शाब्दिक समर्पण होता है। शब्द में जो समर्पण है, वह भी अच्छा है। लोग बोलते हैं, "श्रीकृष्णार्पणम्", "ब्रह्मार्पणम्" भाषा में वह चीज है, अभी जीवन में नहीं आई है। परन्तु भाषा में है। इसलिए जीवन में आयेगी। अगर भाषा में ही नहीं, है तो जीवन में कैसे आयेगी ?

भक्ति-मार्ग में कृष्णार्पण और ब्रह्मार्पण की जो भावना है, उसी के आधार पर ग्रामदान खड़ा है। आज रामानुज कहते होंगे कि जो मंत्र मैंने खुलेआम जाहिर कर दिया, वही बावा अब बाँट रहा है। उनका दिल इस वक्त बड़ा सन्तुष्ट होता होगा। हमें कोई शंका नहीं है कि उनका आशीर्वाद हासिल है, आप लोग कितने भाग्यशाली हैं कि इतने महापुरुष के स्थान में आप रहते हैं। हम आशा करते हैं कि तमिलनाड में कुल के कुल गाँव मालकियत मिटा करके भक्ति-मार्ग का नया संदेश दुनिया में पहुँचायेंगे।

वाल्मीकि-रामायण में रामचन्द्रजी के गुणों का वर्णन दो उपमा देकर किया गया है। उन उपमाओं से उसमें दिखाया गया है कि रामचन्द्र राष्ट्र-पुरुष थे। "समुद्र इव गांभीर्ये, स्थैर्येच हिमवानिव।" रामचन्द्रजी समुद्र जैसे गंभीर और हिमालय जैसे स्थिर थे। एक उपमा में उत्तर हिन्दुस्तान की सीमा दिखाई, दूसरी उपमा में दक्षिण भारत का दक्षिण समुद्र दिखाया। उस महाकवि ने सारे भारत की सीमा इन दो गुणों में प्रकट की। वह गांभीर्य तमिलनाड में है, गहराई है। हम आशा करते हैं कि आप उस गहराई को महसूस करेंगे। इस आन्दोलन को गहराई से देखेंगे। ऊपर-ऊपर से मत देखिये।

आन्दोलन आर्थिक और आध्यात्मिक भी

कोई कहता है कि भूदान आन्दोलन आर्थिक आन्दोलन है, आध्यात्मिक नहीं है। वे लोग समझते ही नहीं हैं। मंदिर में प्रसाद के तौर पर मिठाई दी जा रही है। तो क्या वह हलवाई की दूकान है ? मंदिर में जो मिठाई मिलती है, वह तो धर्म का चिह्न है। वैसे ही यह जमीन जो माँगी जाती है,

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दी जाती है, बाँटी जाती है। वह सब प्रेम से हो रहा है। यह सिर्फ जमीन का बँटवारा नहीं है। जमीन का बँटवारा तो कानून से भी या जमीन छीनकर भी हो सकता है। दूसरे देशों में इन तरीकों से जमीन का बँटवारा हुआ भी है। अगर इस तरह से यहाँ हुआ हो, तो यह आर्थिक आन्दोलन माना जा सकता था। लेकिन यहाँ तो प्रेम से माँगा जाता है, प्रेम से दिया जाता है। यह आन्दोलन सिर्फ इकोनामिकल नहीं है, आध्यात्मिक भी है। यह सिर्फ जमीन का बँटवारा नहीं है, प्रेम का भी बँटवारा है। प्रेम से बाँटने की बात है।

धर्म के साथ अर्थ का होना कोई पाप है क्या ? विष्णु के साथ लक्ष्मी का होना कोई पाप है क्या ? शिव के साथ शक्ति का होना कोई पाप है क्या ? आप तिरुकुरल को ही लीजिये। अरम् (धर्म) के साथ पुरुल (अर्थ) का होना कोई पाप है क्या ? यह लोग पूछते हैं कि आपका आन्दोलन संपत्तिक, आर्थिक दीखता है। हम कहना चाहते हैं कि यह केवल पुरुलाधार (आर्थिक) नहीं है, अरमाधार (धार्मिक) भी है। धर्म के साथ अर्थ आ गया, तो वह केवल पुरुलाधार (आर्थिक) नहीं बन जाता है। मिठाई खाने में मीठी है, देखने में सुन्दर है। दोनों गुण उसमें हैं। सौंदर्य भी है, स्वाद भी है। इस-आन्दोलन का स्वाद है करुणा, जो चखने में मीठी है। उसका रूप है अर्थ-शास्त्र। केवल रूप से कोई मतलब नहीं है। बड़े-बड़े सुन्दर केले बाजार में बिकते हैं, परन्तु उनके अन्दर गोबर भरा है। वे खाये नहीं जा सकते हैं, बगीचे के केले की मधुरता उस केले में नहीं है, यद्यपि रूप है। वैसे कानून से जो जमीन बाँटी जाती है, या जमीन छीन ली जाती है, वह है गोबरवाला केला। इस आन्दोलन में विष्णु और लक्ष्मी साथ-साथ हैं। शिव और शक्ति साथ-साथ है। मिठास और सौंदर्य साथ-साथ है। केवल ऊपर-ऊपर देखने से नहीं चलेगा। इसलिए मैंने कहा कि आप गहराई में जाइये। गहराई तमिलनाड का खास गुण है। ऐसा वाल्मीकि कह रहा है—समुद्र इव गांभीर्ये। हम आशा करते हैं कि इस दृष्टि से इस आन्दोलन की ओर देखा जाय।

तिरुप्पुवकुइ (रामनाड)

१७-२-'५७

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

आदर्श गाँव

: २२ :

हमारा यह काम वुनियादी क्रान्ति का है। इसमें जीवन को सब प्रकार से वदलना होगा। इन दिनों शहर वढ़ते ही जा रहे हैं। गाँवों से लोगों का प्रवाह शहरों की तरफ हो रहा है। शहरों में सब प्रकार की वुराइयाँ होती हैं। ये गाँव भी बड़े वनने की कोशिश करते हैं, शहरों का अनुकरण करना चाहते हैं। इस तरह शहरों की वुराइयाँ भी गाँवों में आ जाती हैं। हम समाज वदलना चाहते हैं। उसके लिए यह रचना ही बदलनी होगी। गाँवों की रचना ही ऐसी करनी होगी कि शहरों से लोग गाँवों में आयें। तो क्या करना होगा ?

स्वच्छता और संयम

मुख्य वात यह है कि गाँव में स्वच्छता होनी चाहिए। शान्ति भी चाहिए। आस-पास ऐसी वातें न हों कि जिनसे ध्यान में वाधा पहुँचे। आज गाँव में इधर-उधर मैला पड़ा रहता है। हम तो नाक वंद करके गाँव में प्रवेश करते हैं। इसी लिए हर व्यक्ति के घर के पीछ वगीचा हो। शौच के लिए लोग वही जायें। मैले पर मिट्टी डालेंगे तो खाद तैयार होगी। उस खाद का उपयोग वगीचे में होगा। आज तो शहर संस्कारहीन वन रहे हैं और गाँव भी उसका अनुकरण करते हैं। इसीलिए गाँव में नरकवास वना है। मरने के वाद नरक मिलेगा तव मिलेगा, लेकिन आज यहीं नरकवास भुगतना पड़ रहा है। लेकिन हम चाहें, तो यह भी स्वर्ग वन सकता है। आज जनसंख्या वढ़ रही है। यह ठीक नहीं है। जनसंख्या वढ़ने का डर नहीं है। परन्तु जिस ढंग से वह वढ़ रही है, वह ठीक नहीं है । इसके लिये विषय वासना ही कारण है। ऐसी विषय-वासना वढ़ती रही तो लोग निर्वीर्य वनेंगे। फिर अहिंसा टिक नहीं सकती। लोग फिर पशुओं की, गाय की, बैल की भी रक्षा नहीं कर सकेंगे। उनको भी खा जायेंगे। इसीलिए संयम सीखने की जरूरत है। संयम, स्वच्छता, शान्ति की तालीम हरएक को मिलनी चाहिए। गाँव में भगवत्-भजन होगा। लेकिन ग्रामदान तो उसका आरम्भ है। उस वुनियाद पर सर्वोदय का मंदिर खड़ा करना है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

प्रार्थना

गाँव में रोज प्रार्थना होगी। उसके लिए स्वच्छ जगह चाहिए। खुली हवा हो। आज के हमारे मंदिर तो ऐसे होते हैं कि वहाँ हवा ही नहीं मिलती। वहाँ ध्यान भी नहीं कर सकते। जल्दी से जल्दी बाहर आना पड़ता है। इसीलिए प्रार्थना, चिन्तन, ध्यान के लिए गाँव के बाहर स्वच्छ जगह हो। उस जगह आदर्श स्वच्छता होगी। छोटा-सा कंपाउंड भी हो सकता है, ताकि कोई जानवर या कुत्ते वगैरह उस स्थान में जाकर यह स्थान गंदा न करें। वहाँ फूल वगैरह के पेड़ भी लगा सकते हैं। प्रार्थना में जाते समय लोग अपना-अपना आसन बैठने के लिए ले जा सकते हैं। वह स्थान तो स्वच्छ होगा, तो भी आसन पर बैठ सकते हैं। वहाँ सब भाई-बहन मिलकर नम्मालवार, माणिक्यवाचकर आदि संतों के अच्छे-अच्छे भजन गायेंगे। जिस किसी के जीवन में ज्ञान सुनने को नहीं मिलता, वह शुष्क जीवन है। रोज देह को खाना मिले, इतने से नहीं बनता। अन्तरात्मा को भी भक्ति, ज्ञान का कुछ संस्कार होना चाहिए। लेकिन यह तभी होगा, जब सबके सब ग्रामदान हो जायेंगे।

इस तालुका में और एक महीना हमें रहना है। ये बातें जो हमने कहीं, उन्हें गाँव-गाँव में फैलाना चाहिए। इससे गाँव का जीवन पराक्रमी, शान्त और प्रेममय बनेगा।

शान्ति

गाँव में शान्ति तो होनी ही चाहिए, शहरों में दिन-रात जो आवाज चलती है, उससे दिमाग बिगड़ता है। उसी के कारण लोग पागल होते हैं और आत्महत्या की प्रवृत्ति बढ़ती है, ऐसा शास्त्रज्ञों का कहना है। अमेरिका में वह एक समस्या है। वहाँ छोटी-छोटी बातों पर लोग आत्महत्या करते हैं, और दस में से एक मनुष्य पागल होता है। अमेरिका तो समृद्ध देश कहलाता है, परन्तु वहाँ के देशवासियों के जीवन में शान्ति नहीं है। शान्ति के अभाव में बाकी सब चीजें काम नहीं देती हैं।

हमारे कार्यकर्ताओं को जीवन से संबंधित बहुत-सी बातें समाज को

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

समझानी हैं। हम एकांगी नहीं हैं। जीवन की कीमती शाखाएँ हमारे सामने हैं, जिनमें हम सुधार कर सकते हैं। जीवन-शास्त्र में सुधार, समाज-शास्त्र में सुधार, हमारे चिन्तन में सुधार, खेती के तरीकों में सुधार, संस्कारों में सुधार, धंधे विषयक सुधार, उत्सवों में सुधार, शादी की पद्धति में सुधार, तालीम में सुधार, इस तरह हरएक शाखा में, हमें सुधार करना है। ग्रामदान होता है तो कितना विशाल काम हमारे सामने है। इस तालुका में यही काम करना है।

सात्टूर (मदुरा)
८-३-'५७

गाँव का आरोग्य : २३ :

हमारा पहला कदम था कि गाँव में भूमिहीन कोई नहीं रहना चाहिए, लेकिन हमारा सबसे बड़ा कदम यह है कि गाँव में भूमि-मालिक कोई नहीं रहना चाहिए। जमीन की मालकियत मिटने के बाद ग्राम-सुधार के काम आसानी से किये जा सकते हैं। वैसे तो कई काम करने होंगे, क्योंकि इन गाँवों में ग्राम-राज्य का चित्र ही खड़ा करना है। लेकिन सबसे पहले चार बातें करनी होंगी– फसल-सुधार और किसान की मदद, ग्रामोद्योग, तालीम का इंतजाम और आरोग्य की योजना। इस तरह की चतुर्विध योजना हमने सामने रखी है। आज मैं आरोग्य के बारे में कुछ कहूँगा।

आधुनिक डाक्टरी गाँव के लिए काम की नहीं :–

जब कभी हम गाँव के बारे में सोचते हैं, तो आरोग्य की बात सामने आती है। जहाँ-जहाँ हम घूमते हैं, खासकर दूसरे जिलों में, वहाँ-वहाँ हमने देखा है कि गाँव के लोग अस्पताल की माँग करते हैं। हम नहीं समझते कि ये एलोपैथी के अस्पताल हिन्दुस्तान के गाँवों के लिए लाभदायक होंगे। वैसे किसी भी वैद्य-पद्धति में जो अच्छे औषध होंगे, उनको लेने से हम इनकार नहीं करेंगे। हमने अपना मन इस तरह से संकुचित नहीं बनाया है। परन्तु हिन्दुस्तान की

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

हालत देखते हुए हमारे कुछ विचार बने हुए हैं और हम समझते हैं कि आधुनिक डाक्टरी जिस तरह से बढ़ रही है, वह हमारे गाँवों के लिए ज्यादा काम की नहीं है। इस विषय के बारे में हम यहाँ पर चर्चा इसलिए कर रहे हैं कि हमने यहाँ पर एक सुन्दर-सा वनस्पति का बगीचा देखा, जो यहाँ के कविराज ने बनाया है। इन चार सालों में पचासों बार मैंने जिक्र किया था कि गाँव-गाँव में वनस्पति का बगीचा बनना चाहिए और वहाँ पर सुलभ जड़ी-बूटियाँ पैदा करनी चाहिए, जिससे कि लोगों के बहुत से रोग दुरुस्त किये जा सकते हैं। हिन्दुस्तान का औसत गाँव पाँच सौ जन-संख्या का होता है। हमने हिसाब लगाया कि ऐसे गाँव के लिए एक एकड़ का वनस्पति का बगीचा पर्याप्त है। यह गाँव तो बिलकुल छोटा ही है, सौ जनसंख्या का है। इसलिए यहाँ पर १.५ एकड़ का बगीचा पर्याप्त है। हमने देखा कि यहाँ का बगीचा उतना ही है। बात इतनी ही है कि इस काम का जानकार मनुष्य होना चाहिए और बगीचे में कुआँ बनना चाहिए, ताकि गर्मी के दिनों में भी पानी मिल सके। इस तरह रोग-निवारण के लिए हमने अपनी यह योजना बनायी है।

आहार-सुधार

पर हम रोग-निवारण की योजना को नम्बर दो का महत्त्व देते हैं, और रोग ही न हो इस बात को नम्बर एक का महत्त्व देते हैं। रोग न होने के लिए हमने जो कार्यक्रम रखा है, वह मैं आपके सामने रखूँगा। उसमें सबसे महत्त्व की बात यह है कि ग्रामीणों को अपना आहार सुधारना चाहिए। जिसे युक्ताहार कहते हैं, वैसा परिपूर्ण आहार सबको मिलना चाहिए। आज गाँववालों को अनाज तो कुछ मिल जाता है, लेकिन कहीं-कहीं, जहाँ पर मजदूरों को पैसे में मजदूरी दी जाती है, वहाँ पर उन्हें अनाज हासिल करने में भी मुश्किल होती है। परन्तु जहाँ पर ग्रामदान मिला हुआ है, वहाँ पर अनाज तो सबको मिलेगा। लेकिन अनाज पर्याप्त वस्तु नहीं है। आहार में और भी बहुत-सी चीजों की जरूरत होती है। मनुष्य को हर रोज ताजी तरकारियाँ काफी मात्रा में मिलनी चाहिए, गाँवों के लोगों को फल भी मिलने चाहिए और दूध पर्याप्त मात्रा में मिलना चाहिए। हमने हिसाब लगाया है कि हर मनुष्य को

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

एक सेर दूध मिलना चाहिए। इसके अलावा आहार में गुड़ और थोड़ा तेल भी होना चाहिए। जब इतनी चीजें मिलेंगीं तब शरीर स्वयमेव अच्छा रहेगा और बहुत-सी बीमारियाँ टलेंगी। जैसे यह सारा तो कृषि-सुधार की योजना के अन्तर्गत है, लेकिन यह आरोग्य सुधार का एक हिस्सा है।

दूसरी बात यह करनी होगी कि गाँव के लोगों को स्वच्छता का भान कराना होगा। इससे बहुत-सी बीमारियाँ टलेंगी। स्वच्छता के बिना आरोग्य नहीं रह सकता है। तीसरी बात यह करनी होगी कि गाँववालों को व्यसनों से मुक्त कराना पड़ेगा। शराब, गाँजा, अफीम, बीड़ी आदि सब बुरी चीजें छोड़नी चाहिए। इन चीजों का शरीर के लिए कोई लाभ नहीं है, बल्कि सब प्रकार से हानि ही है। हमारी समझ में नहीं आता है कि गाँव के लोग इन चीजों का क्यों इस्तेमाल करते हैं।

अन्न-शास्त्र : खाद्याखाद्य-विचार

इस तरह आरोग्य का विविध कार्यक्रम करना होगा। उसके बाद भी अगर रोग हुए, तो जो कार्यक्रम करना होगा उसमें एक बात है वनस्पति की जो हमने ऊपर बतलायी है। लेकिन रोग-निवारण में भी इसका हम नम्बर दो का महत्त्व देते हैं। नम्बर एक का महत्त्व हम उस चीज को देंगे, जिसे वैद्य-शास्त्र में पंचकर्म कहा है और आधुनिक भाषा में जिसे प्राकृतिक चिकित्सा कहते हैं। एनिमा, मसाज-मालिश आदि की योजना गाँव-गाँव में आसानी से हो सकती है। फिर लंघन का भी बहुत महत्त्व है। इस तरह से रोग-निवारण के लिए पंचकर्म और जड़ी-बूटी का बगीचा, ये दो बातें करनी होंगी। तीसरी बात है, भक्ष्याभक्ष्य विचार याने खाद्याखाद्य विचार। जिसे हम अन्न-शास्त्र कहते हैं, उसका ज्ञान सबको होना चाहिए। कौन-सी चीजें खानी चाहिए, कब खानी चाहिए, उसकी जानकारी सबको होनी चाहिए।

सप्त-विध-योजना

इस तरह हमने रोग न होने के लिए तीन बातें बतायीं। अब आखिर में और एक बात रहती है। इसका बहुत ज्यादा महत्त्व तो नहीं है, फिर भी यह

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

करनी पड़ती हैं। जैसे संचारी रोग फैलते हैं, तो कुछ उपाय करने पड़ते हैं, और जड़ी-बूटियों के अलावा दूसरी भी कुछ दवाइयाँ लानी पड़ती हैं। जिन दवाइयों को अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता है ऐसी दवाइयाँ विशेष बीमारियों के लिए लेनी पड़ेंगी। जैसे मलेरिया में क्वीनाइन का उपयोग किया जाय, तो हम उसका विरोध नहीं करेंगे। परन्तु जहाँ तक हो सके, ऐसी कोशिश करेंगे कि हमें दवाइयों का उपयोग करने की जरूरत ही न पड़े। उसी तरह मच्छर आदि के निवारण के लिए डी० डी० टी० का प्रयोग भी किया जा सकता है। इस तरह हमारी यह सप्त-विध-योजना हमारे गाँव के आरोग्य के लिए पर्याप्त है।

इसके अलावा जो तीव्र उपायों की योजना होती है, उसकी हमारे गाँवों के लिए जरूरत नहीं है। उससे जो लाभ होते हैं, उससे ज्यादा हानि होती है। जैसे आजकल बी० सी० जी०पर जो वाद-विवाद होता है, वह एक वृथा वाद-विवाद है। हम उसे इसलिए कहते हैं कि अभी हमने जो बात आपके सामने रखी, उतनी अगर हम कर लेते है, तो सारी चीजें टल जाती हैं, जो नाहक लोगों पर लादी जाती हैं। इसके अलावा, जिन उपचारों के बारे में डाक्टरों में सदैव से मतभेद है, और चाहे बहुत सारे डॉक्टर उसके पक्ष में भी क्यों न हों, फिर भी कुछ डाक्टरों के मन में उसके बारे में संदेह है, ऐसे विषय के बारे में सरकार की तरफ से "कैंपेन" चलाना उचित नहीं है।

हमने जो सप्त-विध योजना बतायी है, वह शहरों के लिए भी यथेष्ट है। परन्तु आजकल शहरों का जीवन बिलकुल कृत्रिम बन गया है, जहाँ पर लोगों को खुली हवा नहीं मिलती, श्रम करने का मौका नहीं मिलता है। वहाँ पर तरह-तरह के दूसरे दुराचार भी फैलते हैं, उन्हें रोकना चाहिए, लेकिन आज तो नहीं रोके जा रहे हैं। इसलिए हम जानते हैं कि वहाँ पर सप्त-विध योजना के अलावा और भी उपचारों की जरूरत होगी। लेकिन उनकी योजना में डाक्टरों का जितना उपयोग होता है, उतना यमराज का भी उपयोग होता है। इसलिए हम उस मामले में नहीं पड़ते हैं। अभी दुनिया के विद्वान् डाक्टरों ने इकट्ठा होकर चर्चा करके जाहिर किया था कि इधर तो हम नयी-नयी दवाइयाँ तैयार कर रहे हैं और उधर नये-नये रोग पैदा हो रहे हैं। हम उस

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

चर्चा में नहीं पड़ना चाहते क्योंकि हमारा यह क्षेत्र नहीं है। परन्तु हिन्दुस्तान के ग्रामों के लिए हमने जो आरोग्य की योजना रखी है वह हमारी दृष्टि से पूर्ण योजना है।

सुनाबेड़ा (कोरापुट)
२३-७-'५५

ग्राम-सफाई का महत्त्व

यह गाँव वड़ा सुन्दर दीखता है। इसकी सचमुच हालत क्या है यह हम नहीं जानते। अगर गाँव गंदे रहें तो गाँव के लोग नर्क में ही रहते हैं, ऐसा मानना चाहिए। हम गाँव-गाँव जाते हैं, तो कई गाँवों में नाक वंद करके ही प्रवेश करना पड़ता है, क्योंकि लोग गाँव के बाहर खुले मैदानों में ही पाखाना करते हैं। सारी वदबू हवा में फैलती है और बीमारी वढ़ती है। मनुष्य के मैले पर मक्खियाँ बैठती हैं। वेही मक्खियाँ खाने की चीजों पर बैठती हैं और वही हम खाते हैं। उससे बीमारी होती है। इसी का नाम नरक है। यह नरक हमारा ही पैदा किया हुआ है। ऐसे नरक में जो लोग जीते हैं, उनको मरन के वाद भगवान् स्वर्ग में कैसे भेजेगा? वह कहेगा कि यह तो नरक का ही प्राणी है, इसलिए इसको यहाँ भी नरक में ही भेजना चाहिए। कई लोग रोज स्नान करते हैं, भस्म लगाते हैं, हाथ-पाँव दो-दो, चार-चार बार साबुन से धोते हैं, छुआछूत मानते हैं। परन्तु जिस पर मक्खियाँ बैठती हैं, वह खाना जरूर खा लेते हैं। मनुष्य के मैले का अच्छा उपयोग हो सकता है। खेत में एक खुरपी लेकर जाना चाहिए। वहाँ एक गड्ढा बनाना चाहिए, उस पर पाखाने के लिए बैठना चाहिए। वाद में उस पर मिट्टी और घासफूस डालना चाहिए। इतना कर लिया जाय तो वदबू नहीं आयेगी, मक्खियाँ नहीं बैठेंगी और बीमारी भी नहीं फैलेगी। इसके अलावा उसका सुन्दर खाद होगा, तो फसल भी अच्छी आयेगी। मनुष्य के मैले की वदबू आती है, क्योंकि उसके परमाणु नाक में जाकर बैठते हैं। कान, आँख और मुँह में भी ये परमाणु घुस जाते ही हैं। इसलिए

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

मैले को ढँकना चाहिए। ढाँकेंगे तो हानि टलेगी और लाभ होगा। चीन और जापान में मनुष्य के मैले का खाद में बहुत अच्छा उपयोग किया जाता है। साल भर में उससे एक मनुष्य के पीछे छह रुपये की फसल बढ़ेगी। अगर मनुष्य के मलमूत्र का अच्छा उपयोग करेंगे, तो मान लीजिये कि एक गाँव में ५०० मनुष्य हैं, तो ३,००० रुपये की फसल बढ़ेगी। आज तो ३,००० रुपये की बीमारी होती है। बीमारी बढ़ती है, तो पैसे भी जाते हैं और शरीर का भी क्षय होता है। इसलिए गाँव में खूब स्वच्छता होनी चाहिए।

हमने एक गाँव में डेढ़ साल तक यह काम किया है। लोग रोज मैला करते थे और हम उठाते थे। हम हाथ में फावड़ा और लोहे का गमला लेकर जाते थे। डेढ़ साल तक हमने यह काम किया। बाद में लोग मिट्टी डालने लगे, सबको मिट्टी डालनी चाहिए, तभी गाँव की दौलत और अक्ल बढ़ेगी।

व्यक्तिगत सफाई

हम हिन्दुस्तान के लोग दिन में एक दफा भी स्नान किये बिना भोजन नहीं करते। चार लोटे पानी हो तो काफी है। लेकिन इससे सन्तोष नहीं मानना चाहिए। ठीक तरह से स्नान जरूर करना चाहिए। अगर गाँव में पानी न हो,तो सबको मिलकर इंतजाम करना चाहिए। आप लोग कहते हैं कि यहाँ पानी कम है, लेकिन कपड़े तो सबने दो-दो पहने हैं। उससे पसीना भी ज्यादा होता है। फिर स्नान नहीं करेंगे, तो कैसे चलेगा ? दिन में खुले बदन रहते हैं, तो सूर्यकिरणें मिलती हैं और शरीर भी अच्छा रहता है। आपको स्नान के लिए पानी नहीं मिलता है, लेकिन आप बालों में तेल तो डालते हैं। सुन्दरता के लिए आप बाहर का तेल डालते हैं, जिसमें कुछ बुराइयाँ होती हैं। उससे बाल जल्दी पक जाते हैं और सौंदर्य के बदले कुरूपता आ जाती है। अगर बाल में तेल डालना है, तो गाँव की मूँगफली का तेल डालना चाहिए।

गाँव में स्वच्छता रखेंगे तो गाँव में धर्म रहेगा। जिस गाँव में स्वच्छता होगी, वहाँ सरस्वती बसेगी। जहाँ गंदगी होती है, वहाँ विद्या आती ही नहीं। सरस्वती का आसन कमल है। वह मैले में कभी नहीं बैठती। गाँव में उद्योग

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

अगर नहीं चलते हैं, सब चीजें बाहर से मँगवाते हैं, तो आपकी लक्ष्मी आपके गाँव में नहीं रहेगी और आपके गाँव की जमीन चन्द लोगों के हाथ में रहेगी और बाकी लोगों को पूरा खाना नहीं मिलेगा, तो गाँव में शक्ति भी नहीं रहेगी। इसलिए अगर आप गाँव में सरस्वती, लक्ष्मी और शक्ति, तीनों को रखना चाहते हैं, तो गाँव में स्वच्छता रखनी होगी, गाँव के उद्योग बढ़ाने होंगे, अपनी चीजें खुद तैयार करनी होंगी और गाँव की जमीन सबमें बाँटनी होगी।

पोन्नक्कलीवलसु
२-११-'५६

ग्रामदानी गाँवों की विशेषता : २४ :

मेलूर तालुका का यह हमारा आखिरी पड़ाव है। इस तालुका में ४० गाँवों ने ग्रामदान जाहिर कर दिया। अब इन गाँवों के लोग किस तरह जीवन बितायेंगे? दूसरों के जीवन से इनके जीवन में क्या फर्क रहेगा?

पहला फर्क तो यह पड़ेगा कि दूसरे गाँव में कोई बड़े मालिक, कोई छोटे मालिक तो कोई भूमिहीन, ऐसा भेद रहेगा। ग्रामदानी गाँव में यह फर्क नहीं रहेगा। यह बहुत बड़ी बात है। एक ही गाँव के अड़ोस-पड़ोस में हम रहते हैं। पड़ोसी के घर में दुख है और हम सुख-चैन से रहें, यह कोई शोभादायक बात नहीं है। अपने सुख का हिस्सा दूसरे को देकर दुखी को सुखी बनाना ही हमारा धर्म है। अपने सुख में से एक हिस्सा हम दूसरे को देते हैं, तो हमारा सुख घटता नहीं है और दूसरे का दुख घटता है। एक छोटा-सा बालक, बिलकुल आनन्दमय चेहरा! उसके सामने कोई दुखी जीव आयेगा तो वह हँसकर दुखी को खुश करेगा। सुख में यह शक्ति है। जब हम दूसरे को सुख देते हैं, तो वह फौरन सुखी होता है और हम भी सुखी होते हैं। मान लीजिये, मैं पढ़ा-लिखा हूँ और आप अपढ़ हैं। मैं आपको अगर पढ़ना-लिखना सिखाता हूँ, तो मेरी विद्या घटती नहीं है, बल्कि मजबूत और पक्की बनती है। यह मनुष्य-जीवन की खूबी है। इसमें हम जितनी दूसरे को मदद देते हैं, उतनी हमें मदद मिलती है। बाप बेटे की खूब मदद करता है, उससे लेता कुछ नहीं है तो

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

भी उसको लाभ होता है। इसे बाप जानता है, इसलिए बेटे की मदद करता है। इस तरह अपने पड़ोसी की मदद करते हैं, तो खोते नहीं, पाते ही हैं।

दौलत क्यों चाहिये ?

मनुष्य के जन्म में पाने की चीज पैसा नहीं है। मरने के बाद पैसा साथ में आनेवाला नहीं है। उसको यहीं छोड़कर जाना होगा। यहाँ भी पैसा अपने पास रखो तो बेटे के साथ झगड़ा होगा, चोर को चोरी करने की प्रेरणा होगी, ताला लगाकर कुंजी अपने पास रखनी होगी, रात में सोने के समय दरवाजा बंद नहीं किया तो पास में लाठी रखकर सोना पड़ता है। लेकिन वह सोया हुआ है और चोर जागा हुआ है। लाठी किसके काम आयेगी ? इसलिए संपत्ति प्राप्त करने की चीज नहीं है। प्राप्त करने की चीज है प्रेम। जिसने प्रेम हासिल किया उसने बड़ी भारी दौलत हासिल की।

दौलत क्यों चाहिए ? बच्चों की अच्छी पढ़ाई के लिए सिखानेवाले के लिए पैसा चाहिए। परन्तु आप दूसरे की मदद करते जायेंगे तो सिखानेवाला भी मुफ्त में सिखायेगा। आज तो डॉक्टर बिना विजिट दिये बीमार को देखने भी नहीं आता, क्योंकि उसने किसी की मदद नहीं की। बाबा बीमार पड़ता है, तो डॉक्टर उसे देखने के लिए आते हैं। बाबा उनको कुछ पैसा नहीं देता, बल्कि वे तो परमेश्वर का उपकार मानते हैं कि बाबा की सेवा करने का उनको मौका मिला। ऐसा ही गाँव का होना चाहिए। गाँव की फसल का एक हिस्सा वैद्य को दे दिया। वह प्रेम से बिना कोई फीस गाँव के बीमारों की सेवा करेगा।

यह कोई नयी योजना नहीं है। पहले ऐसी ही योजना थी। गाँव के बढ़ई, चमार, कुम्हार, लुहार आदि सब कारीगरों को, गुरुजी को, वैद्य को फसल का एक हिस्सा दिया जाता था और वे गाँव को अपनी मुफ्त सेवा देते थे। जिस किसी घर में काम हो, बढ़ई कर देता था। किसी घर से साल भर में कुछ काम नहीं निकला तो भी उसको फसल का हिस्सा मिल जाता था। किसी घर में ज्यादा काम निकला, तो वह भी बढ़ई कर देगा। इसी तरह सब कारीगर करेंगे। गाँव के सुख में सबका सुख और गाँव के दुख में सबका

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दुख। किसी साल फसल कम आई, तो सबके हिस्से में कम आयेगी। किसी साल फसल अच्छी आई, तो सबको ज्यादा मिलेगा। किसान के सुख से सब सुखी, उसके दुख से सब दुखी। सुख-दुख बाँटना, यही मनुष्य का जीवन है, क्योंकि यह जीवन प्रेम से भरा है। प्रेम ही मानव-जीवन है। उन चालीस गाँवों में प्रेममय जीवन बिताने का प्रयत्न किया जायेगा।

शादी के लिये व्यक्तिगत कर्ज नहीं लेना पड़ेगा। शादी सार्वजनिक उत्सव मानी जायगी। शादी का खर्च सारा गाँव उठा लेगा। इसलिए शादी में कर्ज की जरूरत नहीं पड़ेगी। कर्ज भी ग्रामदान के गाँव में न कोई लेगा, न उसको मिलेगा। पहले का जो कर्ज होगा वह सारे गाँव का माना जायेगा। सब एक हो जायेंगे तो साहूकार के पंजे से मुक्त हो जायेंगे।

फन्दे से मुक्त

गाँव की एक दूकान बनेगी। जिसमें हर घर का या तो रुपये का था तो श्रम का हिस्सा रहेगा। सारी खरीद-विक्री वह दूकान ही करेगी। फिर बाहर का व्यापारी किसी व्यक्ति को ठग नहीं सकेगा, फिर साल भर में हिसाब निकलेगा कि गाँव को इतना तेल चाहिए, उतना तेल बाहर से खरीदा गया तो वह गाँव में ही क्यों न बनाया जाय? जितना तेल साल भर में चाहिए उस हिसाब से गाँव में तेल बनाया जायगा। तो गाँव में एक धंधा खड़ा होगा। इसी तरह कपड़े, गुड़, जूते आदि विषय में भी पराधीन नहीं रहेंगे। कच्चे माल को पक्का माल बनाने की योजना गाँव में ही होनी चाहिए।

सब प्रेम से रहेंगे तो झगड़े कम होंगे, वकीलों के फंदे से मुक्त होंगे। फिर सारे गाँववाले मिलकर इंतजाम करेंगे कि रात में बैल एक-दूसरे के खेत में न चले जायँ। इस वास्ते सबको जगने की जरूरत नहीं होगी। पारी के मुताबिक हर व्यक्ति को नियुक्त किया जायगा। सब अपनी-अपनी बारी के मुताबिक जगेंगे और बाकी लोग आराम से सो सकेंगे।

अभेद में सच्ची भक्ति

यह सब आप लोगों को भी सोचना चाहिए। ग्रामदान के गाँव में सबसे

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

बड़ी बात तो यह होगी कि सब मिलकर रात को भगवान् का भजन करेंगे, वे सच्चे भक्त बनेंगे, क्योंकि उन्होंने ऊँच-नीच भेद रखा ही नहीं। "जाति कुलम् पाहप्पुमै शुकहलीके इलह वेंडुम्।" जाति, धर्म, कुल आदि के पंजे से छूटना चाहिए, ऐसा माणिक्यवाचकर ने कहा है। ग्रामदान के गाँव में कोई ऊँचा कोई नीचा, ऐसा भेद रहेगा ही नहीं। जब तक ये भेद नहीं मिटते, तब तक सच्ची भक्ति नहीं होगी। ये सारे भेद मिट जायेंगे, तो सारे भक्त प्रेम से रात को भगवद् भजन करेंगे और फिर सिर्फ बिछौने पर नहीं, ईश्वर की गोद में सो जायेंगे।

मालकियत अधर्म है

हम चाहते हैं कि आप इस भक्ति-मार्ग को समझ लें, तो आपका गाँव सुखी होगा। जब चालीस गाँव ग्रामदान हो गये, तो बाकी क्यों नहीं हो सकते। सब ग्रामदानवाले भाई निकलेंगे और समझायेंगे कि हमने तो ग्रामदान का मीठा गुड़ खाया है, तुम भी खाओ, भैया! इस तरह वे समझायेंगे तो खूब हवा फैलेगी और यह मालकियत रूपी राक्षस खतम हो जायेगा। यह भयानक राक्षस है। पुराने जमाने में रावणादि राक्षसों के नाम लिये जाते हैं, लेकिन यह राक्षस तो उनसे भी ज्यादा क्रूर है। परन्तु आप लोग समझते ही नहीं कि यह राक्षस है। कहते हैं कि हम मालिक हैं, क्योंकि हमारे पास पट्टा के कागज हैं। भगवान् ने क्या तुमको यह कागज दिया था? तो जवाब देते हैं कि सरकार ने दिया। सरकार को क्या अधिकार है इस तरह का पट्टा देने का? क्या जमीन सरकार के बाप की है? जमीन तो परमेश्वर की है। हाँ, अगर भगवान् ने पट्टा लिखकर दिया हो, तो बताओ। जमीन तो भगवान् की कृति है। उसके हम मालिक कैसे बनें? यह गलत विचार है, भक्ति मिट गयी है। वास्तव में मालिक वह है। हम अगर परमेश्वर की जगह लेकर मालिक बन जायेंगे, तो वह बात भक्ति के विरुद्ध होगी, वह अधर्म होगा। जहाँ धर्म और भक्ति नहीं रहेंगे, वहाँ सुख भी नहीं रहेगा। फिर वहाँ तरह-तरह के झगड़े, पाप, व्यभिचार, चोरी, मारामारी, गालियाँ, मत्सर आदि

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

चलेंगे। यह सबका सब ग्रामदान से खतम हो जायेगा। आप सब लोग भी इस बात पर सोचें और आप भी ग्रामदान करें और भगवान् के भक्त बनें।

परली (मदुरा)
२६-२-'५७

ग्रामदान में धर्म, अर्थ और विज्ञान का विचार : २५ :

मध्यम ग्राम की विशेषता

आपका गाँव ऐसा है, जो न बहुत बड़ा है, न बहुत छोटा। ग्रामराज्य बनाने के लिए इसे बहुत ही अनुकूल माना जाना चाहिए। छोटे गाँवों में जमीन की मालकियत तो मिट ही सकती है। परन्तु ग्रामराज्य के लिए जितने काम करने होते हैं, वे कुल के कुल काम, एक छोटे से गाँव में होना, कुछ कठिन हो जाता है। बहुत बड़े गाँव में परस्पर संपर्क बनाना, जमीन की मालकियत मिटाकर गाँव का एक परिवार बनाना कठिन हो जाता है। परन्तु यह गाँव इतना बड़ा नहीं कि यहाँ के लोग एक दूसरे को न जानें, और इतना छोटा नहीं कि कुल काम एक गाँव में न हो सके। यह मध्यस्थितिवाला गाँव है। कभी-कभी ऐसा होता है कि ये मध्यस्थितिवाले गाँव बहुत ही खराब होते हैं। बड़े गाँवों में जैसी बुद्धि होती है, वैसी बुद्धि भी यहाँ नहीं होती और छोटे गाँवों में जो श्रद्धा होती है, उसकी भी यहाँ कमी होती है। इधर की बुद्धि और उधर की श्रद्धा, दोनों न होने के कारण ये ग्राम बिलकुल ही कार्यहीन बन जाते हैं। परन्तु इन बीच के गाँवों में बुद्धि और श्रद्धा, दोनों का जोड़ हो, तो ये गाँव बहुत आगे बढ़ेंगे। बिलकुल छोटे गाँवों के लोग इकट्ठा काम करने के लिए तो राजी हो सकते हैं, लेकिन वे हिसाब-किताब नहीं जानते। बड़े शहरों के लोग हिसाब वगैरह खूब जानते हैं; समाजवाद, साम्यवाद इत्यादि "वाद" भी बकते हैं, परन्तु मिल-जुलकर काम करना नहीं चाहते, अपना-अपना स्वार्थ ही देखना चाहते हैं। वे हिसाब तो जानते हैं, परन्तु उसका उपयोग केवल स्वार्थ के लिए करते हैं। आपका गाँव बीच का गाँव है। अतः छोटे गाँव के मुआफिक मिल-जुलकर काम करने के लिए तैयार हो जायँ, हिसाब भी अच्छी तरह जानते हो,

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

तो आपके गाँव में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहेगी। आपके गाँव में छोटे और बड़े गाँवों के गुण इकट्ठा हुए हैं, या दोष, मैं नहीं जानता। परन्तु आप लोग ग्रामदान का भी विचार करते हैं, इसलिए हम समझते हैं कि आपके हृदय में गुण हैं।

ग्रामदान एक अत्यन्त परिशुद्ध धर्म-विचार है। हम यह भी कहना चाहते हैं कि ग्रामदान एक अत्यन्त आधुनिक अर्थ-शास्त्रीय विचार है, और एक अत्यन्त परिशुद्ध वैज्ञानिक विचार है। याने इसमें धर्म-विचार, अर्थ-विचार और विज्ञान-विचार, तीनों इकट्ठा हुए हैं। तीनों विचारों की कसौटी पर ग्रामदान का विचार अच्छी तरह से खरा उतरता है।

धर्म-विचार

धर्म कहता है कि किसी एक को भी दुःख है, तो उसके दुःख में सबको हिस्सा लेना चाहिए। गाँव में किसी एक को भी फाका करना पड़ता है, तो सब लोग फाका करें याने किसी को फाका करने न दें, खुद कम खाकर उसे खिलायें। आप जानते हैं कि चावल के ढेर से एक सेर चावल निकाल लिया जाय, तो वहाँ पर एक सेर के आकार का गढ़ा पड़ जाता है, लेकिन आप कुँए में से एक बालटी पानी निकाल लेते हैं, तो वहाँ बाल्टी के आकार का गढ़ा नहीं पड़ता है, बिलकुल जैसे पहले समतल था, उसी तरह समतल हो जाता है, सिर्फ स्तर थोड़ा नीचे गिर जाता है। दोनों में यह फर्क इसलिए पड़ा कि पानी के बिन्दुओं में परस्पर इतना प्रेम है कि वे एकदम मदद के लिए दौड़े आते हैं। आपने कुएँ से बालटी भर पानी निकाला और उसमें गढ़ा पड़ने की तैयारी हुई, कि बाकी सारे बिन्दु उस गढ़े को भरने के लिए दौड़ जाते हैं। धर्म कहता है कि समाज में पानी के बिंदुओं के समान प्रेम होना चाहिए। ज्वार के ढेर में गढ़ा पड़ता है, क्योंकि ज्वार के दाने अपने को अलग-अलग मानते हैं। और गढ़ा भर देने में मदद नहीं करते हैं। लेकिन उसमें भी कुछ थोड़े महात्मा दाने होते हैं, जो गढ़ा भर देने के लिए अन्दर कूद पड़ते हैं। लेकिन वे थोड़े होते हैं। बाकी दानों को कोई पर्वाह नहीं होती कि अपने ढेर में गढ़ा पड़ रहा है। वे बैठे ही रहते हैं, इसलिए गढ़ा कायम रहता है। जिस समाज के लोग

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

ज्वार के ढेर के समान हैं, उस समाज में धर्म नहीं है। जिस समाज की रचना में पानी का सद्भाव आ गया, वहाँ धर्म हैं। आपके गाँव में पाँच घरों को खाना नहीं मिल रहा है, वहाँ गढ़ा पड़ रहा है, और बाकी सब लोग उनकी मदद में चले जाते हैं, खुद कम खाकर उन्हें खिलाते हैं और गढ़ा भरते हैं, इसका नाम है धर्म-विचार। इसी को "करुणा" कहते हैं, इसी को "प्रेम कहते हैं। यही परमेश्वर का रूप है।

ग्रामदान के काम में करुणा प्रत्यक्ष प्रकट होती है। ग्रामदान से पहला लाभ यह होगा कि हमें दूसरों के लिए फाँका करने का मौका मिलेगा। हम इसे बहुत बड़ा भाग्य समझते हैं। माता पर बच्चे के लिए फाँका करने की नौबत आना माता के लिए गौरव की बात है। माता खुद फाका करके बच्चों को खिलाती है, यही गृहस्थाश्रम का वैभव है। एक ऐसा जवान है, जिसकी शादी नहीं हुई है। वह अगर रास्ते में पेड़ पर आम देखेगा, तो तोड़ कर खा लेगा। लेकिन शादी होने के बाद वह आम तोड़कर खायेगा नहीं, बच्चों को खिलाने के लिए घर ले जायेगा। गरीब मनुष्य शादी करता हैं तो क्या उससे उसकी आमदनी बढ़ती है? शादी के पहले उसके घर में जो दूध था, उसे वह खुद पी लेता था, परन्तु शादी के बाद वह बच्चों के लिए दूध रखता है, खुद नहीं पीता। अगर उससे पूछा जाय कि तुझे दूध क्यों नहीं मिलता, तो वह कहेगा कि "घर में एक ही गाय है, उसका दूध बच्चों के लिए ही पर्याप्त है। ज्यादा नहीं है।" अगर उससे पूछा जाय कि तू क्यों नहीं पीता, तो वह कहेगा कि पहले बच्चों का हक है। इस तरह से त्याग की कल्पना आई। इसी लिए गृहस्थाश्रम को "धर्म" माना गया है। जिसकी शादी नहीं हुई, उस मनुष्य को कोई भी अच्छी चीज देखकर खाने की इच्छा होती है। लेकिन शादीशुदा, बाल-बच्चेवाले मनुष्य को खाने की इच्छा नहीं होती, बल्कि वह चीज घर लाने की इच्छा होती है। अगर कोई उससे पूछेगा कि "शादी करने से तुम्हारी उपज कितनी बढ़ी और क्या अब तुम्हें खाना-पीना अच्छा मिलता है? तो १०० में से ९९ का उत्तर यही होगा कि शादी करन के बाद हमें उतना अच्छा खाना-पीना नहीं मिलता। परन्तु उसमें उन्हें आनन्द महसूस होता है, त्याग करने का मौका मिलता है। हमसे भी लोग पूछते हैं कि

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

क्या ग्रामदान के बाद गाँव की उपज बढ़ेगी ? आज जितना अच्छा खाना मिलता है, उससे ज्यादा अच्छा मिलेगा ? हम कहते हैं कि ऐसा कोई वचन हम नहीं देते हैं। हम इतना ही वचन देते हैं कि "ग्रामदान के बाद, आपके गाँव में जो दुःखी लोग हैं, उनके दुःख में हिस्सा लेने का मौका मिलेगा। यह है ग्रामदान का धर्म-विचार।

अर्थ-विचार

अब ग्रामदान के अर्थ-विचार के बारे में आज गाँव में जमीन के छोटे-छोटे टुकड़े हैं। कुछ लोगों के पास बहुत ज्यादा जमीन है, कुछ लोगों के पास कम है, कुछ लोगों के पास कुछ भी नहीं है। किसी खेत में कुछ टीले और कुछ गढ़े हों तो क्या वहाँ अच्छी फसल होगी ? टीलों पर सारा पानी बह जाने के कारण फसल नहीं होगी और गढ़ों में पानी पड़ा रहने के कारण अच्छी फसल नहीं होगी। अगर टीलों की मिट्टी काटकर गढ़ों में डाली जाय और खेत समतल बनाया जाय, तो अच्छी फसल होगी, इस बात को सब किसान जानते हैं। आज समाज में सम्पत्ति के टीले हैं और कुछ बिलकुल भूखे दरिद्री गढ़े हैं। ऐसे समाज में अच्छा अर्थोत्पादन नहीं हो सकता। जिस समाज में ऐसे ऊँचे टीले और गढ़े नहीं होंगे, सबकी सम्पत्ति इकट्ठा होकर समाता आयी होगी, सहयोग आया होगा, उसी समाज में अर्थोत्पत्ति बढ़ेगी। समाज का अर्थ यह नहीं कि बिलकुल ही समान, जैसे हाथ की अँगुलियों को काटकर समान बनाया हो। समाज में पाँच अँगुलियों के जैसी समानता रहनी चाहिए। अँगुलियों में कुछ छोटी-बड़ी जरूर होती हैं, परन्तु उनमें एक अँगुली एक इंच लम्बी तो दूसरी एक फुट, ऐसा नहीं होता। अगर ऐसा हो, तो हाथ से बालटी उठाना भी सम्भव नहीं होगा। अँगुलियों में थोड़ी कम-बेसी है, फिर भी वे करीब-करीब समान हैं, हरएक में अपनी अलग-अलग ताकत है और सब मिल-जुलकर काम करती हैं। इसलिए उनसे हजारों काम बनते हैं। पाँचों अँगुलियों को इकट्ठा होना पड़ता है, तब काम होते हैं। इस तरह से कुछ काम तभी बनते हैं, जब सब इकट्ठे होते हैं, सब सावधान रहते हैं, सब सहयोग करते हैं। यह है अर्थ-विचार।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

यहाँ पर जो सारे लोग बैठे हैं, वे बाहर का कपड़ा खरीदते हैं, गाँव के बुनकर का कपड़ा नहीं खरीदते। बुनकर अपना कपड़ा लेकर बाहर बेचने जाता है और न बिका तो सरकार के सामने रोता है। अगर बुनकर और किसान इकट्ठे होंगे और निश्चय करेंगे कि किसान जो सूत कातेंगे, वही बुनकर बुनेंगे और बुनकर जो बुनेंगे, वही कपड़ा किसान पहनेंगे, तो दोनों जियेंगे। आज गाँव में बुनकर हैं और तेली हैं। लेकिन गाँव का बुनकर अपने ही गाँव के तेली का तेल यह कहकर खरीदता नहीं कि वह महँगा है, और शहर के मिल का तेल खरीदता है। गाँव का तेली गाँव के बुनकर का कपड़ा महँगा कहकर खरीदता नहीं, और शहर के मिल का कपड़ा खरीदता है। दोनों एक ही गाँव में रहते हैं, परन्तु न तेली का धंधा चल रहा है, न बुनकर का, क्योंकि दोनों एक-दूसरे की मदद नहीं करते हैं। मान लीजिये, बुनकर ने तेली का तेल खरीदा, वह थोड़ा महँगा था। इसलिए बुनकर की जेब से तेली के घर दो पैसे ज्यादा गये। फिर तेली ने बुनकर का कपड़ा खरीदा, वह थोड़ा महँगा था। इसलिए तेली की जेब से दो पैसे बुनकर के घर गये, तो क्या फर्क पड़ा ? इसके घर से उसके घर में पैसे गये और उसके घर से इसके घर में गये। मौके पर दोनों को मदद मिली, तो क्या नुकसान हुआ ?

तुम्हारे घर की लड़की दूसरे के घर गयी और दूसरे के घर की लड़की तुम्हारे घर आयी, तो क्या नुकसान हुआ ? उसमें दोनों का भला हुआ और व्यवहार चला। मेरी इस जेब से पैसा उस जेब में गया और उस जेब से इस जेब में आया, तो मेरा क्या नुकसान हुआ ? क्योंकि दोनों जेबें मेरी ही हैं। एक ही गाँव में बुनकर है, किसान है, चमार है, तेली है। लेकिन तेली के तेल के लिए गाँव में ग्राहक नहीं है, बुनकर के कपड़े के लिए और चमार के जूतों के लिए ग्राहक नहीं हैं, यह क्या बात है ? गाँव में इतने सारे लोग पड़े हैं, वे क्यों नहीं ग्राहक बनते ? इसका कारण यह है कि 'यह मेरा गाँव है' ऐसा कोई सोचता ही नहीं। अगर एक गाँव में रहकर भी "यह मेरा घर है" इतना ही सोचेंगे, तो गाँव का काम नहीं बनेगा। गाँव के किसी एक घर में चेचक हो, तो सारे गाँव में उसकी छूत लगती है। क्या उसे रोक सकते हैं ? गाँव

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

में एक घर में आग लगे, तो पड़ोसी के घर को भी लगती है। क्या उसे रोक सकते हैं? इसलिए कुल गाँव मिलकर एक परिवार है, ऐसा समझो, तब काम बनेगा। अगर हम चाहते हैं कि यह जगह साफ रहे और यहाँ के दो घरवाले उसे साफ रखें, परन्तु दूसरे दो घरवाले यहाँ पर अपन लड़कों को पैखाने के लिए बैठाते हैं, तो क्या यह जगह साफ रहेगी? यह जगह तो तब साफ रहेगी, जब चारों घरवाले मिलकर निश्चय करेंगे कि हम उसे साफ रखेंगे। इसलिए गाँव का काम, गाँव की उन्नति और साथ-साथ घर की भी उन्नति तो तब होगी जब गाँववाले सारे गाँव को अपना एक परिवार मानेंगे। ग्रामदान से यह कार्य होगा, यह इसका अर्थ-शास्त्रीय विचार है।

विज्ञान-विचार

यह विज्ञान का जमाना है। इस जमाने में हम मिलजुल कर काम नहीं करते, अलग-अलग करते हैं, तो टिक नहीं सकते। इस जमाने में कोई भी देश दूसरे देश की मदद के बिना टिक नहीं सकता। कोई भी प्रदेश दूसरे प्रदेश की मदद के बिना टिक नहीं सकता। कोई भी ग्राम, दूसरे ग्राम की मदद के बिना टिक नहीं सकता। कोई भी घर दूसरे घर की मदद के बिना टिक नहीं सकता। बाबा ने चश्मा पहना है, अगर वह चश्मा नहीं होता तो बाबा यात्रा ही नहीं कर सकता, क्योंकि वह अंधा हो जाता। लेकिन यह चश्मा बाबा ने नहीं बनाया है, अभी हम जिस लाउड स्पीकर का उपयोग करते हैं, वह गाँववालों ने नहीं बनाया है, दूसरों ने बनाया है। इस तरह हम अपने जीवन में ऐसी पचासों चीजें देखेंगें, जो दूसरों ने बनायी हैं। इस विज्ञान के जमाने में हम टुकड़े-टुकड़े नहीं कर सकते हैं। यहाँ के कुछ लोग सोचते हैं कि हमारा यह तमिल-नाड है, हम अपना अलग देश बनायेंगे। अभी श्रीलंका से तो अलग पड़ ही गये हैं, भारत से भी अलग पड़ेंगे और अपना स्वतन्त्र जीवन बितायेंगे, तो बिलकुल ही शुष्क हो जायेंगे। आप लोग उधर गोदावरी नदी के पानी की माँग कर रहे हैं, उसके बिना आपका चलेगा नहीं। आपको सोचना चाहिए कि विज्ञान के ज़माने में हम छोटे-छोटे फिरके बनायेंगे, तो नहीं टिकेंगे।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

इसलिए राष्ट्रों का सहयोग करना होगा, प्रान्तों, का ग्रामों का सहयोग करना होगा, तभी लोग टिक सकते हैं। यह विज्ञान का विचार है, जो ग्रामदान के पीछे है।

काडुविलारय (मदुरा)
१८-१२-'५६

ग्रामदान + ग्रामसंकल्प = ग्राम उदय : २६ :

समग्र विचार

यह परिषद् एक विशेष प्रकार की है। जिस विचार के लिए यह परिषद् बुलायी गयी है, यह विचार वैसे तो पुराना है। इसे हम समग्र-विचार कहते हैं। इसके बारे में बापू के रहते भी काफी चर्चा हुई थी और बापू ने उस पर जोर भी काफी दिया था। लेकिन कई कारणों से हम समग्रता नहीं ला सके। छोटे-छोटे कपड़े के टुकड़े सीकर वह थान नहीं बनता जो बुनने से बनता है। समग्रता में वह सिलाई नहीं है, उसमें बुनाई है। उसमें भिन्न-भिन्न कार्य भिन्न-भिन्न प्रकार के तंतु के समान हैं और सब मिलाकर एक सुंदर वस्तु का निर्माण होता है। यह अंतरंग एकता की बात है, बहिरंग संयोग की बात नहीं है। मिट्टी के कणों ने मिलकर के घड़ा बनाया तो घड़ा कणों के संयोग से बना है। वह सब मिलकर के एक रूप बना। वह यहाँ तक एकरूप हुआ कि उसके अंदर जो मिट्टी है, उसका रूप भी बदल गया। ग्रामोद्योग, खादी, हरिजनसेवा, स्त्री-उन्नति, नयी तालीम इत्यादि विविध कार्य अलग-अलग रूप से शुरू हुए थे। उसमें बाबा ने अब भूदान और जोड़ दिया। लोग यह कबूल करते हैं कि यह कोई बाहरी चीज नहीं है। यह रचनात्मक काम का एक अंग है, इसी तरह वे उसका स्वागत करते हैं। लेकिन जिसका स्वागत हुआ और जिसको भिन्न-भिन्न दूसरे कार्यों के साथ जोड़ने का तय हुआ, फिर भी उसमें समग्रता नहीं आयी। यहाँ जो जमात इकट्ठी हुई है, जहाँ तक मैं समझता हूँ, वह समग्रता कैसे पैदा हो, इसका चिंतन करने के लिए इकट्ठी हुई है। हम जानते हैं कि सब कबूल करते हैं कि रचनात्मक काम करनेवाले सब मिलकर जितनी

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

ताकत रखते हैं, शायद ही दूसरी कोई मंडली इतनी ताकत रखती है। राजनैतिक संस्थायें कई होती हैं और उनके पास संख्या में बहुत ज्यादा कार्यकर्ता होते हैं, परंतु अपना कुल समय उसी काम में लगानेवाली बड़ी जमात रचनात्मक काम करनेवालों में है, उतनी बड़ी जमात राजनैतिक संस्था के पास भी नहीं है। और भी किसी मंडली में नहीं है। लेकिन आज तक अलग-अलग चिंतन मिटा नहीं है। आज हम लोगों में कोई खादी के एक्सपर्ट होते हैं, कोई ग्रामोद्योगी विज्ञ हैं,कोई कहता है कि छूआछूत भेद मिटना चाहिए, यही मुख्य समस्या है, कई लोग बाबा को पत्र लिखते हैं कि बाबा, किस भ्रम में हो? गाय का प्रश्न आप हाथ में क्यों नहीं उठाते ? अभी कांचीपुरम् सम्मेलन में एक भाई ने हमसे कहा कि कितने दिन सम्मेलन चला, लेकिन गाय का नाम ही नहीं निकला। तब बाबा ने जवाब दिया कि बच्चा माँ का नाम नहीं लिया करता, वह उसका काम ही किया करता है। बाबा रोज़ गाय का दूध और दही खाता है, इसलिए गाय को वह भूल नहीं सकता। भूदान के आधार पर गाय की रक्षा हो सकेगी। खैर, तो एक यह विनोद हो गया। परंतु हमको यही सोचना है कि सारे गाँवों का उदय, जिसे हम ग्रामोदय कहते हैं, कैसे हो। उसमें सारी अलग-अलग चीज़ें आयेंगी, लेकिन वह एक स्वतंत्र कला होगी। दो चार-पाँच टुकड़े इकट्ठा करके वह चीज़ नहीं होगी, वह जीवन को बनाने की, विचार बदलने की, और हृदय-परिवर्तन की बात है।

गरजनेवाले बरसते नहीं

गांधीजी बहुत दफा हृदयपरिवर्तन शब्द का इस्तेमाल करते थे। अक्सर भिन्न-भिन्न विचार के लोग इसका मखौल करते हैं, गांधीजी के अनुयायी यह समझते हैं कि हमको दूसरे का हृदय-परिवर्तन कराना है। इससे अधिक गलत विचार हो नहीं सकता। हम दूसरे का हृदय परिवर्तन कहाँ तक करा सकेंगे, यही चर्चा दोनों पक्षों में चलती है। एक कहता है कि यह जरूर हो सकेगा, दूसरा कहता है कि उसकी मर्यादा है, उससे ज्यादा नहीं होगा,। लेकिन दोनों पक्ष उसका असली अर्थ भूल जाते हैं, उसका असली अर्थ यही है कि हृदय परिवर्तन हमारा निज का ही बाकी है। हमको यह लगता है कि हृदय-परिवर्तन

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

याने हमेशा सामने वाले का, दुश्मन का, दुर्जन का हृदय-परिवर्तन। लेकिन यह दुश्मन और दुर्जन, यहीं हमारे हृदय में ही बैठा है, यह छिपा हुआ है। और कभी-कभी प्रकट होता है, परंतु हम उसकी ओर ध्यान नहीं देते हैं, उसका परिणाम यह हुआ कि एक जमाने में खादी जो आदर की भाजन थी, वह बीच में तिरस्कार-भाजन तक हो गयी। छाती के ऊपर तो खादी आ गयी, लेकिन वह अंदर नहीं गयी। सिर के ऊपर खादी आ गयी, लेकिन सिर के अंदर नहीं गयी है। वह चीज़ क्या है, यह हमको देखना चाहिए। इन दिनों थोड़ा खद्दर का बोलवाला चल रहा है। कुछ आवाज आ रही है, कुछ नगाड़ा बज रहा है। यह डंका इसलिए बजता है कि वह पोला है। इसीलिए उसमें आवाज आ रही है। हवा अंदर भरी है परंतु वह ठोस चीज़ की आवाज नहीं है, वह पोल की आवाज है। संगीत-शास्त्र में यह भेद है। सितार बजता है तो वह पोली आवाज नहीं है, ठोस आवाज है, वह स्वच्छ-निर्मल शब्द माना जाता है। यह जो हार्मोनियम बजता है, यह शुद्ध शब्द नहीं है। आजकल सितार क्षीण हो रहा है, हारमोनियम बढ़ रहा है। आजकल वीणा नहीं चलती है और बाजा चलता है। वीणा का जो शब्द होता है वह पोल नहीं होता, ठोस और बड़ा सूक्ष्म होता है। यह जो पोल बाजा है उसमें से जोरों से आवाज आती है, परंतु उसके अंदर जान नहीं होती है। इन दिनों खादी की आवाज आ रही है, क्योंकि उस खादी में हवा भर गयी है। और यह हवा है खादी को सरकार का उत्तेजन। सरकार उत्तेजन देती है, तो क्या वह कुछ गलत काम करती है? सरकार कोई गलत काम नहीं करती यद्यपि वह ऐसा काम नहीं कर रही, जैसा उसे करना चाहिए था। फिर भी उसकी जितनी श्रद्धा है, उसके मुताबिक वह ठीक चलती है। परंतु हम उसमें बहे जा रहे हैं, तो समग्रता क्षीण होती है। समग्रता याने अंदरवाली समग्रता तो दूर रही, लेकिन यह जोड़नेवाली सिलाई की समग्रता भी नहीं बन रही। उधर कम्युनिटी प्रोजेक्ट चलता है, इधर खादी-बोर्ड चलता है, तो कहीं वीविंग-डिपार्टमेंट भी चलता है। इन सबका अलग-अलग चिंतन होता है, बहुत हुआ, तो इन दोनों-तीनों के सहयोग की योजना बनाते हैं। अंबर चरखा लोगों को दिया जायगा, बहनों को मजदूरी मिलेगी, सरकार के जरिये सूत खरीदा

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

जायेगा। कहीं बुना जायेगा और कहीं वेचा जायगा, इसमें सरकार को कितना घाटा हुआ, इसका हिसाव हर साल तैयार किया जायगा। इस पर हर साल फिर-फिर से चिंतन चलेगा कि क्या इतना खर्च करना ठीक है ? तो कहेंगे कि हाँ भाई, यह वेकारी का सूत-असुर इतनी माँग कर रहा है, इसलिए फिलहाल मदद दे दो। कभी कहेंगे, "क्यों भाई, इस साल आप लोग कम मदद लेंगे ?" अगर लेंगे, तो ये कहेंगे, "हाँ, जरा कम करियें।" अभी यह सारा चल रहा है। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि आवाज़ वड़ी चल रही है, लेकिन उसमें जान नहीं है, क्योंकि उसमें जीवन-परिवर्तन की वात नहीं है।

खादी सादगी की निशानी

आजकल कई लोग खादी का इतना वखान करते हैं कि हम तो घवड़ा जाते हैं। वे कहते हैं कि आजकल खद्दर इतना सुंदर वनने लगा कि वह खद्दर का कपड़ा है या मिल का कपड़ा, यह पहचान ही नहीं सकते। इतनी खादी में प्रगति हो गयी है। एक जमाना था, जव मनुष्य को देखते ही पहचान होती थी कि वह खद्दरपोश है। लेकिन अव ऐसी पहचान नहीं हो सकती, ऐसी सुंदर योजना हो गयी है। देव है या असुर, यह पहचाना नहीं जाता। खद्दर तो सादे जीवन का प्रतीक है। खादी सादगी की निशानी है। अगर लोग शौकीनी करते हैं, और तरह-तरह का सुंदर खद्दर पहनते हैं तो वे खद्दर को "पैट्रोनाइज़" करते हैं। उससे खद्दर उत्पत्ति के लिए तो उत्तेजना मिलता है, लेकिन उस खद्दर में जान नहीं है। हम वहुत दफा हिन्दुस्तान की पुरानी कला की प्रशंसा सुनते हैं और पढ़ते भी हैं। कहते हैं कि पहले ३०० नंवर से ४००—५०० नंवर तक का सूत निकलता था, और उसका खद्दर वनता था, उस कला की हमने वहुत प्रशंसा सुनी, लेकिन उसका कोई असर हमारे चित्त पर हुआ ही नहीं। उस खद्दर में जान नहीं थी। अगर उसमें जान होती तो वह जाती ही नहीं। मिट्टी के बने हुए शरीर को इतना शृंगार क्यों ? इस शरीर को इतना सजाना क्यों ? वह ३००—४०० नंवर के सूत का खद्दर मुर्शिदाबाद के नवाब पहनते थे और उनके बनाने वाले को खूब पैसा मिलता था। अपनी जिन्दगी का क्षण-क्षण चिंतन करके मैं वारीक सूत निकालूं और वह मुर्शिदा-

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

बाद के नवाब की रानी पहने और उसमें मैं अपने को सार्थक मानूँ, क्योंकि मुझे उससे पैसा मिलता है, तो वह पैसे का प्रेम था, खादी का नहीं। आप यह मत समझिये कि हम कोई कला का निषेध कर रहे हैं। ऐसा व्याख्यान अगर मैं दिल्ली में देता तो मुझे डर लगता, लेकिन मुझे आप लोगों के सामने बोलने में झिझक मालूम नहीं होती। मैं आपको फिर से यही कहना चाहता हूँ कि हम कला का निषेध करना नहीं चाहते हैं।

क्रम के अनुसार परिणाम

एक दफा हम एक भाई के घर गये थे। वहाँ एक सुंदर आयल-पेंटिंग था। वे बोले कि "यह कैसा सुंदर है"। मैंने कहा कि सुंदर तो है, लेकिन कृत्रिम मालूम होता है। तो उन्होंने पूछा कि "स्वाभाविक सुंदरता क्या होती है?" मैंने उनसे पूछा कि उस पेंटिंग पर क्या खर्च हुआ। उन्होंने बताया "दो सौ रुपये"। मैंने कहा आप रोज सुबह घूमने के लिए निकलिये। गाँव के बाहर हरिजन-बस्ती और गरीबों की बस्ती होती है, वहाँ १०-५ मिनिट उन लोगों से बातें करते रहिये, वहाँ आपको कई बच्चों के फीके गाल दीख पड़ेंगे। रोज सुबह एक पाव दूध अपने साथ ले जाइये और उन बच्चों में से किसी एक बच्चे को वह पिलाइये। दो-तीन माह के बाद उस बच्चे के गाल का रंग देखिये तो आपके इस आयल-पेंटिंग से ज्यादा सुंदरता उसमें दिखेगी और वह सौंदर्य स्वाभाविक होगा। फिर भी हम कहना चाहते हैं कि हम आयल-पेंटिंग का निषेध नहीं करना चाहते, हर चीज़ का स्थान होता है, परंतु हर चीज़ में क्रम का महत्त्व होता है। बिना क्रम के महत्व की चीज़ परिणाम ग्रहण नहीं कर सकती। हमने चूल्हा सुलगाया, उस पर एक बरतन रखा, बरतन में पानी डाला और उसके बाद उसमें चावल डाला, तो उससे सुन्दर चावल पक गया। याने यह एक परिणाम हुआ। लीजिये कि पहले हमने चूल्हा सुलगाया और उसके बाद उस पर पानी डाला, इसके बाद चावल डाला और फिर उस पर बरतन रखा, तो इस तरह चावल बनेगा? वही चार चीजें हैं, परंतु क्रम में फरक पड़ा, तो परिणाम बदल गया। जब क्रम बदलता है, तब परिणाम बदलता है। "क्रमान्यत्वं परिणामान्स्वे हेतुः"

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

बच्चों के गाल पर अगर लाल रंग आ गया है, तो उसके बाद हम पेंटिंग बना सकते हैं। लेकिन उसके पहले आयल-पेंटिंग बनाना हम वल्गेरिटी कहेंगे। आपके सामने मैं यह एक विचार रखता हूँ।

योजना में अन्तरात्मा का विचार

हमारे पास कम्यूनिटी प्रोजेक्ट वाले आये। उन्होंने कहा कि हम गाँव-गाँव को व्याप्त कर रहे हैं। गाँवों का एक्सटेन्शन चलेगा और आखिर में हम हिन्दुस्तान के कुल गाँवों को "कवर" करेंगे। फिर उस कवर के नीचे जानदार प्राणी होगा कि लाश होगी। कवर तो लाश को भी डालते हैं और ठंढ से बचने के लिए जिन्दा मनुष्य भी कवर लेता है। इसीलिए इधर कुछ उत्पन्न हुआ और उससे पैसा बढ़ा, तो पैसा बढ़ने से देश की उन्नति होगी, ऐसा नहीं है। देश के अंदर कुछ चरित्र और नीति बढ़नें का इंतजाम होना चाहिए। एक जगह गाँवों की संपत्ति बढ़ गयी तो सेवक शिकायत करने के लिए आये कि गाँव संपत्तिवान होने के बाद उसमें अब ऐसे झगड़े होते हैं, जो पंहले नहीं होते थे। मैंने उनसे पूछा कि क्यों, ऐसा क्या चमत्कार हुआ, तो कहने लगे कि पैसा बढ़ा। लोगों की जेब में ज्यादा पैसा डाल दिया तो लोगों की उन्नति हो गई, ऐसा नियम है क्या ? अमेरिका में पैसा कम है क्या ? हमारे सामने अमेरिका का आदर्श खड़ा ही है। उसके मुताबिक चलेंगे, तो क्या हम सुखी होंगे ? क्या अमेरिका सुखी हुआ है ? इसलिए योजना में थोड़ा अन्तरात्मा का भी विचार होना चाहिए। लोग कुछ अंदर की चीज़ जानते हैं, तभी उससे देश को लाभ होगा। ऊपर से ऐसी योजना बनायेंगे कि हिन्दुस्तान के कुल हिस्से श्रीमान् बन जायेंगे तो भी उसके हृदय में कोई फरक नहीं पड़ेगा। भूदान के सिलसिले में हमारा कई दफा कम्यूनिटी प्रोजेक्ट के कार्य-क्षेत्र में जाना हुआ है। हमने वहाँ देखा कि वहाँ भूदान पहुँचा ही नहीं है। बल्कि यहाँ तक कि जो कम्यूनिटी प्रोजेक्ट का काम करनेवाले हैं, उन्होंने कहा कि हम इस मसले को हाथ में लेने से डरते हैं। मैं ऊपर के काम करनेवाले लोगों की बात नहीं करनेवाला हूँ। कम्यूनिटी प्रोजेक्ट के लोकल काम करनेवाले की बात कर रहा हूँ। उन्होंने

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

कहा कि हमारी सारी योजना गाँव के बड़े-बड़े लोगों के सहयोग से चलती है। इसीलिए वे नाराज न हों, ऐसे ढंग से काम करना होता है। यह मैं दो साल पहले की बात कर रहा हूँ, अब फरक पड़ा है। अब कम्यूनिटी प्रोजेक्टवाले, खास करके मद्रास स्टेट में, भूदान के काम में दिलचस्पी लेते हैं, यह मैं जानता हूँ।

सारे गाँव की इकाई ग्रामोदय की बुनियाद

अभी हमने कांचीपुरम् में बात कही थी कि हमको अब भूदान के साथ-साथ ग्रामोद्योग, नयी तालीम, खद्दर जोड़ना होगा और सब जातियाँ मिलाकर उसका काम करना होगा। तब कुछ लोगों ने कहा कि यह "गुमराह" आखिर रास्ते पर आया। हमने उनको किसान की एक कहानी सुनायी। एक किसान खूब खेती में लगा था। वह खेती के सिवा दूसरा कुछ नहीं करता था। लेकिन एक दफा तीन साल तक वहाँ बारिश ही नहीं हुई। इसीलिए खेती में नुकसान हुआ, तो फिर उसने कुआँ बनाने का कार्यक्रम शुरू किया। यह देखकर उसका मित्र पूछने लगा कि "अरे, तूने खेती का काम छोड़ दिया?" किसान क्या जवाब देता है? वह यही कहता है कि खेती करते-करते खेती मिट रही थी, इसीलिए कुआँ खोदता हूँ। कुआँ खोदूंगा, तो पानी आयेगा और पानी से फिर खेती होगी। सब लोग भूल जाते हैं कि बाबा, तीस साल तक खद्दर का ही काम करता था। वे भूल जाते हैं तो क्षम्य भी हैं, क्योंकि सब लोग जानते नहीं हैं कि बाबा ने कितना खद्दर का काम किया है। अगर वे लोग यह याद करते तो उनको आश्चर्य नहीं होता कि बाबा ने भूदान क्यों शुरू किया। हमने कितने ही गाँवों में ५—५, १०—१० साल तक सतत काम किया, इसका इतिहास सर्व सेवा संघ और चरखा संघ वालों को अच्छी तरह मालूम है। एक हजार की जनसंख्या के गाँव में ८—१० साल का सतत परिश्रम किया तो भी हजार की जनसंख्या में से ड़ेढ़ सौ ही खद्दर पहनने लगे। फिर वह कार्यकर्ता किसी कारण से आन्दोलन में जेल गया तो १५० से ५० खद्दरवाले हो गये। जेल से वापिस आकर वह कुछ जोर लगाता है तो ५० के ७० हुए, लेकिन गाँव के हजार लोग खद्दर पहनें, यह नहीं हुआ। ऐसे लाखों गाँव हैं जो अपना अनाज खुद पैदा करते

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

हैं, परंतु खादी के आन्दोलन के बावजूद ऐसे ५० गाँव भी नहीं दिखायी देते हैं कि जो कुल के कुल खद्दरपोश हों। याने खद्दर को जीवन का एक अंग मानकर जिन्होंने शुरू किया, ऐसा गाँव आपको मुश्किल से मिलेगा। यह इसीलिए होता है कि यह सारा गाँव मिलकर कोई एक चीज़ है, ऐसी भावना ही नहीं हुई। हरएक मनुष्य अलग-अलग है, हरएक की मालकियत अलग है, उस मालकियत को सरकार की तरफ से रिकग्निशन भी है। वह सब ढाँचा कायम रहता है, और सरकार भी ऐसा कानून नहीं बनाती कि गाँव में खद्दर होना ही चाहिए। फिर गाँवों में खुलेआम मिल का कपड़ा आता है और सस्ता भी होता है, आकर्षक भी होता है। इसलिए खद्दर पहननेवाले माता-पिता अपने बच्चों को मिल का कपड़ा पहनायेंगे। वे कहेंगे कि हम तो ठीक हैं, उसको हमने वैराग्य मान लिया, लेकिन बच्चों को एकदम से वैरागी नहीं बनाना चाहिए। उनको जरा सुंदर-सुंदर कपड़े पहनाना चाहिए। इससे तो फिर वे स्वयं मिल का कपड़ा छोड़ खादी पहनें, तो अच्छा रहेगा। याने वे खद्दर को सुंदर नहीं समझते हैं। इस प्रकार के लोग, किसी गाँव में जोर लगाया जाय, तो ४०–५० निकल सकते हैं। परंतु समझने की बात यह है कि जब तक सारे गाँव को एक यूनिट समझकर सोचने के लिए गाँववाले तैयार नहीं होते हैं, तब तक ग्रामोदय नहीं होगा। ग्रामोदय की बुनियादी चीज़ हाथ में लेनी चाहिए और उस पर ही सारी योजना होनी चाहिये।

"सिलाई" नहीं, "बुनाई"

४-५ साल पहले जब ग्रामोदय का काम शुरू हुआ तभी उसकी ओर हमारा तीव्र ध्यान था। इसीलिए भूदान के सिलसिले में जब हम तमिलनाड में आए, तभी से हमने निश्चय किया कि ग्रामोदय कार्यक्रम को परिपूर्ण बनाने में अपनी ताकत जितनी लग सकती है, उतनी लगानी चाहिए। जमीन के बँटवारे के बिना ग्रामोदय नहीं हो सकता। जमीन के बँटवारे के बावजूद भी अगर यहाँ खद्दर, नयी तालीम इत्यादि नहीं चली तो उसकी पूर्ति नहीं हो सकती। इसीलिए ये दोनों मिल करके एक पूरी चीज बनती है। हम आपसे फिर कहना चाहते हैं कि हमको भूदान और ग्रामोदय कार्य की सिलाई नहीं करनी है, हमको

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

उसकी वुनाई करनी है। यह मैं इसलिए कहता हूँ, क्योंकि यहाँ दो पंथ निकले हैं। एक पंथ निकला है कि ग्राम-संकल्प पर जोर देना चाहिए और दूसरा पंथ कहता है कि ग्राम-दान पर जोर देना चाहिए। तमिलनाड में ऐसे दो पंथ वन गये हैं। "पेरुमान" और "पेरुमाल" (शंकर और विष्णु) में थोड़ा ही फरक है। लेकिन वे अलग-अलग हो गए, इसीलिए एक भक्त की उपासना इधर चलती है, तो दूसरे की उपासना उधर चलती है। कल सुवह एक भाई ने भजन गाया, उसमें हमको वड़ा मजा आया। उन्होंने माणिकवाच्यकर (तमिलनाड के एक संत) का भजन गाया। उन्होंने अन्त में जहाँ विष्णु चाहिए वहाँ शिव का नाम लिया। हमको यह सुन कर बड़ी खुशी हुई थी। यह शिव भगवान् और विष्णु भगवान् का झगड़ा मिटना ही चाहिए। पुराने जमाने में तमिलनाड में यह शिव-विष्णु का झगड़ा चला। अव अगर यहाँ "ग्रामदान" और "ग्रामसंकल्प" का झगड़ा चले, तो मुश्किल हो जायेगी। भाइयों, हम कहना चाहते हैं कि ये दोनों मिल करके ,एक चीज है, जिसे पहचानना चाहिए।

गांधीनगर-तिरुपुर
१७-१०-'५६

ग्रामदान का स्वतन्त्र मूल्य : २७ :

अभी आपने भजन सुना : "आत्मा रे आत्मा कुँ देख"। यह भजन तो सभी गा लेते हैं और सवको प्रिय भी लगता है। किन्तु इसका अनुभव प्राप्त करने में वड़ा पुरुषार्थ करना पड़ता है। आत्मा में आत्मा को देखना बहुत वड़ी वात है। उसके माने है, दुनिया में हमारे सामने जितने प्राणी प्रकट हैं, जितनी मूर्तियाँ दीखती हैं, उन सवमें हम अपना ही रूप देखें। भू-दान और ग्राम-दान उसी का एक नम्र और छोटा सा प्रयत्न है। भू-दान में हम सवको समझाते हैं कि आप पाँच भाई हैं, तो आपके घर एक और छठा भाई है, जो वाहर है। उसका हिस्सा उसे दीजिए। समाज को अपने परिवार का हिस्सा समझिए, यही आत्मा में आत्मा के दर्शन का प्रयत्न है। यह वात केवल भूमि के लिए ही लागू नहीं, वल्कि कुल संपत्ति, शक्ति और वुद्धि के लिए लागू है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

हर मनुष्य अपनी संपत्ति, शक्ति और बुद्धि का एक हिस्सा अपने अड़ोसी-पड़ोसियों के लिए दें और उसमें हम दूसरे किसी पर उपकार करते हैं, ऐसी भावना न हो। समाज को अपने परिवार में दाखिल करना व्यापक आत्म-दर्शन का एक अल्प प्रयत्न है। जब आप देखते हैं कि गाँववाले अपनी जमीन पर से अपना एक हिस्सा उठा लेते और उसे सारे गाँव का बना देते हैं, तो उसमें व्यापक आत्मा का कुछ भान होता है।

ग्रामदान का स्वतन्त्र मूल्य

यहाँ बहुत सारे गाँव मिल रहे हैं। इस काम में हमारी कसौटी जरूर है, परन्तु हमारे मन में दूसरी ही बात है। हमने कभी नहीं समझा कि दुनिया का कारोबार चलाने की जिम्मेवारी हम पर है। दुनिया का कारोबार दुनिया चला रही है। हम तो लोगों में एक विचार प्रचलित करना चाहते हैं, व्यापक आत्मा का भान कराना चाहते हैं। यह समझाना चाहते हैं कि व्यक्तिगत मालकियत मिटनी चाहिए। अगर गाँव-गाँव के लोगों ने इतना समझकर ग्रामदान दिया, तो फिर चाहे उसके बाद हम उन गाँवों की उत्तम रचना न कर सकें, तो भी उस ग्रामदान का जो स्वतन्त्र मूल्य है, वह कम न होगा। इसके लिए मैं एक मिसाल देता हूँ। बहुत प्रयत्नों के बाद हिन्दुस्तान को स्वराज्य प्राप्त हुआ। स्वराज्य की कसौटी जरूर इस बात में है कि हम स्वराज्य किस तरह चलाते और हिन्दुस्तान की उन्नति किस तरह करते हैं। लेकिन मान लीजिये कि हम बहुत शीघ्र ज्यादा उन्नति न कर सके तो हम कम लायक साबित होंगे। फिर भी हिन्दुस्तान को जो स्वराज्य प्राप्त हुआ है, उसका मूल्य कम न होगा। स्वराज्य-प्राप्ति की स्वतन्त्र कीमत है, चाहे उसके बाद हम उसका उत्तम उपयोग कर सकें या न कर सकें। इसी तरह यह जो भू-दान, ग्राम-दान, संपत्ति-दान आदि का आन्दोलन चल रहा है, उसका स्वतन्त्र मूल्य है, चाहे उसका उपयोग हम ठीक से कर सकें या न कर सकें।

मूल्य परिवर्तन और सुख

दूसरे सेवकों के और हमारे इस विचार में बुनियादी फर्क है, जो आज का नहीं, पुराना है। जब बाबा रचनात्मक काम में लगा था, तब भी उसके सामने

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

यही कसौटी थी। इसलिए बाबा ने हमेशा यही प्रयत्न किया कि आसपास के लोगों में अच्छी भावना पैदा हो और उत्तम कार्यकर्ता पैदा हों। समझने की बात है कि हम रचनात्मक काम करना जरूर चाहते हैं, लेकिन रचनात्मक काम तो सरकार भी करना चाहती है, और करेगी। उससे लोग सुखी होंगे और अवश्य होने चाहिए। लेकिन मूल्य-परिवर्तन एक बात है और समाज को सुखी बनाना दूसरी बात। जब आप शाश्वत सुख की बात करेंगे, तो दोनों में फर्क न रहेगा। लेकिन तात्कालिक सुख के बारे में सोचेंगे, तो सुखी बनना एक बात है और मूल्य-परिवर्तन दूसरी बात।

जहाँ लोग अपने परिवार को व्यापक समझकर अपना एक हिस्सा समाज के लिए देते हैं, वहाँ मूल्य-परिवर्तन हो जाता है। कोई फंड दिया जाता है, तो उसमें मूल्य-परिवर्तन नहीं होता। परन्तु जैसे हम आजीवन खाते हैं, वैसे ही खाने के साथ-साथ समाज को एक हिस्सा देते हैं, तो यह वृत्ति मूल्य-परिवर्तन की निशानी है। फिर चाहे जो भाग आप समाज को देते हैं, उसका सदुपयोग कर सकें या न कर सकें, यह तो अक्ल की बात होगी। आज हम अपने घर में जो संपत्ति खर्च करते हैं, उसमें भी ठीक खर्च करते हैं या नहीं, यह अक्ल पर निर्भर है। फिर भी यह समझने की बात है कि जहाँ पाँच सौ गाँवों के लोगों ने अपने जीवन से व्यक्तिगत मालकियत मिटा दी, वहाँ उनके जीवन में मूल्य-परिवर्तन हो गया है।

मूल्य-परिवर्तन ही क्रान्ति

इसी मूल्य-परिवर्तन को हम "शान्तिमय क्रान्ति" कहते हैं। क्रान्ति के पीछे मैंने यह "शान्तिमय" विशेषण नाहक लगाया। क्योंकि जो अशान्तिमय है, वह क्रान्ति ही नहीं है। वह तो शान्तिमय ही हो सकती है। किसी भी प्रकार के बदल को क्रान्ति नहीं कहा जाता। क्रान्ति में तो बुनियादी या मूलभूत फर्क होना चाहिए, मूल्य बदलना चाहिए। मूल्य का जो बदल होता है, वह शान्तिमय ही होता है, विचार से ही होता है। मार-पीटकर, आग लगा कर या धमकाकर जो परिवर्तन किया जायेगा, वह विचार-परिवर्तन न होगा। चाहे वह बड़ा परिवर्तन हो तो भी वह क्रान्ति नहीं होगा। कुछ लोग हमसे

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

पूछते हैं कि आप जिसे "विचार-परिवर्तन" या क्रान्ति कहते हैं, उसे करने के लिए कितना समय लगेगा ? हम जवाब देते हैं कि चाहे कम समय लगे या ज्यादा, इसकी हमें कोई चिन्ता नहीं। विचार-क्रान्ति शीघ्र होती हो तो ठीक, नहीं तो शीघ्र "अविचार-क्रान्ति" करनी चाहिए—इस विचार को हम नहीं मानते। हम सिर्फ "शीघ्रवाद" को क्रान्ति नहीं कह सकते। कोई अगर हमसे कहेगा कि आपको शीघ्र खाना मिलना चाहिए, फिर चाहे रोटी न मिले तो जहर खाना चाहिए-इस तरह के शीघ्र भोजन के विचार को हम नहीं मानते। हम तो समुचित भोजन के विचार को ही मानते हैं। यह बात ठीक है कि भूखे को जितना जल्दी खाना मिले, उतना अच्छा ही है। विचार-क्रान्ति भी जल्द-से-जल्द हो, यह अच्छा है। लेकिन चाहे शीघ्र हो या देर से, चीज वही बननी चाहिए, जो बनानी होती है। इसीलिए मैंने कहा कि क्रान्ति के पीछे मैंने नाहक शान्तिमय विशेषण जोड़ दिया, उस विशेषण की कोई जरूरत नहीं है। लेकिन इन दिनों "रक्तपातयुक्त क्रान्ति" के लिए क्रान्ति शब्द इस्तेमाल किया जाता है, इसलिए मुझे वह विशेषण जोड़ना पड़ा।

सारांश, समाज को अपने परिवार का अंग समझकर एक हिस्सा देने की बात के परिणामस्वरूप जो ग्रामदान की बात निकली, वह क्रान्ति की बात है। अगर आप शाश्वत सुख चाहें, तो इस विचार-क्रान्ति के द्वारा वह भी मिलेगा और शीघ्र और तात्कालिक सुख चाहते हैं, तो वह इस विचार-क्रान्ति का उपयोग हम किस तरह करते हैं, इस पर निर्भर है।

अम्बादला
२८-८-५५

ग्रामराज से रामराज्य : २८ :

इस जमाने में जो राज्य होता है, वह राज्य नहीं, प्राज्य होता है, वह राज्य लोगों का होता है। पहले के जमाने में जो लोगोंको दबाता था, वहीं राजा होता था। कहा जाता है कि जंगल का राजा शेर होता है। इसके माने यह है कि जो जंगल के प्राणियों को खा सकता है, वही उसका राजा है। संस्कृत में जानवरों

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

के राजा को याने सिंह या शेर को मृगराज कहते हैं। उस राजा के दर्शन होते ही सारे थर-थर काँपते हैं। इस प्रकार की राज्य–सत्ता अब नहीं चलेगी। अब तो राज्य-सत्ता सेवा की सत्ता होगी। माता को घर में क्या अधिकार होता है? बच्चे को भूख लगी है, तो उसे दूध पिलाना माता का पहला अधिकार है। बच्चे को सुलाकर सोना, यह नंबर दो का अधिकार है। बच्चा बीमार पड़ा तो रात को जागना, यह नंबर तीन का अधिकार है। और घर में खाने की चीजें कम हैं तो पहले बच्चे को खिलाना और खिलाने के बाद कुछ नहीं बचा तो खुद फाका करना, यह नंबर चार का अधिकार है। आज का हमारा मातृ–राज है नं. १, तो उसके नमूने हमें गाँव-गाँव में दिखाने होंगे।

गाँव-गाँव में जो बुद्धिमान, संपत्तिमान और समझदार लोग होंगे, वे गाँव के माता-पिता बन जायें और गाँव की सेवा करके गाँव का राज्य चलायें। जो बुद्धिमान पिता होते हैं, वे अपने लड़कों के लिए यही इच्छा करते हैं कि हमारे लड़के हमसे ज्यादा बुद्धिमान बनें। पिता को तो खूब खुशी होती है, जब उसका लड़का उससे आगे बढ़ जाता है। गुरू को तब खुशी होती है, जब उसका शिष्य दुनिया में उसका विस्मरण कराता है। लोग गुरू का नाम भूल जाते हैं और शिष्य को ही याद करते हैं, तो गुरू को खुशी होती है। गुरू को लगता है कि मैंने अपने शिष्य को ज्ञान दिया और फिर भी मेरा नाम दुनिया में कायम रहा, तो मैंने ज्ञान ही क्या दिया? मेरा नाम मिट जाना चाहिए और शिष्य का नाम चलना चाहिए, तभी मैं सच्चा गुरू हूँ। इसलिए गाँव के जो बुद्धिमान लोग होंगे, वे इस तरह से काम करेंगे कि सब लोगों से ज्यादा बुद्धिमान बनें, तो फिर ग्रामराज्य से रामराज्य बनेगा।

कोटीपाम (श्रीकाकुलम)
९-८-'५५

अब शहरों की बारी : २९ :

थोड़ा-थोड़ा दान माँगते-माँगते छठा हिस्सा शुरू हुआ और उसके बाद ग्रामदान शुरू हुआ। अब तो बाबा तालुकादान, जिलादान माँग रहा है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

कुछ लोग कहते हैं कि बाबा लोभी बन गया है। उसका लोभ बढ़ता ही जा रहा है, यह बात सही है। जब तक मनुष्य कुल मालकियत नहीं छोड़ देता, तब तक यह आंदोलन समाप्त नहीं होगा। इस मालकियत ने मनुष्य के गले को दबा रखा है। इसके कारण वह अपनी व्यापकता भूल बैठा है। उसका ऐश्वर्य छिन गया है। वह दरिद्र, दुखी बन गया है। मालकियत की भावना खतम होनी चाहिए। केवल भूमि की मालकियत मिट गयी, इतने से कार्य पूरा नहीं होता है। कारखानों और मकानों की मालकियत भी मिटनी चाहिए। अब सब लोग समझेंगे तो एक-एक के बाद एक-एक होता जायगा।

अब गाँवों का ग्रामदान होगा, तो शहर क्या बाकी बचेंगे? मान लीजिए कि तिरुमंगलम् तालुका दान हो जाय, तो क्या तिरुमंगल में शहर कहीं दूसरी जगह उड़कर चले जायेंगे? तिरुमंगलम् तालुका के शहरों की स्वाभाविक गति यही होगी कि वे गाँववालों की सेवा में अपना जीवन समाप्त करें। आज-कल तो गाँव-गाँव में झगड़े चलते हैं। उससे वकीलों का धंधा चलता है। परंतु अगर तालुकादान हो जाय, तो झगड़े ही खतम हो जायेंगे। तो वकील बेकार बनेंगे। शिकायत लेकर वकील लोग आयेंगे, तो बाबा उनको जमीन देगा और काश्त करने को कहेगा।

आजकल ये साहूकार गाँववालों को कर्ज देकर लाखों रुपया कमाते हैं। तालुकादान के बाद उनके कर्जे की जरूरत नहीं रहेगी। उन्होंने गरीब लोगों को जो दान दिया है, वह क्या वे लाखों सालों में भी भर पायेंगे। लोगों को ऐन मौके पर मदद देने को हम दान ही समझते हैं। ऐसे तो जितना हो सकेगा उतना कर्ज चुका देंगे, क्योंकि उनका उपकार हम पर बहुत ज्यादा है। दस हजार रुपये की मदद तो गौण वस्तु है। परंतु जिस समय हमको जरूरत थी, दूसरी किसी जगह से मदद नहीं मिल सकती थी, उस समय दिया, यह एक बड़ी बात है। इसलिए उस पर हमारा प्रेम बहुत है। वह जितना भी हो सकेगा, उतना करेंगे। उसके उपकार का कोई निराकरण नहीं हो सकता। फिर भी उसके जीवन की जिम्मेवारी हम उठा लेंगे। उनका जीवन भी चलना चाहिए। हम गाँववाले उनकी जिम्मेवारी उठा लेंगे, जैसे आज राजा-महाराजाओं की

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

जिम्मेवारी उठा ली है। इज्जत के साथ अब उनका जीवन चलेगा। पहले राजा अपने घोंसले से बाहर ही नहीं निकलते थे। अब इज्जत भी मिलेगी, उनका जीवन हम चलायेंगे। उनकी जिम्मेवारी हम उठायेंगे। इसलिए ग्राम-दान में ही क्यों, तालुका, शहर आदि दान में कोई मुश्किल नहीं है।
नेडुंकुलम् (मदुराई)
२५-३-'५७

गाँव में अधिक जमीन हो तो ? : ३० :

पड़ोसी को प्रेम का आमंत्रण

आज सुबह कुछ कार्यकर्ता हमसे मिलने आये थे। उन्होंने एक बड़ा दिल-चस्प सवाल पूछा कि "हम ग्रामदान माँग रहे हैं, तो उस गाँव की जमीन गाँव की बनेगी और सब गाँववालों में बँटेगी, लोग सुखी होंगे। परंतु मान लीजिये कि किसी गाँव में लोग ज्यादा हैं और जमीन कम है, तथा नजदीक के गाँव में जमीन ज्यादा है और लोग कम हैं। दोनों ग्रामदान हुए और इस गाँव की जमीन इन गाँववालों में बँटेगी, उस गाँव की उन गाँववालों में, एक गाँव विशेष सुखी होगा और दूसरा उतना नहीं होगा। ग्रामदान होने के बावजूद भी ऐसी हालत में क्या किया जाय?" हमने उसका उत्तर दिया कि आगे यह होगा कि जिस गाँव में ज्यादा जमीन है, उस गाँव के लोग दूसरे पड़ोसी गाँव के लोगों को आमंत्रण देंगे कि आइये, आप में से दस-पाँच परिवार हमारे गाँव में आकर बस जाइये। ये सब बातें हम एकदम नहीं उठाते हैं, लोग धीरे-धीरे एक-एक चीज समझते जायेंगे। पहले एक गाँव का ग्रामदान तो होने दीजिये, फिर लोगों को समझा दिया जायेगा कि अगर आपके गाँव में जमीन ज्यादा है, तो पड़ोसी गाँवके लोगों को बुलाना प्रेम के लिए अच्छा है। हिन्दुस्तान के लोगों का दिल बड़ा है, इसलिए वे इस बात को समझ सकते हैं। कई सवाल एकदम उठाना अच्छा नहीं है, इसलिए हम इस बात को अभी नहीं उठा रहे हैं। लेकिन भू-दान-यज्ञ का असली उद्देश्य क्या है, इस विचार को हमें समझना चाहिए। भू-दान-यज्ञ एकाध ग्राम की सीमातक सीमित रहनेवाला नहीं है, यह किसी देश तक भी

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सीमित रहनेवाला नहीं है। अपने मन में भी हमने ऐसा नहीं माना है कि यह आन्दोलन, भारत का ही आन्दोलन है, बल्कि हमारे मन में यही है कि हमने दुनिया का एक प्रश्न उठाया है। कुल दुनिया का सवाल हम एकदम हल नहीं कर सकते हैं। वैसा करने की कोशिश करना अहंकार हो जायेगा। इसलिए पहले हम भारत की समस्या हल करना चाहते हैं। उसके बाद यह दूसरे देशों पर भी लागू होगा।

पक्षी, प्राणी और जीव-जंतुओं का भी हक

एक गाँव में ज्यादा जमीन है, दूसरे गाँव में कम है, यह तो होता ही है। परन्तु यह भी होता है कि एक जिले में ज्यादा जमीन है, तो किसी जिले में कम : एक प्रान्त में कम है, तो दूसरे प्रान्त में ज्यादा : एक देश में ज्यादा है, तो दूसरे देश में कम : जमीन की मालकियत भगवान् की है, ऐसा हम कहते हैं। तो जमीन पर किसी व्यक्ति की, किसी गाँव की, किसी समाज की, किसी देश की मालकियत नहीं है, उस पर कुल दुनिया की मालकियत है। इतना इसका व्यापक अर्थ है । जमीन कुल दुनिया की है, ऐसा कहने के बदले, ईश्वर की है, ऐसा हम कहते हैं। जमीन पर केवल मनुष्य की ही मालकियत है, ऐसा नहीं है। उस पर पंछियों का, प्राणियों का, जीव-जंतुओं का भी हक है। वे अपना हिस्सा लेते भी हैं और हिन्दुस्तान के लोग प्रेम से उन्हें वह हक लेने भी देते हैं। भारतीय किसान का दिल बड़ा उदार है। कहने का तात्पर्य यह है कि जमीन पर दुनिया भर के मनुष्यों की मालकियत है, ऐसा भी हम नहीं कह सकते। उस पर सब प्राणियों का भी हक है, जैसे हवा और पानी पर है। प्यासी गाय आये, तो पानी उसकी प्यास बुझाता है और प्यासा शेर आये तो उसकी भी प्यास बुझाता है। इसलिए हवा, पानी और जमीन, ये सब परमेश्वर की देन हैं और अगर उसकी मालकियत है, तो ईश्वर की ही है, ऐसा कहना होगा।

वसुधैव कुटुम्बकम्

हमने कहा था कि आस्ट्रेलिया की जमीन की माँग करने का जापान के लोगों को हक है और उनको वहाँ से आने देना आस्ट्रेलिया के लोगों का कर्तव्य

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

है। तमिलनाड के लोगों का विन्ध्य-प्रदेश या मध्य-भारत में जाने का हक है, और केरल के लोगों का तो ज्यादा हक है, क्योंकि दक्षिण केलर में एक वर्गमील में दो हजार लोग रहते हैं, तो विन्ध्य-प्रदेश में दो सौ लोग रहते हैं। विन्ध्य-प्रदेशवालों का यह कर्तव्य है कि केरलवालों को अपने प्रदेश में स्थान दें। आस्ट्रेलिया में हवा गरम है, इसलिए वहाँ जो इङ्गलैंडवाले रहते हैं, वे समुद्र के किनारे-किनारे रहते हैं, अंदर जा ही नहीं सकते। उन्होंने सौ-पचास मील तक का किनारे का हिस्सा लिया है। अन्दर की भूमि में प्रवेश किया जाय, तो आज वहाँ जितने लोग रहते हैं, उससे पाँच गुना ज्यादा लोग रह सकते हैं। लेकिन वहाँ के लोग दूसरे लोगों को आने नहीं देते। वे कहते हैं कि दूसरों को आने देंगे, तो हमारी सभ्यता, संस्कृति बिगड़ जायेगी। ये बिल्कुल छोटे-छोटे विचार हैं। तमिलनाड तमिल लोगों का है, उत्तर हिन्दुस्तान उत्तरवालों का है, आस्ट्रेलिया आस्ट्रेलियावालों का है—ऐसी बातें आज चलती हैं। परन्तु यह गलत विचार है। इस विज्ञान के जमाने में ऐसे संकुचित विचार टिक नहीं सकते। अगर इस विज्ञान के जमाने में हम ऐसे छोटे-छोटे विचार रखेंगे, तो लड़ाइयाँ टलेंगी नहीं। इसलिए जब कहते हैं कि तमिलनाड तमिलवालों का है, तो हम कहते हैं कि "तमिलनाड तमिलवालों का भी है।" अगर कहेंगे कि तमिलनाड तमिलवालों का ही है, तो इस जमाने में नहीं चलेगा। आजकल दुनिया में "ही" चल रहा है। हम कहते हैं कि "ही" मत कहो, "भी" कहो, तो दुनिया में शान्ति रहेगी। विज्ञान के जमाने में देशों की सीमाएँ टूट रही हैं। एक जमाने में हिन्दुस्तान का दक्षिण किनारा और अफ्रीका का प्रदेश बिल्कुल अलग थे। उन दोनों को किसने तोड़ा था ? समुद्र ने तोड़ा था। आज दक्षिण भारत को अफ्रीका के साथ जोड़ दिया गया है। किसने जोड़ा है ? एक जमाना था, जब समुद्र तोड़नेवाला था, आज समुद्र जोड़नेवाला हो गया है। आज चीन और अमेरिका पड़ोसी देश हो गये हैं, उनके बीच सिर्फ एक छोटा-सा छःहजार मील का समुद्र है। हवाई जहाज से इधर से उधर बारह घंटे में जा सकते हैं। इसलिए पहले के जमाने की वह भाषा नहीं चलेगी, "कुमारियल्लै वडमालदन् कुंड्म्"। "कन्याकुमारी से तिरुपति के पहाड़ तक हमारा देश तमिलनाड है।" अब ऐसा कहो कि हमारा देश तमिलनाड

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

उत्तर ध्रुव से लेकर दक्षिण ध्रुव तक है। जितना वड़ा तमिलनाड है इतना ही वड़ा भारत है। इतनी ही वड़ी दुनिया है। ऐसा विशाल हृदय वनायेंगे तभी हम इस विज्ञान के जमाने में टिक सकेंगे।

अंडपट्टी (मदुरा)
२०–१२–'५६

ग्रामदान और तालुकादान : ३१ :

आप लोगों को मालूम होगा कि तिरुमंगल तालुका में बड़ा भारी काम हो रहा है। पूरे तालुका के गाँव ग्रामदान में आ जायँ, ऐसी कोशिश हो रही है। उसमें सैकड़ों कार्यकर्ता काम कर रहे हैं। यह एक अद्‌भुत विचार है, छोटी चीज नहीं है।

ग्रामदान और तालुकादान का अर्थ क्या है? क्या हम गाँव की कुल जमीन वावा को देकर चले जायेंगे? क्या हम तालुका की कुल जमीन वावा को देकर चले जायेंगे? तालुकादान या ग्रामदान का अर्थ यह है कि लोग अपनी-अपनी व्यक्तिगत मालकियत समाज को अर्पण करते हैं और अपना जीवन समाज की सेवा में लगाते हैं। लेकिन यह प्रेम के विना होगी नहीं। आज के समाज में प्रेम नहीं है, यह बात नहीं। प्रेम कम है, ऐसा भी नहीं है। प्रेम के बिना मनुष्य ही क्या, कोई प्राणी भी नहीं जी सकता।

अपना-अपना हक कुटुम्ब में नहीं कहते, अपना कर्तव्य समझते हैं और दूसरों के लिए त्याग करते हैं, यह सारा उत्तम प्रेम का लक्षण है। उसके वास्ते तकलीफ भी कभी भोगते हैं, तो भी वह अपना सेवा-कर्तव्य समझते हैं। इतना प्रेम का दर्शन कुटुम्ब में होता है, इससे कुटुम्ब में सुख भी दीखता है। तो हमको करना यही है कि कुटुम्ब का प्रेम फैलाना है। सारे गाँव में सभी लोग अच्छे होते हैं, यह वात नहीं है। परिवार में भी अच्छे-बुरे लोग होते हैं, तो भी हम निभा लेते हैं या नहीं? वैसी ही भावना समाज में होनी चाहिये, और अपना परिवार बढ़ायें।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

परिवार बढ़ाना याने क्या ?

परिवार बढ़ायें याने क्या करना है ? हमारे गाँव में ४००-५००घर हैं। तो क्या हम अपने अलग-अलग घर मिटा दें और जैसे एक होस्टल रहता है, वैसे बड़े घर में सब रहें ? हमारी अलग-अलग रसोई होती है, तो क्या जैसे होटल में जाकर सब खाते हैं, वैसा करें ? हमारी जमीन अलग-अलग है, तो क्या वह एक बनाकर सब मिलकर ट्रैक्टर से खेती करें ? ऐसा नहीं करना है। सहूलियत के लिए अलग-अलग घर होगा। हर एक की रसोई अलग-अलग होगी। परिवार के हिसाब से जमीन भी हर एक को दी जायेगी। परन्तु मालकियत न रहे। सबका सुख-दुःख एक में मिला लें। किसी की भी मदद में हम जायँ, गाँव की जमीन पर सबका हक हो। मतलब यह है कि हम कुटुम्ब को खतम नहीं करना चाहते, बल्कि कुटुम्ब तो बुनियाद है। कुटुम्ब है इस वास्ते त्याग का, प्रेम का अभ्यास होता है। कुटुम्ब तो हम चाहते हैं।

धारणात् धर्मः

ब्राह्मण के घर में लड़का पैदा हुआ तो नंगा, भंगी के घर में पैदा हुआ तो भी नंगा, जन्म में फर्क नहीं मानते, मरने में भी फर्क नहीं मानते। तो फर्क कहाँ रहा ? नाहक के अहंकार को हम अपने साथ बाँध लेते हैं, और जाति-भेद बढ़ाते हैं। यह जाति-भेद समाज को कभी बढ़ने नहीं देता। पहले जमाने में जो वर्ण-व्यवस्था थी, उसका ख्याल ही कुछ अलग था। वह गुणानुसार काम का बँटवारा था। कोई भी काम करनेवाला मोक्ष पाता है, यह गीता ने कहा है। समाज की सेवा प्रेम से की जाय और वह सेवा आखिर में परमेश्वर को अर्पित की जाय। कोई वेदों का अध्ययन करता हो, कोई गाय की सेवा करता हो, या कोई भंगी का काम करता हो, किसी भी प्रकार की सेवा हो, सब परमेश्वर को अर्पण हो सकती है और सब मोक्ष पा सकते हैं। आज-जैसा भेद नहीं था। आज तो जाति-भेद समूह को तोड़ ही रहा है। इसके परिणाम में सारा समूह कमजोर बनता है। हिन्दुस्तान में छत्तीस करोड़ लोग हैं, बड़ा भारी समुदाय है, बहुत ताकत हो सकती है। प्रेम रहा तो ताकत बढ़ेगी, लेकिन बड़ा समुदाय होते हुए भी उसके टुकड़े होने से शक्ति कम हुई है। जाति,

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

भाषा, धर्म के भेद बनाये रखे हैं। इस चुनाव ने तो पक्ष-भेद और किये हैं। उससे जाति-भेद को भी उत्तेजन मिलता है। जो जाति-भेद मरने की तैयारी में था, उसको उत्तेजन दिया जाता है। आश्चर्य की बात है कि धर्म से भी भेद पैदा होते हैं। धर्म याने क्या ? "धारणात् धर्मः"–सबको धारण करनेवाला, सबको इकट्ठा करनेवाला, परन्तु आज तो उल्टा ही है। हिन्दू बाकी व्यवहार साथ-साथ करेंगे, परन्तु भगवान् का नाम लेने का प्रसंग आयेगा, तो अलग हो जायेंगे। ऐसा लगता है कि, बेहतर है कि हम धर्म से मुक्त हो जायँ, हम एक दोष से तो मुक्त हो जायेंगे। समाज को विभाजित करने का काम अगर धर्म करता है, तो क्या लाभ उसका ? एक परमेश्वर को हम सब परमपिता मानते हैं। पर उस पिता को "गाड", "शिव" क्या कहा जाय ? इसमें भेद पड़ जाते हैं। कोई कहता है, हम नंदीवाले भगवान् के भक्त हैं, हम गरुड़वाले भगवान् के भक्त हैं, हम मयूरवाले भगवान् के भक्त हैं, हम चूहेवाले भगवान् के भक्त हैं – और उसमें भेद पड़ जाते हैं, क्या अजीब बात है ?

एक देश की सेवा के लिए चुनाव और उसमें भी भेद। एक परमेश्वर के लिए धर्म और उसमें भी भेद। परिवार का प्रेम हमें फैलाना है। समझना चाहिए कि जब तक यह भेद है, तब तक हमारी शक्ति नहीं बढ़ेगी। ग्रामदान, तालुका-दान की विरोधी जो चीजें हैं, उन पर हमको प्रहार करना ही होगा। कोई कहता है, आप जाति-भेद पर प्रहार मत कीजिये, नहीं तो आपके आन्दोलन को बाधा पहुँचेगी। कर्म बदलने से बाधा आयेगी, तो हर्ज नहीं। पर आज के जाति-भेद के पीछे ऐसी कोई बुनियाद ही नहीं है। कम-से-कम ये द्वेष तो कम करो। ब्राह्मण, हरिजन, मालिक-मजदूर ऐसे द्वेष रखोगे, तो झगड़े बढ़ेंगे और ताकत नहीं बढ़ेगी। इस वास्ते हम चाहते हैं कि आप इस पर सोचेंगे और यह भेद खतम करेंगे।

केवल ग्राम-दान से संतोष नहीं ?

यह हुआ ग्राम-दान का विचार ! परन्तु हमको ग्राम-दान से संतोष नहीं है, हम तो फिरका-दान चाहते हैं। आज तो एक ग्राम-दान हुआ तो साहूकार बीच में आता है, गाँववालों को समझाता है कि अरे, मूर्खो ! तुमने यह क्या किया?

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

मालकियत मिटा दी ? अब कर्ज कौन देगा ? जो कर्ज है, वह पन्द्रह दिन में चुका दो, तुम्हारी मालकियत के भरोसे पर तो हमने तुमको कर्ज दिया था। वह ग्राम-दान का शत्रु है, लेकिन उसको भी समझाना होगा। गाँववाले सुख से खा-पी सकेंगे, अच्छी तरह रहेंगे, तो देश को लाभ ही है। वह समझ जायेगा। फिरका-दान हो जायगा, तो साहूकार को कर्ज छोड़ने के लिए समझा सकेंगे।

आज मदुरा जिले में ग्रामदान हो रहे हैं। लेकिन ग्रामदान तो हम उत्तर भारत से ही लेकर आये थे। हमें चाहिए, फिरकादान। हम ग्रामदान की गंगा का पानी लाए, आप समुद्र का जल काशी-विश्वनाथ के लिए नहीं देंगे ? आज तो ग्राम-दान की किताब यहाँ निकलती है तो १५०० मील की दूरी पर आए हुए मंगरौठ की कहानी आप पढ़ते हैं। कौन देखता है उस गाँव को ? तमिलनाड को बाहर के गाँवों की कहानी ही पढ़नी है क्या ? क्या आपको उनके वास्ते कोई कहानी नहीं बनानी है ? क्या फिरकादान आप करेंगे, तो उसे लेकर बाबा उत्तरवालों को सुनायेंगे। फिर मदुरा की महिमा उत्तर हिन्दुस्तान में चली जायेगी। हम आशा करते हैं कि ऐसी ताकत भगवान् आपको देगा।

कालुपट्टी (मदुरा)
९-३'-५७

अणुबम से भी बढ़कर : सर्वस्वदान : ३२ :

आज आपने जो काम किया, उससे भगवान् अत्यन्त संतुष्ट है। भगवान् का आपको आशीर्वाद प्राप्त है। इसी तरह आप की धर्म-प्रेरणा और भावना बढ़े और आप का कल्याण हो।

अभूतपूर्व घटना

ऐसी घटना दुनिया के इतिहास में एक अद्भुत घटना गिनी जायगी, जब कि हिन्दुस्तान के लोग पूरे-के-पूरे देहात दान में दे रहे हैं। ऐसी बात कभी किसी ने सुनी नहीं थी। इसमें किसी भी प्रकार का दबाव नहीं है और न हो सकता है। ऐसे काम दबाव से नहीं बनते।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

ईश्वर का साक्षात् दर्शन

आज तो हम इस गाँव में ईश्वर को साक्षात् देख रहे हैं। आप लोगों ने कितना प्रेम जताया है। हम समझते हैं कि भगवान् ने आप को वह प्रेम इसलिए दिया कि आपका कल्याण हो। ऐसा काम कानून से, डराने या धमकाने से नहीं हो सकता। यह काम तो केवल श्रद्धा, प्रेम और समझाने से ही हो सकता है।

ग्रामदान से दुनिया की हवा शुद्ध हो जाती है

ऐसे गाँवों ने जो काम किया है, उससे सारी दुनिया में शान्ति की स्थापना हो सकती है। मैंने पुरी के सर्वोदय-सम्मेलन में कहा था कि भू-दान-यज्ञ में जो दान देता है, वह विश्व-शान्ति के लिए वोट देता है, विश्वशान्ति स्थापित करने में मददगार होता है। पश्चिम की विद्या पढ़े-लोग बहुत अन्धे हो गए हैं। वे ऐटम की शक्ति देखते हैं, एक परमाणु में कितनी शक्ति है, ऐसा कहते हैं। लेकिन उससे भी ज्यादा शक्ति ग्रामदान में है। हम समझते हैं कि जो पराक्रम ऐटम और हाइड्रोजन से हिंसा के क्षेत्र में होता है, वही ग्रामदान से अहिंसा के क्षेत्र में होता है। ऐटम और हाइड्रोजन को हिंसा-शक्ति का सबसे बड़ा पराक्रम माना जाता है, उसी तरह ग्रामशक्ति से सर्वस्व-दान, अहिंसा-शक्ति का सबसे बड़ा पराक्रम माना जायगा। वैज्ञानिक कहते हैं कि जब ऐटम और हाइड्रोजन फूटता है, तब सारी दुनिया की हवा बिगड़ जाती है। हम समझते हैं कि जब ऐसा एक ग्रामदान मिलता है, तो सारी दुनिया की हवा शुद्ध हो जाती है।

आखिर में हम भगवान् से प्रार्थना करते हैं कि वह आप को आरोग्य दे, तुष्टि दे, पुष्टि दे। आप अपने बाल-बच्चों के साथ उसका नाम लेते रहें। आप लोगों ने बहुत ही पवित्र कार्य किया है। आपको मेरा भक्ति-भाव से प्रणाम।

अकिली (उत्कल)
१९-५-'५५

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

परिशिष्ट : १

भारत में प्राचीन ग्राम-व्यवस्था

श्री के० एम० पाणिकर 'ए सर्वे आव् इंडियन हिस्ट्री' में लिखते हैं : "एकमात्र गाँव ही वह आधार था, जिस पर भारत का प्रत्येक साम्राज्य पला है।" टी० डब्ल्यू राइस डेविड्स "बुद्धिस्ट इंडिया" में बहुत ही स्पष्ट चित्र देते हैं। उसका विस्तृत सार श्री० हर्षदेव मालवीय ने निकाला है। उसके कुछ उद्धरण यहाँ दिये जा रहे हैं—

"हमें अपराध की एक भी घटना सुनाई नहीं पड़ती और स्वयं गाँवों में, जिनमें से प्रत्येक एक छोटा स्वशासित लोकतन्त्र था, सम्भवतः अपराध अत्यन्त नगण्य था। प्रत्येक ग्राम के स्थानीय मामले गृहस्थों की खुली सभा में तय होते थे। ये सभाएँ बगीचों में होती थीं जो उस समय भी गाँवों की एक प्रमुख विशेषता थी। प्रत्येक ग्राम में फाटक-ग्रामद्वार होता था। उसके आगे बगीचे और फिर ग्रामक्षेत्र-गाँव के खेत। आवश्यकता पड़ने पर जंगल साफ करके ग्रामक्षेत्र का विस्तार किया जाता था। उनके आगे ग्राम का चरागाह हुआ करता था। उस पर समूचे ग्राम का राजा और प्रजा सबके पशु चरने का सामूहिक अधिकार होता था। ऐसा लगता है कि उस समय सहकारी सिंचाई की प्रथा प्रचलित थी। धम्मपद में 'उदकं हिनयन्ति नेत्तिका' का अनुवाद डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्‌जी ने इस प्रकार किया है "(नहरवाले) इंजीनियर पानी को (जहाँ चाहे वहाँ) ले जाते हैं।"

प्रत्येक परिवार के पास भूमि का कुछ रकबा था जिसकी पैदावार के उपभोग का अधिकार उसे था। किन्तु स्वामित्व अधिकार जैसी किसी बात का अस्तित्व न था। कोई भी भूमि को न बेच सकता था, न बंधक रख सकता था। कम-से-कम ग्राम-समिति की अनुमति के बिना ऐसा करना तो सर्वथा असम्भव था। अपनी निर्धारित भूमि पर खेती करने के अधिकार की वसीयत भी कोई नहीं कर सकता था। इस प्रकार के तथा भूमि के कब्जे-सम्बन्धी सभी मामले वैदिक काल से चले आये

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

परम्परागत रीति-रिवाजों के अनुसार, कभी समयानुसार साधारण संशोधन के साथ, औचित्य और सत्यता सम्बन्धी समाज की सामान्य भावना द्वारा तय होते थे।

वनों में गिरे हुए पेड़ों से लकड़ी चुनने के अधिकार निःशुल्क और बिना किसी बाधा के प्राप्त थे। राजा भी भूमि सम्बन्धी स्वतंत्र अधिकार का दान नहीं कर सकता था क्योंकि भूमि पर उसकी कोई मालकियत नहीं थी। सरकार को केवल वार्षिक कर के रूप में परम्परा के अनुसार पैदावार के षष्ठांश से द्वादशांश पाने भर का अधिकार था।

प्रत्येक परिवार के पास खेतीवाली आराजी का आकार वही होता था जिसका प्रबन्ध वह आसानी से कर सकता था। हालांकि कभी-कभी भटिका (मजदूर) काम पर लगाये जाते थे। किन्तु बेगार की प्रथा न थी। डॉ० राधाकुमुद मुखर्जी कहते हैं: आदर्श किसान वही माना जाता था जो अपनी भूमि से सम्बन्ध-विच्छेद करने की बजाय स्वयं ही उस पर खेती करता था। मजदूरी पर रखे जानेवाले "नौकर" को सामाजिक कलंक समझा जाता था और उसे दास से भी निम्न स्थान था। मजदूरी पर काम करना वे लज्जाजनक समझते थे और इस स्थिति को वे बेहद मजबूरी की हालत में ही कबूल करते थे।

जब से यह विपरीत स्थिति बढ़ चली तब उसे उसी समय सामाजिक पतन की प्रणाली कहकर खेद प्रकट किया गया है (जातक १,३३९ मिलिन्द १४७, ३३७ आदि)। भाग (सरकारी कर) के अतिरिक्त गाँव पर और भी महसूल "बाली" लगाये जाते थे। कभी-कभी अकाल, युद्ध जैसे आकस्मिक संकटों में व्यवस्था करने के उद्देश्य से सरकारी गल्ला गोदामों को पूर्णरूप से भरने के लिए विशेष महसूल लगाये जाते थे। इन सबके उपरान्त ऐसा प्रतीत होता है कि उस समय श्रम प्रदान करने की प्रथा भी प्रचलित थी। यह श्रमदान स्पष्टतः गाँव द्वारा अपनी सहायता आप करने के उद्देश्य से प्रेरित होता था, यद्यपि कहीं-कहीं कभी-कभी राजा का शिकार या अन्य प्रबन्ध उनसे करवाया जाता था। सुविख्यात मदुरा के मीनाक्षी मन्दिर की दीवाल पर बने हुए एक चित्र में भगवान्

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

शिव अपने सिर पर मिट्टी से भरी टोकरी ढोते हुए दिखाये गये हैं और उनके पीछे वहुत से लोग पुल निर्माण में व्यस्त। ग्रामीणों में उस समय कोई वहुत धनी नहीं था, न गरीवों की संख्या ही वहुत थी। वे परस्पर प्रसन्न, खुशहाल, अपने हाथों में अपने वच्चों को नचाते हुए खुले दरवाजेवाले घरों में आनन्दपूर्वक रहते थे। उन्हें अपनी स्थिति, अपने परिवार और अपने गाँव पर गर्व था।

"आर्थिक समीक्षा" पाक्षिक
७-११-'५५

टी. जी. ... एवं,
स्व, वेदा...
"ज्ञा" को अर्पण,
२५-७-७४

परिशिष्ट : २

न्यूजीलैण्ड का एक साम्ययोगी समाज

सर्वोदय या साम्ययोगी जीवन केवल भारत में ही नहीं, दुनिया में अन्यत्र भी पाया जाता था। रूस देश में "दुखोवोरोत्सी" समाज करीव ३०० वर्षों तक चला। सत्य, अहिंसा, अस्तेय, शरीरश्रम, असंग्रह आदि तत्त्वों पर वह चला। ईसामसीह के वचनों के अनुसार उन्होंने अपना जीवन ढाला। अपनी रोटी अपनी मेहनत से कमाना, सादगी से रहना, कभी किसी पर आक्रमण न करना, न किसी राजसत्ता को मानना या उसको कर देना इस तरह उनका जीवन था। ज़ार ने वार-वार उन्हें झुकाने की कोशिश की, उन पर आक्रमण किया, उनके घर ध्वस्त किये, धन पशु आदि लूट लिये। फिर भी उन्होंने कोई प्रतिकार नहीं किया, न द्वेष दर्शाया। फिर से वे गरीवी में अपना जीवन प्रारम्भ कर अपने परिश्रम से यथावत् हो जाते थे। सादगी तो यहाँ तक थी कि वे वच्चों के लिए कपड़ों को अनावश्यक मानते थे और स्वयं लुंगी और स्त्रियाँ लुंगी के अतिरिक्त सीने पर छोटी फड़की काफी समझती थीं। तीन सौ वर्षों में पचीस वार उनको कायल करने के प्रयत्न विफल होने पर ज़ार ने उन्हें नष्ट करने की ठान ली। पर उसके नृशंस अत्याचारों से दुनिया में तहलका मच गया और अमेरिका ने पूरी वसती को अपने देश में स्थान देना

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

स्वीकार कर नामोनिशा मिटने से उन्हें बचाया। फिर भी उनकी सादगी को जंगलीपन मानकर या कर न देने की उनकी वृत्ति में अराजकता देख अमेरिका ने भी उन्हें 'सुधारने' के साम-दाम-दण्ड-भेद सारे उपाय अमल में लाकर देखे। अन्त में उन्हें जंगलों के छोरों पर निर्वासित कर छुटकारा पाया।

प्रख्यात क्रांतिकारी प्रिंस क्रापटकिन ने अपनी 'कांक्वेस्ट आफ ब्रेड' पुस्तक में तथा अन्यत्र ऐसे कितने ही उदाहरण दिये हैं, जहाँ प्राचीनकाल में पृथ्वी की पीठ पर भिन्न-भिन्न जगह इस तरह के साम्यवादी समाज थे और वर्तमानकाल में व्यक्तिगत रूप से अत्यन्त छोटे पैमाने पर विज्ञान के सहारे मनुष्य इतना उत्पादन कर दिखाते हैं, जो आज के प्रचण्ड आधुनिक यान्त्रिक औजार या कृत्रिम रासायनिक खाद से भी नहीं हो पाते।

पुराने काल की बात हम छोड़ दें। आज इस समय न्यूज़ीलैंड में एक ऐसा समाज है जिसका वर्णन सिस्टर डाफ ने, डबल्यू जोन्स ने न्यूज़ीलैंड से लिख भेजा है।

न्यूज़ीलैंड में नेल्सन और मोटुक्का के बीच लोअर मौटेरे में एक बस्ती है, जो ग्राम परिवार के रूप में रहती है। वे जमीन की काश्त स्वयं शामिल शरीक करते हैं और सम्मिलित स्वामित्व भी मानते हैं। इस प्रयोग का उद्देश्य यह है कि बुनियाद से ही एक उत्तम ईसाई तत्त्वों पर चलनेवाला समाज कायम कर भूतल पर शान्ति और सौहार्द बढ़ावें।

यह उपक्रम १९४० में प्रारम्भ हुआ, जब केवल तीन प्रौढ़ व्यक्ति, कुछ जमीन, एक फल बाग और एक मकान था। आज वहाँ दस परिवार हैं जिनमें १९ प्रौढ़ व्यक्ति, ३५ बच्चे हैं और दो ब्रह्मचारी। उसी अनुपात में उनकी जायदाद भी हो गयी है। अधिकांश लोग मेथडिस्ट और थोड़े क्वेकर्स हैं। धार्मिक और युवक संगठनों में विशेष दिलचस्पी लेकर सब शान्ति की उपासना के कारण एक प्रेम सूत्र में बँधे हुए हैं। "युद्ध ईसाइयत का विरोधी है"। "अतः हमारी कोशिश है कि हम एक अच्छे समाज की नींव डालें", ऐसे उनके वचन हैं। नया व्यक्ति उम्मीदवार के तौर पर कुछ समय रहता है। पूर्ण सदस्यता के समय उसे अपनी निजी मिलकियत समाज को अर्पण करनी होती है। हर परिवार को एक मकान के अलावा साप्ताहिक निर्वाह व्यय,

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

नमद तथा वस्तुओं में दिया जाता है। परिवार ही पूरे समाज की बुनियाद माना जाता है। प्रत्येक बालक के लिए भी कुछ भत्ता दिया जाता है जो बच्चे के माध्यमिकशाला में पहुँचने पर बढ़ाया जाता है। बच्चे का जन्म होते ही भत्ता शुरू होता है। इस तरह समाज में उपभोग की समानता रखी जाती है। बहुत-सी बातों में समाज स्वाश्रयी है। इमारतों के लिए वे स्वयं लकड़ी चीर देते हैं। वे एक समाज केन्द्र की इमारत भी बनाना चाहते हैं जिसमें पुस्तकालय और प्रार्थना भवन हों। व्यक्तिगत मुनाफे की प्रथा न होने से जो अतिरिक्त बचता है, वह नये विकास कार्य में लगाया जाता है, धार्मिक और सामाजिक कार्यों पर खर्च होता है या विकास योजना के लिए कर्ज के रूप में भी दिया जाता है।

इस समाज के सदस्य जीवन के हर तपके से आये हुए हैं। एक शिक्षक, एक किसान, एक किराना दूकान का सहायक है। समाज का एक सहायक व्यवस्थापक छापाखाने में उम्मीदवार था। दूसरा मजदूरों की शिक्षा-समिति का मंत्री। अध्यक्ष स्थानीय मेथडिस्ट चर्च का पादरी है जो पुस्तकालय भी चलाता है। एक सदस्या महिला है जिनके दो बच्चे, वह रविवासरीयशाला की शिक्षिका तथा शाला की सेक्रेटरी हैं। इतना ही नहीं, फलों के मौसम में वह स्वयं प्रतिदिन छह घण्टे फलों को पैक करती हैं। एक सदस्य का उत्साह इतना है कि 'भोर' होने के पहले ही वह सब गायों को दुह लेता है। और दिन भर पैकिंग शेड में काम करके रात को फिर गायें दुहता है। द्वितीय महायुद्ध के समय वह सिविल सर्वेंट था। आज भी वह अपना पूरा भत्ता नहीं उठाता है।

बच्चे भी शाला के समय के बाद प्रतिदिन कुछ काम करते हैं। वह मिहनताना उनके क्लब को दिया जाता है, जिसे वे स्वयं लोकतंत्र के अनुसार चलाते हैं। बच्चों के अपने जेबखर्च के अलावा इस फंड से किताबें खरीदी गयी हैं।

छह अनाथ बालक जन्म से ही स्वीकृत कर लिए गये हैं। एक अनाथ बालिका तो यहाँ आने के पूर्व ११ घरों में रह चुकी थी। यह समाज अब

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

वेलिंग्टन कारागार का एक कैदी तथा पोरिरुआ पागलखाने का एक मरीज स्वीकार कर रहे हैं। एक शरावी भी आना चाहता है, अन्य वीमार या अड़चन में आये हुए व्यक्तियों को भी समय-समय पर आश्रय दिया गया है।

परिशिष्ट : ३

अनोखा प्रेम-प्रयोग

कुन्ती ने भगवान् से विनय की, "हे भगवन् मुझे विपत्ति दे, ताकि तेरा स्मरण बना रहे"। "आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन। सुखं वा यदि वा दुःखं संयोगी परमो मतः ॥–गीता। "दया धरम का मूल है, पाप-मूल अभिमान।

एम्मौस के एक सरल फ्रेंच पादरी अव्वे पिएरे मानवीय दुःख को दूर करने के लिए प्रेम के स्रोत का उपयोग अद्भुत प्रकार से कर रहे हैं। वे लिखते हैं :—

"साठ वर्ष पहले,एक रात एक कैदी मेरे द्वार पर आया। सहसा परमात्मा ने मुझे एक नवीन प्रेरणा दी। "तुझे तकलीफ है तो आ जा, मैं तुझे मदद दूँगा" कहने की अपेक्षा "देखो भाई, मुझ पर एक वड़ा भार है, मैं थक गया हूँ, क्या तुम मेरी मदद न करोगे ?" उद्गार मेरे मुँह से निकले और जिस (कैदी) ने अच्छी तरह रहने की आशा छोड़ दी थी, वही अव प्रेम करना सीख गया।

एक दिन एक महिला को अपने छोटे वच्चों सहित घर से निकाल दिया गया, वह रास्ते में असहाय पड़ी थी। मैंने मन्दिर के गर्भागार से पवित्र वस्तुएँ वरामदे की कोठरी में लाकर रख दीं और वह स्थान उसे रहने को दे दिया। मैंने सोचा कि भगवान् को गर्मी-जाड़े की क्या परवाह! इस तरह एकाकी–अनाथ–असहाय यहाँ आते गये और नये आनेवालों को भी स्वीकार कर उनके लिए परिश्रम करने लग गये। वहाँ गत वर्ष तक १०० परिवार हो गये हैं जो अपनी जीविका चलाते हैं।

यह प्रेम की बगावत सहसा इतनी वढ़ गयी कि उसके विस्फोट की धड़कन सारे संसार को जा लगी। आज दुनिया के कोने-कोने से गुप्तदान आते रहते हैं।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

जब शोषित पीड़ितों को दया भावना से मदद दी जाती है पर सहाय्यकर्ता स्वयं उस स्थिति का वरण करने को तैयार नहीं होते तब तक ऐसी दान-वृत्ति से विशेष परिणाम नहीं निकलता। कभी विपरीत परिणाम भी होता है। अब तो श्रीमानों की नहीं बल्कि निष्कांचन "पागलों की", महापुरुषों की, संतों की, मसीहाओं की जरूरत है, जो प्रेम के अभाव से मरनेवाली इस दुनिया के दुःखों के साथ तादात्म्य पाकर उसे बचावें और ईश्वर का साक्षात्कार पावें।

युद्ध में जिस तरह राष्ट्रों की सारी शक्ति बुद्धि सम्पदा एकत्रित कर राष्ट्र के बचाव में लगायी जाती है, उसी तरह एक विराट् आन्दोलन प्रेम और शान्ति के लिए करने का महान् क्षण अब आ गया।

परिशिष्ट : ४

ग्रामदानी गाँवों के लिए योजनाएँ

प्रत्येक ग्रामदानी ग्राम के संगठन के लिए हमारी योजना इस तरह होगी :—

(१) ग्राम के स्तर पर एक ग्राम-सभा होगी (फिर जन-संख्या चाहे जितनी हो) जिसमें प्रत्येक परिवार (संयुक्त परिवार) से एक पुरुष या स्त्री सदस्य के रूप में रहेगा।

(२) ग्रामसभा सर्वसम्मति से पाँच से नौ व्यक्तियों की एक सर्वोदय पंचायत बनायेगी।

(३) इसी तरह की पाँच से दस तक ग्राम-सभाओं को एक सूत्र में जोड़नेवाली प्रवर-समिति रहेगी।

(४) फिरका स्तर पर भी एक समिति रहेगी जो (प्रादेशिक) सर्वोदय मंडल की राय और मार्गदर्शन से काम करेगी।

फिरकातालुका, तहसील या परगना की भाँति कई गाँवों को मिलाकर बननेवाली एक इकाई।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

(५) सर्वोदय मंडल (ऊपर की सभी समितियों के प्रतिनिधि तथा अन्य सदस्य मिलाकर आचार्य विनोबा भावे की राय से बनाया गया प्रादेशिक संगठन)।

नोट--(१) उपरोक्त चारों समितियों में कम से कम एक चौथाई सदस्य स्त्रियाँ हों।

(२) सभी प्रस्ताव सर्वसम्मति से तय होने चाहिए।

२—सर्वोदय पंचायत के कार्य :

(१) ग्राम-सभा में निहित समस्त भूमि पर पूर्ण अधिकार और तत्सम्बन्धी व्यवस्था करना।

(२) (क) ग्राम-सभा के नियंत्रण में सर्वोदय पंचायत को अधिकार होगा कि भमि का सही ढंग से उपयोग की व्यवस्था करना, कृषि में सुधरे हुए तरीकों को काम में लाना, लोगों के लिए सन्तुलित खुराक की उपज को वढ़ाने लिए योजना बनाना और स्वावलम्बन के आधार पर स्थानीय उद्योगों के लिए कच्चा माल जुटाना। यह अलग-अलग परिवारों से या कुछ परिवारों के समूह से या पूरे ग्राम के द्वारा परिस्थिति के अनुसार और ग्राम में जो सहयोग मिले उस आधार पर होगा। भूमि का वितरण इस प्रकार होगा कि प्रत्येक परिवार या परिवारों के समूह को जमीन का रकवा, मिट्टी की उर्वरा शक्ति, पानी के स्रोत और उनकी काश्त कर सकने की क्षमता को देखकर भूमि वितरित कर देना।

(ख) चराई और गाँव के दूसरे सार्वजनिक कार्यों के लिए कुछ भूमि अलग रख छोड़ना।

(ग) जिन परिवारों को भूमि बाँटी गई उनको काश्त की सुविधा के लिए तथा कारीगरों को नकद या वस्तु के रूप में कर्ज देना तथा उसकी वसूली करना।

(घ) व्यक्ति के लिए असंभव ऐसे कृषि-सुधार कर दिखाना।

(ङ) काश्त सुधार के लिए साधन, यंत्रादि खरीदना तथा खड़े करना।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

(च) आवपाशी के स्रोत तथा उनकी व्यवस्था ठीक रखना, बढ़ाना और सुविधा दिलाना।

(छ) परती ऊसर या नयी जमीनों को काश्त में लाना।

(ज) जमीन का कटाव (क्षरण) से संरक्षण करना।

(झ) कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए साधारणतः योजना बनाकर उसकी जिम्मेवारी लेना और उसे पूरी कर दिखाना।

(ञ) लगान की अदायगी और अन्य सर्वसाधारण जिम्मेदारियाँ जैसे बढ़ई, लुहार, बुनकर आदि कारीगरों का प्रबन्ध, अनाथ, असहाय का भरण-पोषण तथा मंदिरशाला आदि सार्वजनिक संस्थाओं का संचालन-संवर्धन।

(ट) कृषि-मवेशी, भेड़-बकरी, मुर्गी, मधुमक्खी, रेशम कोसा के कीड़े आदि का विकास करने की योजना बनाकर अमल में लाना, जिससे सर्वोदयी ग्रामों का तथा वहाँ के निवासियों का भला हो।

(ठ) उसी हेतु आवश्यक गृह या कुटीर उद्योग, ग्रामोद्योग तथा छोटे पैमाने पर चलनेवाले धंधे शुरू करके चलाना और बढ़ाना।

(ड) सर्वोदय ग्राम में शैक्षणिक, वैद्यकीय, स्वास्थ्य विषयक और अन्य सार्वजनिक संस्थाओं को हाथ में लेना, निर्माण करना, सुस्थित रखना और संचालन करना।

(ढ) सार्वजनिक दूकान और भण्डार (कोठार) कायम करके चलाना (व्यक्तिगत व्यापार इष्ट नहीं है।)

३—ग्रामसभा के कार्य

वार्षिक उपज का हिस्सा तय करना जो ग्राम की सार्वजनिक भलाई के लिए अलग निकाल लिया जावेगा।

सूचनाएँ

(१) जमीन का लगान

जमीन का लगान नकद या अनाज के रूप में, जैसा सर्वोदय पंचायत निर्णय

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

करे, वसूल किया जायगा। लगान पूरे का पूरा ही गाँव में रख लिया जावे जिससे शिक्षण, स्वास्थ्य आदि गाँव के काम चलाये जा सकें।

(२) कर्जभार

ग्रामदानी गाँव की जायदाद पर अदालती हकरसी कार्यवाहियाँ करने से साहूकारों पर रोक लगाना जिससे आवश्यक उचित कानून बनकर समस्या हल हो जाय।

एक कर्ज समझौता बोर्ड कायम किया जाय तो कर्ज की जाँच करके उनको उचित तादाद में घटावे। सर्वोदय मंडल योग्य सज्जनों के जरिये साहूकारों से मिलकर उन्हें ऋण-भार उतारने को राजी कर ले। फिर से पुरानी स्थिति न आने पावे, इस दृष्टि से ग्रामदानी गाँवों में आवश्यकतानुसार उपयुक्त तरह की कृषि बैंक निर्माण करनी होगी जो सर्वोदय पंचायतों को योग्य दरों पर तथा शर्तों पर कर्ज दे सके। सर्वोदय पंचायत गाँव में न रहनेवाले जमीनदारों से मिलकर उनकी जमीनों का प्रबन्ध हाथ में लेने के लिए उनको राजी कर ले।

४—शिक्षण

ग्रामदानी गाँवों में शिक्षण एक महत्व का कार्य होगा। इसमें पूर्व-बुनियादी, बुनियादी तथा प्रौढ़ ,शिक्षा रखी जावेगी। सरकारें आजकल मामूली शालाओं कों बुनियादी शालाओं में परिवर्तित कर रही हैं और समाज-शिक्षण का प्रसार भी कर रहीं हैं। इन कामों के लिए ग्रामदानी गाँवों का क्षेत्र ही उत्तम होगा। अतः सरकारें परिस्थिति से लाभ उठाकर उपरोक्त कार्यक्रमों के लिए इन क्षेत्रों को प्रथम प्राधान्य दें। प्रशिक्षित शिक्षकों तथा बुनियादी शालाओं के लिए साधन सामग्री की पूर्ति आदि इन क्षेत्रों में तुरंत की जाय। कम्यूनिटी प्रोजेक्ट, सरकारी संस्थाएँ और गैर-सरकारी संस्थाएँ——सर्वसेवासंघ, गांधीनिधि, कस्तूरबा ट्रस्ट, हरिजन सेवक संघ, खादी ग्रामोद्योग बोर्ड, सोशल वेलफेअर बोर्डें आदि——पूर्ण सहयोग देंगी। अतः पंचायतों के हाथों में ग्रामशालाएँ होने पर भी सरकार का फर्ज है कि बुनियादी शिक्षा की प्रगति करे। भारत जैसे स्वतंत्र गणतन्त्र में शिक्षण में नागरिकता का प्रशिक्षण भी

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

शामिल रहेगा। गाँव के प्रत्येक वालिग व्यक्ति को पंचायत का कार्य, सहयोग संस्थाओं तथा उन सिद्धान्तों पर काम का ज्ञान होना चाहिये। इस तरह का नागरिक प्रशिक्षण ही प्रौढ़ शिक्षण है।

५–सफ़ाई

सर्वोदय पंचायतें सार्वजनिक स्वास्थ्य तथा रोग प्रतिवंधक काय, जिसमें पीने के शुद्ध जल तथा सन्तुलित पोषक खुराक शामिल है, और ऐसे सारे कार्य जो वीमारियों और सांसर्गिक व्याधियों को रोकने के लिए आवश्यक हों, करें।

६–ग्राम, छोटे तथा कुटीर उद्योग

ग्राम में खेती के जीवन से संलग्न वढ़ई, लुहार, कुम्हार के काम, रस्सी वनाना, कातना, वुनना, पीसना, दाल वनाना आदि छोटे उद्योगों के जरिये, जिनकी जीविका आज किसी तरह चल रही हो, उन्हें तुरन्त सहायता पहुँचाना, यही पहला वुनियादी काम माना जावे। यह कार्य आवश्यक पूँजी, उनके औजार उपकरणों का तथा काम के तरीकों का सुधार और उनके माल को लोकप्रिय वनाकर उनकी खपत द्वारा ही अच्छी तरह होगा। साधारणतः स्थानीय कच्चे माल से इनका सम्वन्ध रहेगा। आर्थिक वुनियाद—एकत्रित गाँवों के समूह—में एक उद्योग केन्द्र होना चाहिये, जहाँ सुधारे हुए उपकरण जैसे घानी, चक्की, कुम्हार के चक्र आदि उपलव्ध होंगे और जो प्रदर्शनी के रूप में भी रहेंगे। हमें उन धंधों को सवसे पहले प्रोत्साहन देना चाहिये जिनमें ज्यादा से ज्यादा लोग काम कर सकें, जैसे कताई, वुनाई, ईंट वनाना आदि। ज्यादा-से-ज्यादा लोगों को काम देने के खयाल से चरखे से अच्छा और अद्यतन कुछ नहीं है। इसीलिए सादा चरखा और अम्वर चरखा इस कार्यक्रम का केन्द्रबिन्दु हो।

७–सांस्कृतिक और मनोरंजक कार्यक्रम

ग्रामों के पुनर्निर्माण में आज इसकी वहुत उपेक्षा की जाती है। जिन सांस्कृतिक तथा मनोरंजक कार्यक्रमों की जड़ें ग्राम क्षेत्रों में थीं

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

उनका इन दिनों तेजी से लोप हो रहा है, यद्यपि हरएक स्वीकार करता है कि उनमें काफी खजाना था। कलापथक, नाटक, ग्रामीण खेल, प्रदर्शनी, उत्सव और राष्ट्रीय त्योहारों को ठीक ढंग से मनाना आदि का अंतर्भाव उनमें किया जायेगा। इनमें से कुछ तो ग्रामों के लिए और कुछ ग्रामसमूहों के लिए होंगे जहाँ मेला आदि मौकों पर लोग एकत्र होते हैं। इस बात का खयाल रहे कि ये कार्यक्रम खर्चीले न हों, फिर भी ग्रामीण-मानस के लिए पूरा अर्थ दर्शानेवाले हों। इन कार्यक्रमों के संगठनों को योग्य संस्थाओं में प्रशिक्षण दिया जाय।

८—न्याय तथा क़ानून और व्यवस्था

एक गाँव या ग्रामसमूह के लिए नीति मन्दिर ग्रामसभा द्वारा कायम हो। प्रत्येक को अपने गाँव में ही तुरन्त न्याय मिले। उन्हें सारे झगड़ों में न्याय देने का अधिकार हो और सारे मामले ग्राम के स्तर पर ही सुलझाये जायँ। सर्वोदय पंचायत के प्रत्यक्ष मातहत शान्ति सेनाओं का संगठन हो और विधायक कार्य के लिए उनका उपयोग किया जाय। शान्ति सेना का एक प्रमुख कार्य यह होगा कि वह ग्राम के भिन्न-भिन्न स्थानों में प्रहरी का कार्य करें और इसका प्रशिक्षण उन्हें उचित रूप से दिया जाय। न्याय मन्दिर में कुछ निश्चित व्यक्तियों की अपेक्षा, अनेक व्यक्तियों की नामावली रहे जिनमें से दोनों पक्ष इकरारनामा करके अपने लिए पंच चुन लें। इन पंचों का निर्णय अन्तिम माना जाय और न्यायालय (अदालत) पंचायती कानून के अनुसार उन्हें स्वीकृति दे दें।

९—सार्वभौम-प्रशिक्षण

उपर्युक्त कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए हमें प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं की आवश्यकता होगी। इनका प्रशिक्षण अविलंब हाथ में लिया जाय। आम तौर पर प्रत्येक सर्वोदय पंचायत के लिए एक कार्यकर्ता प्रशिक्षित करने का हमारा प्रयत्न हो।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

परिशिष्ट : ५

सामुदायिक अधिकार का आलेख

तमिलनाड के धान्यागार तंजौर जिले में एक सौ वर्ष पूर्व जमीन के समय समय पर पुनर्वितरण की जो खास प्रथा थी, उसका पूरा अवतरण हम यहाँ दे रहे हैं। तंजौर के "डिस्ट्रिक्ट गैज़ेटिअर" के परिशिष्ट में एक अंग्रेज का यह अधिकृत निवेदन है। यह एक पुरानी पुस्तक है, जो एक मित्र के द्वारा हमें प्राप्त हुई और उसके पुनर्मुद्रण के लिए हम मद्रास शासन के ऋणी हैं।

इस लम्बे और वर्णनात्मक इकरारनामे (कबूलियत) से मालूम हो जायगा कि नन्निलम् ग्राम में गाँव की सारी जमीन पर गाँववालों को उपभोग का सामुदायिक अधिकार था, न कि कोई व्यक्तिगत मालकियत। ऐसा कहा जाता है कि निश्चित परिमाण में तय शुदा परिश्रम करने पर हरएक को अपने हिस्से की जमीन की उपज मिल जाती थी। केवल उतनी ही जमीन व्यक्तिगत तौरपर रखी जा सकती थी जितनी कि आवादी में मकानों के साथ गृहवाटिका के लिए हाता के रूप में आवश्यक हो। जमीन का निश्चित इकाई (block) में विभाजन होता था, जिन्हें "करै" कहते थे। इन करैयों को फिर से विभाजित कर एक गुट को दिया जाता था। यह उपविभाजन ग्रामदान गाँवों में अब प्रचलित की हुई प्रथा के सदृश ही था। जिसके सुपुर्द जमीन की जाती थी वह उसे जायदाद के जैसा बेच नहीं सकता था, न काश्त का अधिकार विरासत से माना जाता था। तालाब बनाने तथा व्यवस्थित रखने और उनसे नहरें निकालने के लिए सावधानीपूर्ण भरपूर प्रबन्ध रखा जाता था।

व्यापारी तथा उनके द्वारा प्रसारित पैसे के व्यवहार व्यवस्थामय अर्थशास्त्र के पदार्पण से उक्त कबूलियत में दर्शायी उचित हिस्सेरसी

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

तथा सामुदायिक मिलकियत को चोट पहुँची। लेखक मि० स्टोक्स (जो स्वयं उस समय मौजूद थे) अपने विवेचन में लिखते हैं कि कर्ज के वलपर ग्रामीण व्यक्ति से, जिन्होंने हिस्सा हथियाया था और जो इस इकरारनामा में प्रस्तावित पुर्नवितरण का विरोध करते थे, वे तीनों जमीन-वाले व्यापारी थे। स्टोक्स आगे लिखते हैं "इन बाहरी लोगों को स्थानीय रिवाज एवं परंपरा के लिए आदर न था, न उस जमात के साथ विशेष सहानुभूति, जिसमें वे घुस गये थे।"

विनोवाजी का ग्रामदान आन्दोलन और ग्राम में सामुदायिक मालकियत का तथा अपनी-अपनी आवश्यकता के अनुसार, श्रम करके उत्पादन में हिस्से का उनका सुझाव, कोई निरी आदर्श कल्पना नहीं है वल्कि वह तो तंजाऊर डिस्ट्रिक्ट गजेटिअर के महत्वपूर्ण आलेखपत्र (document) से सिद्ध एक शताब्दि पूर्व भारतीय ग्रामों में प्रचलित नियोजित सामूहिक जीवन की एक स्वस्थ प्रथा का पुनरुज्जीवन ही है।

तंजौर जिले में "करैयिड" प्रथा अर्थात् जमीन का नियतकालिक पुर्नवितरण

—एच० जे० स्टोक्स, सी० एस्०, मंगापटम्

सन् १८०७ में तंजोर में स्थायी वन्दोवस्त के आयोजन पर अपना निवेदन देने के लिए नियुक्त समिति को पता चला कि जिले में भू-धारणा (tenure) के अनुसार ग्राम निम्न तीन प्रकार से वर्गीकृत किये जाते थे :—

१ समुदायम्	जिसमें	१७७४	ग्राम थे
२ पालभोगम्	"	२२०२	" "
३ एक भोगम्	"	१८०७	" "
	कुल	५७८३	ग्राम

अन्तिम दो से हमारा ताल्लुक नहीं है, क्योंकि उनमें एक वा अनेकों के हाथों में जमीन थी। हमें तो केवल समुदायम् के बारे में कहना है। यह वर्ग, जो कि मेरे खयाल से अत्यन्त प्राथमिक था, फिर

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दो उपवर्गों में विभाजित किया जावे। एक वह जिसमें जमीन की फसल का बँटवारा होता था और दूसरा वह जिसमें अस्थायी तौर पर जमीन ही बाँट दी जाती थी। 'समुदायम्' संस्कृत शब्द है और उसका अर्थ है "सब मिलकर" समूह, गिरोह, झुण्ड। जिन ग्रामों को यह उपमा दी जाती थी, उन ग्रामों में ग्रामीण समाज के सदस्य या मिरासदार 'जैसी आज की उनकी संज्ञा है' सामुदायिक तौर पर जमीन काश्त करते थे और अपने-अपने हिस्से (पांगु) के अनुसार फसल बाँट लेते थे। अर्थात् व्यक्ति को अलग से जमीन नहीं दी जाती थी। उसे जो कुछ स्वामित्व वा अधिकार था वह फसल में एक या अधिक हिस्सों का। ऐसे ग्रामों में हरएक के पास उचित प्रमाण में पशुधन और साधन थे और वह अपने हिस्से का निर्धारित श्रम कर देता था। उसके कब्जे में केवल उतनी ही जमीन थी, जो आवादी के अन्तर्गत उसके मकान से सटे हाता या गृहवाटिका के रूप में थी। इस तरह की भूधारणावाले गाँव अब शायद ही रहे हों। और यदि अपवाद रूप हों तो उनकी यह प्रथा निश्चय ही शीघ्र मिटनेवाली है। फिर भी कितने ही गाँवों में आमतौर पर परती या हल्के दर्जे की जमीन, जिससे आय मिलना अनिश्चित है, अब भी सब ग्रामीणों द्वारा 'समुदायम्' निस्तार देह जैसी सबके लिए रखी और क्वचित् काश्त भी की जाती है। यह जमीन ऐसी ही है कि जिसे सबके लिए रख छोड़ना सुविधाजनक था या बाँट लेना लाभदायक न था। इन्हीं में सामूहिक भूधारण की पुरानी प्रथा, जो किसी समय सार्वत्रिक थी, आज जिन्दा है।

पर चूंकि इस प्रथा में व्यक्तिगत उद्यमशीलता के लिए नाममात्र का प्रोत्साहन था और उसी कारण काश्त की लापरवाही से उत्पादन बहुत कम था अतः कृषिसुधार के लिए अनिवार्य रूप से दूसरा कदम उठाना आवश्यक हो गया और वह यह कि हरएक को काश्त के लिए एक अलग टुकड़ा। इस प्रकार की प्रथा जिस गाँव में है उसे तमिल में "पसुन करै" या करैयिड़ गाँव कहते हैं। पसुन शब्द पुरानी तमिल में है और कन्नड़ क्रियापद 'पसु' विभाजन करना का समानार्थी है। दोनों

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

का मतलब 'खेत-विभाजन' है। प्रथम-प्रथम इस तरह का निर्धारण नये सिरे से हर साल किया जाता था। परिवर्तन के प्रारंभ में वही स्वाभाविक था। और जागीर प्रथा के अत्यन्त उर्वर क्षेत्रों में वह प्रत्यक्ष मौजूद है। मदरास के इर्द-गिर्द चिंगलपेट जिले में वह आज भी है। पर तंजोर जिले में इतनी अल्प अवधि में बारवार परिवर्तन के उदाहरणों की जानकारी नहीं है। मिरासदारों की इच्छा के अनुसार इस जिले में वन्दोवस्त की मियाद आठ से तीस वर्षों की होती है।

जमीन के पुनर्वितरण का तरीका एक उदाहरण से ठीक समझ में आयेगा। साधारणतः बीस वेली (१ वेली—६.६ एकड़) के गाँवों में कहीं एक, तो कहीं सवा से तीन वेली की एक इकाई, जिसे पांगु या हिस्सा कहते हैं, निश्चित की जाती है। अपने रकबे के अनुसार गाँव चार से दस "करै' या क्षेत्रों (blocks) में विभाजित किया जाता था और प्रत्येक करै में कुछ हिस्से या पांगु रहते थे। इस तरह वीस वेली के गाँव में चार करै में पन्द्रह पांगु हो सकते थे पर आमतौर पर एक करै में तीन हिस्सेदारों की जमीन के हिसाव से बारह हिस्सेदार होते थे।

जून, जुलाई या अगस्त मास में वीज वोने के पहले जमीन वितरण की क्रिया—करै—प्रारंभ होती थी। सबसे पहले गाँव का पूरा क्षेत्रफल नापकर निर्धारित किया जाता था। फिर प्रत्येक करै के लिए भूधारियों में से एक प्रमुख चुना जाता था जिसे करैकरण या करैस्वामी कहा जाता था अर्थात् जो करै का व्यवस्थापक या मुख्य होता था। साधारणतः वह गाँव के वड़े हिस्सेदारों में से ही होता था। यद्यपि आजकल वह पढ़ा-लिखा न हो तो वह पद शिक्षित छोटे के लिए दिया जाता है। करै के सब हिस्सेदारों की संमति से वह नियुक्त किया जाता था, और नये वितरण तक वह अपने पद पर रहता था। इस अवधि में यदि वह मर जाय और अपनी जायदाद बेच दे तो उसका पद विरासत में या खरीददार को नहीं मिलता था। नयी नियुक्ति नहीं की जाती थी। पुराने पदाधिकारी करैकरण [उसे करैस्वन या शेतीकरण (संस्कृत-क्षेत्र, हिन्दी खेत, मराठी शेत) भी कहा जाता था] का नाम नये बन्दोवस्त तक वना रहता था।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

करैकरण के चुनाव के बाद और प्रत्येक करै के हिस्सेदार तय होने पर, हिस्सेदार करैकरण के अनुसार चलने, अपने हिस्से को स्वीकार करने और आवश्यक सुधार दुरुस्तियाँ अमल में लाने तथा अन्य नित्य नैमित्तिक प्रबंध की जिम्मेदारी का इकरारनामा लिख देते थे। तब गाँव की जमीन पुराने 'धारण' का खयाल न रखकर नये सिरे से १५ हिस्सों में बाँटी जाती थी, जैसा कि उदाहरण के लिए हमने माना है। इन १५ हिस्सों को ४ करै में सम्मिलित कर देते थे। फिर भूर्जपत्र (ताड़पत्र) (palm-leaf) कड़जन के टुकड़े जिन्हें 'करैयोलै' कहते थे, चार करै के लिए अलग-अलग तैयार किये जाते थे और उन पर हिस्सेदारों के नाम तथा उनके हिस्से की जमीन का रकवा लिया जाता था। फिर करैकरण के नाम अलग-अलग लिखे हुए छोटे चार 'कागज' बनाये जाते थे और ये आठों एकत्र कर जमीन पर छोड़ दिये जाते थे। एक चार पाँच साल का बालक, जो अपढ़ ही रहता है, एक बड़े के साथ एक छोटा कागज उठाने जाता था और इसी के अनुसार करै और करैकरण का निश्चय हो जाता था।

इस तरह चिट्ठी द्वारा तय करने का यह तरीका किसी सार्वजनिक स्थान जैसे मन्दिर, मठ, ग्राम, चौल्ट्री (पंचायतघर) आदि में अमल में लाया जाता था। ग्राम के नाम के आद्याक्षर के अनुसार अनुकूल नक्षत्र से शुभ मुहूर्त निकालकर उस दिन वह होता था। और यह सारा कारोबार धार्मिक आचार के जैसा था। मन्दिर में वहाँ के देवता को साक्षी रखकर या अन्यत्र जाफ़रान (केशर) से ग्रामदेवता (पिलैयर) बनाकर उसके सामने जितने हिस्सेदार उतने ही नारियल चढ़ाकर, तांबूल रखकर, पूजा समाप्त होने पर चिट्ठियाँ डाली जाती थीं। फिर हर एक करैकरण के सुपुर्द 'कडजन' किये जाते थे और हिस्सेदार तथा उनके हिस्से की जमीन का नाप होकर सारी जमाबंदी ग्रामज्योतिषि, अध्यापक या पुरोहित––जोकि सबके समान मित्र माने जाते थे––के पास विश्वस्त के तौर पर रखें जाते थे। इतना ही नहीं अधिक सुरक्षितता के खयाल से प्रत्येक हिस्सेदार (मिरासदार) अपने लिए भी इन महत्व-पूर्ण आलेखों की प्रतिलिपि लेकर रख सकता था।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

इस करैयिड कार्यक्रमोत्सव के करीव एक हफ्ते वाद प्रत्येक करैकरण अपने मिरासदारों के लिए क्षेत्र (block) की जमीन का बँटवारा कर लेता था। यह बँटवारा या तो सर्वसंमति से या चिट्ठी डालकर किया जाता था। यह काम न कोई निश्चित स्थान पर ही होता था, न उसके लिए कुछ विधि किया जाता था। प्रत्येक मिरासदार उसे मिली हुई जमीन का कब्जन अपने पास रखता था।

जानने के लिए जाँच के उत्सुक पाठकों को स्पष्ट रूप से समझने के लिए यहाँ करैयिड़ धारण की प्रथा को विस्तृत दिया जा रहा है। उपर्युक्त आलेख मिरासदारों द्वारा स्वीकृत इकरारनामों में से एक है जो चिट्ठी डालने के पूर्व लिखे जाते हैं।

"यह वही इकरारनामा है जिसके जरिये हम देवध्यान और अन्य नन्निलम ग्राम के निम्नलिखित हस्ताक्षर करनेवाले मिरासदारों ने सर्व-संमति से तिथि २२ अनी रक्ताक्षी अब्द (४ जुलाई १८६४) को लिखा।

उपरोक्त गाँव के ९ पाँगु (हिस्सों) के सव मिरासदार नमी (wet) आदि जमीनों को करैयिड़ प्रथा के अनुसार विभाजित करके आचन्द्राकर छोड़कर उपभोग कर रहे हैं। (मिरासदार-मिरास के हकदार; मिरास–स्वामित्व के अधिकार सहित जमीनधारण); (आचन्द्रार्कम्, आ=जवतक चन्द्र, अर्क=सूर्य हैं–सदा के लिए, यावच्चन्द्रदिवाकरौ)। हमने सरकार से कुछ वर्ष के लिए 'अमानी' प्रवंध, कुछ वर्ष अन्दाजिया पद्धति और कुछ वर्ष अनाज या नकद लगान की स्वीकृति ले ली है। गत वर्ष के एक प्रभाव (वर्ष) पूर्व से ईश्वर (वर्ष) तक (कुल ११ वर्ष) नौ करै का करैयिड चलता रहा। विक्रम से सौंदरी (सर्वधारी) अर्थात् ८ वर्ष तक ६ करै का करैयिड था और विरोधी से विलम्वी संवत्सर (९ वर्ष) फिर से ९ करै का करैयिड चला। पर यह महसूस कर कि अल्प अवधि के करैयिड से कोई उन्नति न हो सकी और यह सोचकर कि लम्वी मियाद के लिए करैयिड चलाया जाय तो उन्नति हो सकेगी, हमने ६ करै का क़रैयिड सवत्सर रक्ताक्षी में विकारी से चित्रैं २५-३० वर्ष के लिए चलाया है। जमीन के अत्यधिक छोटे टुकड़े (होने के)

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

कारण गाँववाले स्थानीय रिवाजों के अनुसार उनकी दुरुस्ती नहीं कर सके। वंधान वाँधने में (लापरवाही रही) वाँध और सीमाएँ ठीक नहीं रख पाये। नहर और नालियाँ ठीक तरह से साफ नहीं की गयीं, नंजी (आबपाशी के) खेत में चाहे जितनी खाद या पत्तियाँ डालने से भी फसल को कुछ भी लाभ न हो सका। अधिकांश समय मिरासदारों की हालत अच्छी न थी अतः उन्हें काफी कठिनाइयाँ और तकलीफ सहन करनी पड़ी।

अतः ऐसी (तकलीफ) फिर से न हो और लोगों की हालत सुधर जाय तथा सरकारी लगान पूर्णरूप से बिना झंझट के अदा किया जा सके और चूँकि इस वर्ष नये करैंयिड का समय है, हमने लम्बी अवधि का करैयिड रखने का प्रयत्न किया है और वर्तमान वितरण के अनुसार करने का सोचा है। इस हेतु हमने तहसीलों में दरख्वास्त दी है कि हमें आवश्यक सहायता दी जावे। तहसीलदार के समक्ष सारे मिरासदार एकत्र हो गये हैं और उनसे विनय की है।

नीचे दस्तखत करनेवाले बहुसंख्यक मिरासदारों के अलावा कनगसभेई चेट्टि, अघु चैट्टि, रामसामी चेट्टी और वेंगाघयन, जिन्होंने मिरासदार चिन्ना किश्नय्यन से शिकमीपर जमीन ली है तथा ३⁄₆४ पांगु पर जिनका अधिकार है, सारे गाँव के साथ चलने से इन्कार कर रहे हैं। उनकी मनशा हमें तकलीफ देने की और झगड़े की है। अपने मनमाने इन चार व्यक्तियों ने अलगाव की वृत्ति से घोषित कर दिया है कि रिवाज के आपस में समझौते के विपरीत चिट्ठी डालने के तरीके को छोड़कर, उन्हें चारों को जमीन के भिन्न-भिन्न प्रकार का खयाल न करते गाँव की एक तरफ उत्तम जमीन में हिस्सा दिया जाय या उन्हें भिन्न-भिन्न स्थानों में छाँटकर जमीन दी जाय। यदि ऐसा न हुआ तो वे करैयिड को स्वीकार न करेंगे और जमीन पर का मौजूदा कब्जा न छोड़ेंगे।

चूँकि उन सब मिरासदारों को इजाजत दी गयी है, जो करैयिड़ करने को एक मत हैं, अतः सारे मिरासदारों ने मिलकर हस्ताक्षर कर दिये हैं और उन्नति के लिए आवश्यक दुरुस्तियाँ ठीक ढंग से करने के उद्देश्य से,

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

ऊची नीची सतह वाकी या अन्य जमीनों का नापकर देखकर वर्गीकरण किया है और कम लगानवाली हलकी जमीन, जो गाँव की सेवा के लिए वख्श की जाती है और जो खरीदी जाती है, उसी तरह जो जमीनें, मन्दिर, ब्राह्मण, कारीगर और इसी तरह के अन्य के लिए अलग रखी जाती है जिनका व्यक्ति और संस्था वंशपरंपरा से उपभोग करते आये हैं, इन सवको छोड़कर वची हुई नम जमीन का वर्गीकरण कर चार करै में हिस्से निम्न प्रकार निर्धारित किये हैं:—

१ सुन्दरप्पय्यन की करै

नाम	आठवाँ हिस्सा
उपर्युक्त सुन्दरप्पय्यन	६॥
वेंकटाचलयन	।
जोड़	६।। अष्टमांश
आगे चालू	६।।।
सुव्वरायन	॥
गोपाल कृष्णय्यन	॥
सुप्पुकुट्टि अय्यन	॥
कृष्णय्यन	२ट्टै
अम्मन सुव्वयन	१
चिन्नाम्मल	१
रामसामीअय्यन	३।८
वेंकटाचल चेट्टि	२॥
कुल	१६ अष्टमांश

२ अनैअप्पय्यन की करै

कुल (दस हिस्से)	१६ अष्टमांश

(इसी प्रकार दो अन्य करै जिनमें क्रम से आठ और पाँच हिस्से दम हैं)

चारों करै के लिए जुमला	६४ अष्टमांश पांगु (हिस्से)

(इसके अलावा) सूरी देवय्यन का छोटा भाई शिवरामय्यन को ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

अष्टमांश हिस्सा सब मिलाकर ६५।। (?) ६४।। अष्टमांश (हिस्से) हैं। इस तरह पांगु पद्धति से विभाजन किया गया है। अतः इन चार करै में, करैयौसी (कडजन का टुकड़ा जिसमें जमीन का लेखा रहता है) के मुताबिक चिट्ठियाँ डालने पर अपने हिस्से में आयी करै के नमी के पांगु पर मिरासदार का उपभोग अधिकार इस वर्ष से प्रारंभ होकर पचीस वर्षों तक न्याय्य और उचित वितरण के अनसार होगा।

यह भी आवश्यक है कि इस गाँव में नादुरुस्त मंदिरों की दुरुस्ती कर उनका पुनरुद्धार किया जाय। इसलिए पूर्व में शेम्वदायन नामक नंजी जमीन से १५ मा ३१ गुली, देवदानम् नंजी में १२ मा ४० गुली, अंगलम्मन कोविलपटम में ९ मा ८० गुली कुल मिलाकर १ वेली १७ मा ५१ गुली शामिल शरीक शिकमी पर सात साल दी जावेंगी और शिकमी किसान का हिस्सा छोड़कर बाकी उपज इस तरह दी जावेगी:—

दो वर्ष की	आय	रामस्वामी के	मन्दिर को
"	"	कृष्ण स्वामी	" १ वेली—६.६एकड़
एक वर्ष	"	ईश्वरन्	" १ मा— ·३३गुली
"	"	अय्यनार	" १ गुली—.००३३
"	"	पिल्लैयार	"

"उपर्युक्त पद्धति से सात साल उक्त मंदिरों को आय दी जानी चाहिए। इनका सरकारी लगान ६४।। अष्टमांश हिस्सों पर हिस्सेरसी से लग जायेगा। इसके वाद प्रजोत्पत्ति वर्ष से यह जमीन उपर्युक्त मंदिरों की सेवा में लगेगी और उचित तथा न्याय्य वितरण के अनुसार वर्तमान करैयिड की अवधि तक भिन्न व्यक्तियों के उपभोग में रहेगी जिनके सुपुर्द वह होगी। उपर्युक्त जमीन की उपज उपर्युक्त मंदिरों की दुरुस्ती के अतिरिक्त अन्य किसी तरह खर्च न की जा सकेगी। चूंकि १८० गुली जमीन उक्त कृष्णप्पा नायक के अष्टमांश हिस्से में आती है जो कि कनगस के चेट्टि के कब्जे में है, कृष्णप्पा नायक के हिस्से से उतनी जमीन घटा दी जावेगी। वह कनगसमै पर दावा कर जमीन प्राप्त करे। अन्य हिस्सेदारों को उसमें कोई दिलचस्पी नहीं है।

पुंजई (जरायत खुश्क) जमीनें पहले आचन्द्रार्कम् अर्थात् स्थायी तौर

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

पर वितरित की गयी थीं और पूर्वोक्त ६४।। अष्टमांश हिस्सेवाले मिरास-दारों ने उनमें से कुछ जमीनों में आवपाशी का प्रवंध कर लिया है। इस तरह का प्रवन्ध जिन लोगों ने किया उनके उपभोग में ही ये नयी आवपाशी जमीनें, आवपाशी का लगान देते जाने पर रहेंगी। बची हुई खुश्क जमीनों में से नदी के किनारे की तथा कवली नहर के इस और उस तरफ की जमीनों को नापा जायेगा और विषमताओं का निराकरण बाहरी जमीनों के वितरण में ही किया जायगा तव उस जमीन का उपभोग पुरानी करैयोलै के मुताबिक लिया जा सकेगा।

किलवेली (नाम से परिचित) जमीन, कवली नहरकिनारे की नम (सर्द, पनाली) जमीन, पुडुचेरी वेली खुश्क जमीन, स्थायी तौर पर वितरित खुश्क जमीन नापकर उनकी विषमताएँ दूर करनी होंगी। जिसे कम जमीन है, वह, जिसके पास (हिस्से से) ज्यादा जमीन होगी, उससे लेगा।

किलवेली नदी किनारा, नदी के पात्र में स्थित जमीनें, खुश्क और अन्य जमीनें नापकर पूर्वोक्त इकरारनामा में दर्ज की जायें और अखंड टुकड़ों (Compact blocks) में इस वर्ष "तै" मास में पुनर्विभाजित की जायें। उन जमीनों में जो 'आदि' (मौजूदा) फसलें हों उन पर लगान बैठाया जाय और उसे हिस्से के मुताबिक मिरासदारों में बाँट दिया जाय। उसी तरह खुश्क, नदीपात्र की, ऊसर परती या अन्य जमीनों पर जिन पर अबतक लगान तय न हुआ हो बढ़नेवाले वृक्षों का लगान तय करके हिस्से के अनुसार दाखिल किया जाय।

काश्त करनेवाले और अन्य व्यक्तियों के लिए जैसा उचित हो, पारिया रास्ता, चक्लर्स रास्ता, पुत्तार (नदी) के उस पार की आवादी पुरानी स्थायी वंदोबस्त प्रथा के अनुसार नापकर जो अबतक विषमता पैदा हो गयी हो उसे मिटाया जाय। किलवेली जमीनों तथा कवली नहर के दोनों ओर की जमीनों में जिनके पास ज्यादा हो वह उसको देगा जिसके पास कम है।

आवपाशी जमीनों की शामिल शरीक मेड़ें, कवली नहर के दोनों किनारे, अन्य सब जमीनों की सम्मिलित सीमाएँ तथा आबपाशी और जलनिकास

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

नालियाँ, सम्मिलित सबके खर्च से साफ, मजबूत और सुव्यवस्थित रखी जावेंगी।

और चूँकि अब पूर्वोक्त पद्धति से जमीनों का वितरण हो चुका है, अपने-अपने हिस्से के अनुसार सरकारी लगान देना चाहिए। परती खुश्क जमीनों तथा आबपाशी के योग्य जमीनों का सरकारी लगान, जोकि अब व्यक्तिगत तौर पर निरासदारों पर लगाया है, अपने-अपने हिस्से के अनुसार देना होगा।

वितरित जमीनों को अब उपभोग के अनुसार सरकारी कागजों में दर्ज किया जाय।

जो जमीनें व्यापारी तथा कारीगरों को रखी गयी हैं, उपर्युक्त हिस्सों के अनुसार उपभोग के लिए तकसीम कर दी जावें, और उसी तरह उनका सरकारी लगान अदा किया जावे।

और सारी जमीनों के लिए प्रथा के अनुसार आबपाशी और जलनिकास का प्रबंध रहेगा।

यदि पानी की कमी हुई तो एक इकरारनामा लिखा जावे जिसके अनुसार कौन कब कितना पानी नहर से बारी-बारी से लेगा यह बताया जावे और उसके अनुसार पानी दिया जावे। किदरन कोंडन उप-नहर के पूर्व की ओर एक दोहरा बाँध बनाया जावे और बिगड़े कदम्बन क्षेत्र में पानी ले जाया जावे।

मुलैमंगलम नहर से एक उपनहर खोदी जावे और उपरोक्त कदम्बन जमीन को पानी पहुँचाया जाय। अन्य सब जगह इकरार के मुताबिक आबपाशी की जावे। कवली नहर पर एक बाँध डाला जावे और वहाँ से मन्दिरों की जमीन को पानी पहुँचाया जावे।

उपर्युक्त जमीनों में से कुछ भी हिस्सेदार द्वारा सीधा बेचा न जा सकेगा। और यदि बेचा गया तो वह विक्रीनामा बेकार नाजायज होगा। ग्राम में चलनेवाले अन्य सारे मामलों में पूर्व इकरारनामों में दर्ज प्रणाली चलायी जावेगी। इसलिए हमने एकमत से अपनी स्वीकृति दे दी है।"

उबानेवाला होते हुए भी यह आलेख पूरा का पूरा देना उचित जँचा, क्योंकि यह जमीनवितरण की प्रथा पूरी तौर से समझा देता है। इस प्रथा

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

को धीरे-धीरे छोड़ने के जो कारण हुए हैं उनकी ओर भी वह अंगुलि-निर्देश करता है। नदी के किनारे नहर, तथा अन्य दुरुस्तियाँ और सुधारों की उपेक्षा ही इसका कारण है। इसके अलावा जमीन का अस्थिर और जल्द होनेवाला वंदोवस्त तथा वाहरवालों का इस प्रथा में प्रवेश भी एक कारण है। उन नामों से यह समझ में आ जायेगा कि जिन तीन लोगों ने जमीन के पुनर्वितरण से इन्कार किया, वे चेट्टी अर्थात् व्यापरी थे और पैसे के कर्ज के वल पर उन्होंने जमीन पर या हिस्से पर कब्जा किया था। इन वाहरी लोगों को गाँव की प्रथाओं के लिए कोई आदर न था, और न जिस छोटे समाज में वे घुस गये उसके लिए सहानुभूति। इसीलिए इकरारनामा के अन्त में किसी भी प्रकार की जमीन या उसके हक की विक्री के लिए मुमानियत।

—मैन्युअल ऑव तंजोर डिस्ट्रिक्ट वाई

टी. वेंकास्वामी राव से साभार प्राप्त।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सर्वोदय और भूदान-साहित्य

(विनोबा)

	रु० पैसा
गीता-प्रवचन	१– ०
शिक्षण-विचार	१–५०
कार्यकर्त्ता-पाथेय	०–५०
त्रिवेणी	०–५०
विनोबा-प्रवचन (संकलन)	०–७५
भगवान् के दरबार में	०–१३
साहित्यिकों से	०–५०
गाँव-गाँव में स्वराज्य	०–१३
सर्वोदय के आधार	०–२५
एक बनो और नेक बनो	०–१३
गाँव के लिए आरोग्य-योजना	०–१३
व्यापारियों का आवाहन	०–१३
हिंसा का मुकाबला	०–१९
ज्ञानदेव-चिन्तनिका	०–७५
भूदान-गंगा (पाँच खंडों में)	१–५०
जनक्रांति की दिशा में	०–२५
चुनाव	०–१३

(धीरेन्द्र मजूमदार)

शासनमुक्त समाज की ओर	०–५०
नयी तालीम	०–५०
ग्रामराज	०–२५
आजादी का खतरा	०–५०

(श्रीकृष्णदास जाजू)

संपत्तिदान-यज्ञ	०–५०
व्यवहार-शुद्धि	०–३८

(दादा धर्माधिकारी)

सर्वोदय-दर्शन	३– ०
मानवीय क्रान्ति	०–२५
साम्ययोग की राह पर	०–२५
क्रान्ति का अगला कदम	०–२५

(अन्य लेखक)

	रु० पैसा
गाँव-आंदोलन क्यों ?	२–५०
छात्रों के बीच	०–३२
सर्वोदय का इतिहास और शास्त्र	०–२५
श्रम-दान	०–२५
विनोबा के साथ	१– ०
पावन-प्रसंग	०–५०
भूदान-आरोहण	०–५०
भूदान-यज्ञ : क्या और क्यों ?	१– ०
भूदान-गंगोत्री	२–५०
सफाई : विज्ञान और कला	०–७५
क्रान्ति की पुकार	०–१९
पावन-प्रकाश (नाटक)	०–२५
गो-सेवा की विचारधारा	०–५०
गांधी : एक राजनैतिक अध्ययन	०–५०
सामाजिक क्रान्ति और भूदान	०–३२
गाँव का गोकुल	०–२५
ब्याज-बट्टा	०–२५
भूदान-दीपिका	०–१३
साम्ययोग का रेखाचित्र	०–१३
पूर्व-बुनियादी	०–५०
सन्त विनोबा की आनन्द-यात्रा	०–५
सुन्दरपुर की पाठशाला	०–७५
सर्वोदय-भजनावलि	०–२५
सत्संग (विनोबा की मुलाक़ातें)	०–५०
सर्वोदय-पदयात्रा	१– ०
भूदान का लेखा (आँकड़ों में)	०–२५
राजनीति से लोकनीति की ओर	०–५०
जीवन-परिवर्तन (नाटक)	०–२५
आज का धर्म	०–५०
विनोबा-संवाद	०–३८

LIBRARY
Jangamawadi Math, Varanasi
Acc. No. 3222
CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative
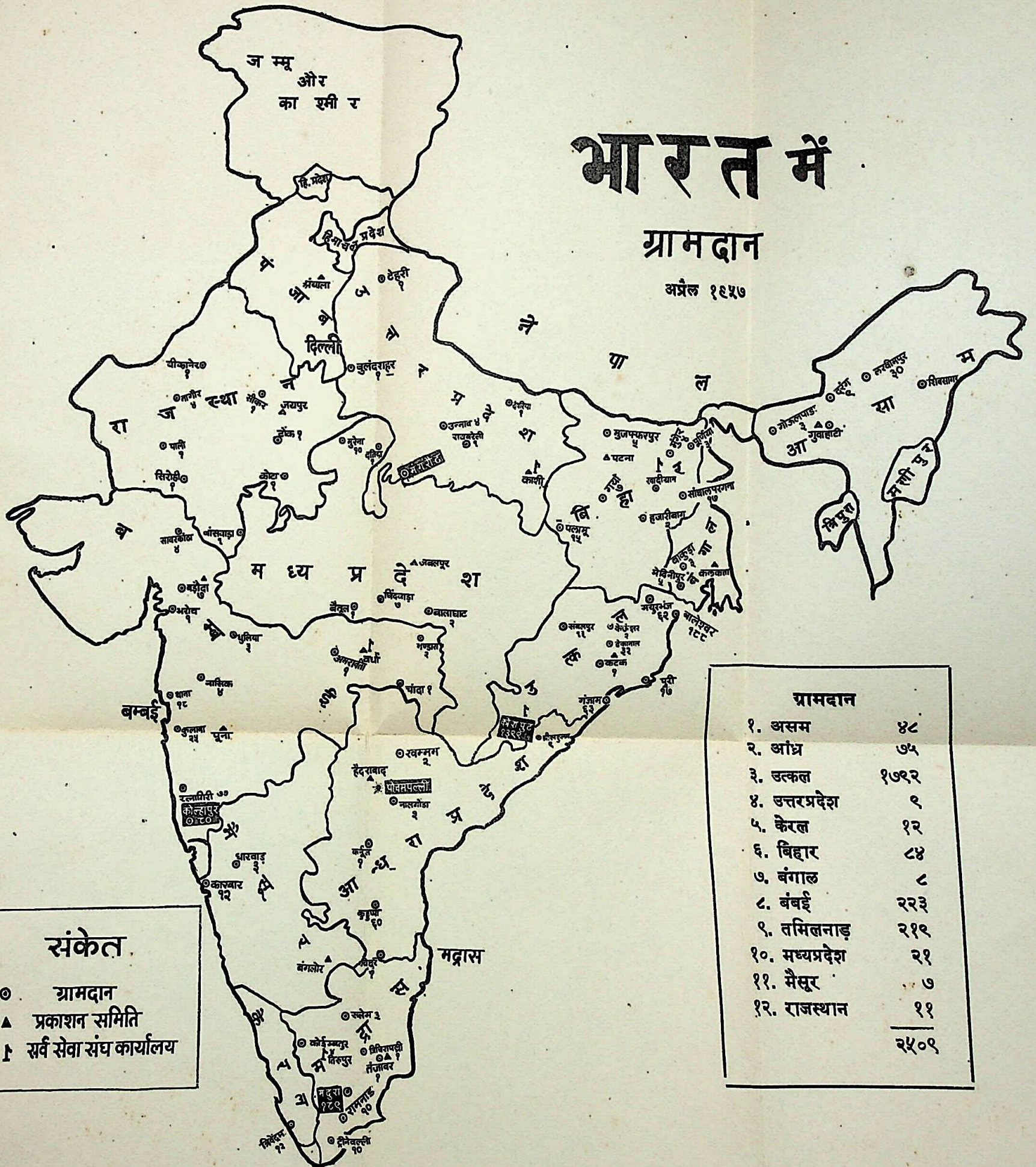
CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

मेरी कल्पना का आदर्श ग्राम

एक आदर्श भारतीय गाँव इस ढंग से बनाया जायगा कि उसमें पूरी सफाई रखी जा सके। उसमें ऐसी कुटियाँ होंगी, जिनमें काफी हवा और रोशनी रहेगी और जो पाँच मील के घेरे में प्राप्त होनेवाली सामग्री से बनी होंगी। कुटिया में आँगन होंगे, जिनमें घरवाले घरू इस्तेमाल की सागभाजी उगा सकें और अपने मवेशी रख सकें। गाँव की गलियों और रास्ते में यथासंभव धूल नहीं होगी। उसमें गाँव की जरूरत के अनुसार कुएँ होंगें और उनसे सब पानी ले सकेंगे। वहाँ सबके लिए पूजास्थान होंगे, एक आम सभा-स्थान होगा, पशु चराने के लिए एक सम्मिलित चरागाह होगा, एक सहकारी दुग्धालय होगा, प्राथमिक और माध्यमिक पाठशालाएँ होंगी, जिनमें औद्योगिक शिक्षा मुख्य वस्तु होगी और झगड़े निपटाने के लिए पंचायतें होंगी। वह अपना अनाज, अपनी सागभाजी, अपने फल और अपनी खादी आप तैयार कर लेगा। मोटे रूप में आदर्श ग्राम की मेरी यह कल्पना है।

MKGandhi

७५ नये पैसे

१५-७-७४

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative